भारतीय राजव्यवस्था एवं शासन

उद्देशिका

2024

1. डॉ. राजेंद्र प्रसाद के कार्यभार संभालने से पहले संविधान सभा के अस्थायी सभापति कौन थे?

(a) सी. राजगोपालाचारी (b) डॉ. बी.आर. अंबेडकर

(c) टी.टी. कृष्णमाचारी (d) डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा

सही उत्तर: **(d)**

व्याख्या:

- संविधान सभा की प्रथम बैठक 9 दिसंबर, 1946 को आहूत की गई, जिसमें मुस्लिम लीग ने अलग राज्य पाकिस्तान की मांग करते हुए सत्र का बहिष्कार किया।
- परिणामस्वरूप, केवल 211 सदस्य ही उपस्थित हुए। फ्राँसीसी परंपरा का पालन करते हुए सबसे वरिष्ठ सदस्य **डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा को संविधान सभा का अस्थायी अध्यक्ष** चुना गया।
- इसके बाद संविधान सभा द्वारा **डॉ. राजेंद्र प्रसाद** को स्थायी **अध्यक्ष** नियुक्त किया गया तथा एच. सी. मुखर्जी एवं वी. टी. कृष्णमाचारी को उपाध्यक्ष के रूप में चयनित किया गया। **अतः विकल्प (d) सही है।**

2023

1. संविधान दिवस के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर कीजिये:

कथन-I: नागरिकों के बीच सांविधानिक मूल्यों को संवर्द्धित करने के लिये संविधान दिवस प्रतिवर्ष 26 नवंबर को मनाया जाता है।

कथन-II: 26 नवंबर, 1949 को, भारत की संविधान सभा में भारत के संविधान का प्रारूप तैयार करने के लिये डॉ बी.आर. अंबेडकर की अध्यक्षता में प्रारूपण समिति बनाई।

उपर्युक्त कथनों के बारे में, निम्नलिखित में से कौन-सा एक सही है?

(a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या है।

(b) कथन-I और कथन-II दोनों सही है तथा कथन-II, कथन-1 की सही व्याख्या नहीं है।

(c) कथन-I सही है किंतु कथन-II गलत है।

(d) कथन-I गलत है किंतु कथन-II सही है।

सही उत्तर: **(c)**

व्याख्या:

- 26 नवंबर को संविधान दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसी दिन वर्ष 1949 में भारतीय संविधान सभा ने औपचारिक रूप से भारत के संविधान को अपनाया, जो आगे चलकर 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ। **अतः कथन 1 सही है।**
- 29 अगस्त, 1947 को संविधान सभा ने डॉ. बी.आर. अंबेडकर की अध्यक्षता में प्रारूप समिति का गठन किया। जिसने भारतीय संविधान के प्रारूप को तैयार किया। **अतः कथन 2 सही नहीं है।**
- 13 दिसंबर, 1946 को संविधान सभा ने औपचारिक रूप से भारतीय संविधान के निर्माण की शुरुआत की। जवाहरलाल नेहरू ने उद्देश्य प्रस्ताव पेश किया, जिसका उद्देश्य भारत को एक स्वतंत्र संप्रभु गणराज्य के रूप में घोषित करना तथा इसके संचालन हेतु एक संविधान का निर्माण करना था। इस प्रस्ताव ने संविधान सभा के कार्य का मार्गदर्शन करने हेतु सामान्य सिद्धांतों की स्थापना की। 22 जनवरी, 1947 को संविधान सभा ने इस प्रस्ताव को अपनाया। **अतः विकल्प (c) सही है।**

2021

1. 26 जनवरी, 1950 को भारत की वास्तविक सांविधानिक स्थिति क्या थी?

(a) लोकतंत्रात्मक गणराज्य

(b) संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य

(c) संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य

(d) संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या: 26 जनवरी, 1950 को लागू हुए भारतीय संविधान की उद्देशिका में भारत को 'संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य' के रूप में घोषित किया था। अर्थात्, तब के अनुसार भारत की वास्तविक सांविधानिक स्थिति 'संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य' की ही थी। अतः विकल्प (b) सही उत्तर होगा।

नोट: हालाँकि 1976 में किये गए संविधान के 42वें संशोधन के पश्चात् प्रस्तावना में 'समाजवादी', 'पंथनिरपेक्ष' और 'अखंडता' शब्द जोड़ दिये गए, जिससे भारत की सांविधानिक स्थिति में परिवर्तन हुआ।

2020

1. भारत के संविधान की उद्देशिका-

(a) संविधान का भाग है किंतु कोई विधिक प्रभाव नहीं रखती

(b) संविधान का भाग नहीं है और कोई विधिक प्रभाव भी नहीं रखती

(c) संविधान का भाग है और वैसा ही विधिक प्रभाव रखती है जैसा कि उसका कोई अन्य भाग

(d) संविधान का भाग है किंतु उसके अन्य भागों से स्वतंत्र होकर उसका कोई विधिक प्रभाव नहीं है।

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: 1973 के केशवानंद भारती मामले में उच्चतम न्यायालय ने यह स्पष्ट किया कि संविधान की प्रस्तावना को संविधान का हिस्सा माना जाएगा। न्यायालय ने यह भी कहा कि प्रस्तावना का सामान्यत: कोई विधिक प्रभाव नहीं है परंतु संविधान के अन्य भागों की व्याख्या करने के लिये प्रस्तावना की सहायता ली जा सकती है।

हालाँकि संविधान के अन्य भागों से स्वतंत्र प्रस्तावना का कोई विधिक प्रभाव नहीं है। इस आधार पर विकल्प (d) सही उत्तर होगा।

2017

1. निम्नलिखित उद्देश्यों में से कौन-सा एक भारत के संविधान की उद्देशिका में सन्निविष्ट नहीं है?

(a) विचार की स्वतंत्रता **(b) आर्थिक स्वतंत्रता**

(c) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता **(d) विश्वास की स्वतंत्रता**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: भारत के संविधान की उद्देशिका में कुछ स्वतंत्रताओं, जैसे- विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता की चर्चा की गई है। 'आर्थिक स्वतंत्रता' की चर्चा नहीं की गई है। सामाजिक और राजनीतिक न्याय के साथ-साथ 'आर्थिक न्याय' को सन्निविष्ट किया गया है, 'स्वतंत्रता' को नहीं।

2. भारत के संविधान के निर्माताओं का मत निम्नलिखित में से किसमें प्रतिबिंबित होता है?

(a) उद्देशिका

(b) मूल अधिकार

(c) राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व

(d) मूल कर्त्तव्य

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: संविधान की उद्देशिका में उन आधारभूत दर्शन और राजनीतिक, धार्मिक व नैतिक मूल्यों का उल्लेख है जो हमारे संविधान के आधार हैं। इसमें संविधान सभा की महान और आदर्श सोच उल्लिखित है। अत: विकल्प (a) सबसे सटीक है।

मूल अधिकार

2025

1. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये:

भारत के संविधान में उपबंध		किसके अधीन कथित
I. राज्य की लोक सेवा में न्यायपालिका का कार्यपालिका से पृथक्करण	:	राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व
II. हमारी सामासिक संस्कृति की समृद्ध विरासत का महत्त्व समझना और उसका परिरक्षण करना	:	मूल कर्त्तव्य
III. कारखानों में 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों के नियोजन का निषेध	:	मूल अधिकार

उपर्युक्त युग्मों में से कितने सही सुमेलित हैं?

(a) केवल एक **(b) केवल दो**

(c) सभी तीन **(d) कोई भी नहीं**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या:

- भाग IV के तहत अनुच्छेद-50, राज्य की नीति के निर्देशक तत्त्व राज्य को राज्य की सार्वजनिक सेवाओं में न्यायपालिका को कार्यपालिका से पृथक करने का निर्देश देता है। **अत: युग्म I सही सुमेलित है।**
- भाग IV(A) के अंतर्गत अनुच्छेद-51A(f), मौलिक कर्त्तव्य प्रत्येक नागरिक को हमारी समग्र संस्कृति की समृद्ध विरासत को महत्त्व देने और संरक्षित करने के लिये बाध्य करता है। **अत: युग्म II सही सुमेलित है।**
- भाग III के अंतर्गत अनुच्छेद-24, मूल अधिकार कारखानों, खानों या अन्य खतरनाक रोज़गार में 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के रोज़गार पर प्रतिबंध लगाता है। **अत: युग्म III सही सुमेलित है। अत: विकल्प (c) सही है।**

2024

1. भारत के उच्चतम न्यायालय ने निजता के अधिकार को भारत के संविधान के निम्नलिखित में से किस अनुच्छेद-के अंतर्गत रखा है?

(a) अनुच्छेद-15 **(b) अनुच्छेद-16**

(c) अनुच्छेद-19 **(d) अनुच्छेद-21**

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: उच्चतम न्यायालय ने वर्ष 2017 में **के.एस. पुट्टस्वामी बनाम भारत संघ** के ऐतिहासिक निर्णय में गोपनीयता और इसके महत्त्व का वर्णन करते हुए उल्लिखित किया था कि निजता का अधिकार **मौलिक एवं अविभाज्य** है तथा यह व्यक्ति से जुड़ा हुआ है, जिसमें संबंधित व्यक्ति एवं उसके द्वारा चुने गए विकल्पों के संदर्भ में सभी जानकारी शामिल है। **अनुच्छेद-21** के अंतर्गत जीवन एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार के आंतरिक भाग के रूप में निजता के अधिकार को संरक्षित किया गया है। **अत: विकल्प (d) सही है।**

2023

1. सारभूत रूप में, 'विधि की सम्यक प्रक्रिया' का अभिप्राय क्या है?

(a) नैसर्गिक न्याय का सिद्धांत **(b) विधि द्वारा स्थापित पद्धति**

(c) विधि की निष्पक्ष प्रयुक्ति **(d) विधि के समक्ष समता**

सही उत्तर: (a)

व्याख्या:

- सारभूत रूप में 'विधि की सम्यक् प्रक्रिया' का अभिप्राय है- नैसर्गिक न्याय का सिद्धांत। नैसर्गिक न्याय के सिद्धांत का उद्देश्य प्रशासनिक और कानूनी कार्यवाही में निष्पक्ष और न्यायपूर्ण निर्णय लेना सुनिश्चित करना है। इन्हें दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है- मूल (पर्याप्त) और प्रक्रियात्मक निष्पक्षता। मूल (पर्याप्त) निष्पक्षता का तात्पर्य उस आवश्यकता से है जिससे प्रशासनिक निर्णय वस्तुनिष्ठ मानदंड़ो पर आधारित हों और निर्णय लेने वाले निर्णय लेने से पहले सभी प्रासंगिक कारकों पर विचार करें। दूसरी और प्रक्रियात्मक निष्पक्षता, इस आवश्यकता को संदर्भित करती है कि पारदर्शी और निष्पक्ष प्रक्रियाओं का उपयोग करके प्रशासनिक निर्णय लिये जाने चाहिये। नैसर्गिक न्याय के सिद्धांत निम्नलिखित है-
- **सुने जाने का अधिकार:** इस सिद्धांत का अर्थ है कि किसी भी व्यक्ति को उनके हितों को प्रभावित करने वाले निर्णय लेने से पहले सुनवाई का अवसर दिया जाना चाहिये। यह सिद्धांत सुनिश्चित करता है कि निर्णय लेने वाला निर्णय लेने से पहले सभी प्रासंगिक सबूतों और तर्कों पर विचार करें।
- **कोई भी अपने स्वयं के मामलों में पक्षपाती नहीं होना चाहिये:** इस सिद्धांत का अर्थ है कि निर्णय लेने वाले को निष्पक्ष होना चाहिये और निर्णय के परिणाम में व्यक्तिगत स्वार्थ पर बल नहीं देना चाहिये। यह सिद्धांत सुनिश्चित करता है कि निर्णय लेने में ऐसे पूर्वाग्रह या हितों का टकराव नहीं हो, जो उनके निर्णय को प्रभावित कर सकते हैं।
- **पक्षपात के विरुद्ध रहना:** इस सिद्धांत का अर्थ है कि निर्णय लेने वाले को निर्णय लेने वाले पक्ष के प्रति या उसके विरुद्ध पक्षपाती नहीं होना चाहिये। यह सिद्धांत सुनिश्चित करता है कि निर्णय लेने वाला निष्पक्ष तरीके से सभी प्रासंगिक कारकों पर विचार करे।
- **नैसर्गिक न्याय की एकमात्र आवश्यकता नहीं है:** इस सिद्धांत का अर्थ है कि प्रशासनिक निर्णय लेने के लिये नैसर्गिक न्याय ही एकमात्र आवश्यकता नहीं है। प्रशासनिक निर्णय लेने में अन्य वैधानिक आवश्यकताओं पर भी विचार किया जाना चाहिये। **अतः इस आधार पर विकल्प (a) सही है।**

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. भारत के संविधान के अनुसार, केंद्र सरकार का यह एक दायित्व है कि वह राज्यों को आंतरिक असुरक्षा से बचाए।

2. भारत का संविधान राज्यों को, निवारक निरोध में रखे जा रहे किसी व्यक्ति को विधिक काउंसेल उपलब्ध कराने से छूट प्रदान करता है।

3. आतंकवाद निवारण अधिनियम, 2002 के अनुसार, पुलिस के समक्ष अभियुक्त की संस्वीकृति को साक्ष्य के रूप में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक **(b) केवल दो**
(c) सभी तीन **(d) कोई भी नहीं**

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या:

- अनुच्छेद-355 के अनुसार, संघ का यह कर्त्तव्य होगा कि वह **प्रत्येक राज्य को बाह्य आक्रमण और आंतरिक असुरक्षा से बचाए** और यह सुनिश्चित करे कि प्रत्येक राज्य की सरकार इस संविधान के प्रावधानों के अनुसार चले। **अतः कथन 1 सही है।**
- संविधान का अनुच्छेद-22(1) कानूनी परामर्श के अधिकारों को सुनिश्चित करता है, लेकिन अनुच्छेद-22(3)(B) निवारक निरोध कानून के तहत हिरासत में लिये गए व्यक्तियों से यह अधिकार छीन लेता है। इन प्रावधानों के तहत उच्चतम न्यायालय ने ए.के. रॉय बनाम भारत संघ के मामले में यह फैसला सुनाया कि बंदियों को सलाहकार बोर्ड की सुनवाई में कानूनी प्रतिनिधित्व का अधिकार नहीं है। अतः कथन 2 सही है।
- आतंकवादी और विघटनकारी गतिविधियाँ (रोकथाम) अधिनियम, 1987 और आतंकवाद निवारण अधिनियम, 2002 (क्रमशः टाडा और पोटा के रूप में जाना जाता है) ने पुलिस अधिकारियों के समक्ष अभियुक्तों द्वारा दिये गए बयानों को स्वीकार करने का प्रावधान किया था। अतः कथन 3 सही नहीं है।
- भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 में यह प्रावधान है कि पुलिस प्राधिकरण के समक्ष या पुलिस हिरासत के तहत की गई स्वीकारोक्ति अस्वीकार्य है। (नोट: भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 2023 की धारा 23 में उपर्युक्त प्रावधान दिया गया है।) **अतः विकल्प (b) सही है।**

2021

1. भारतरत्न और पद्म पुरस्कारों के संबंध में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. भारतरत्न और पद्म पुरस्कार भारत के संविधान के अनुच्छेद-18(1) के अंतर्गत उपाधियाँ हैं।

2. वर्ष 1954 में प्रारंभ किये गए पद्म पुरस्कारों को केवल एक बार निलंबित किया गया था।

3. किसी वर्ष-विशेष में भारतरत्न पुरस्कारों की अधिकतम संख्या पाँच तक सीमित है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही नहीं हैं?

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2 और 3**
(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: **(d)**

व्याख्या: संविधान का अनुच्छेद-18 (1) यह प्रावधान करता है कि राज्य, सेना या विद्या संबंधी सम्मान के सिवाय और कोई उपाधि प्रदान नहीं करेगा। 1995 में उच्चतम न्यायालय द्वारा बालाजी राघवन मामले में दिये गए निर्णय में यह स्पष्ट किया गया कि भारतरत्न व पद्म पुरस्कार संविधान के अनुच्छेद-18 (1) में वर्णित उपाधियाँ नहीं हैं। अतः कथन 1 सही नहीं है।

- उल्लेखनीय है कि वर्ष 1954 में आरंभ किये जाने के पश्चात् ऐसा दो बार (1978-79 व 1993-97) हुआ कि पद्म पुरस्कार वितरित नहीं किये गए, क्योंकि इन्हें निलंबित किया गया था। अत: कथन 2 सही नहीं है।
- किसी वर्ष-विशेष में अधिकतम 3 भारतरत्न पुरस्कार दिये जा सकते हैं। अत: कथन 3 सही नहीं है। इस प्रकार विकल्प (d) सही उत्तर होगा।

2. भारत के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. न्यायिक हिरासत का अर्थ है कि अभियुक्त संबंधित मजिस्ट्रेट की हिरासत में है और ऐसे अभियुक्त को पुलिस स्टेशन के हवालात में रखा जाता है न कि जेल में।

2. न्यायिक हिरासत के दौरान, मामले के प्रभारी पुलिस अधिकारी, न्यायालय की अनुमति के बिना संदिग्ध व्यक्ति से पूछताछ नहीं कर सकते।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या: भारत के संदर्भ में न्यायिक हिरासत का अर्थ है कि अभियुक्त संबंधित मजिस्ट्रेट की हिरासत में है और उसे जेल में रखा जाता है। अत: कथन 1 सही नहीं है। साथ ही, यदि मामले का प्रभारी पुलिस अधिकारी न्यायिक हिरासत के दौरान किसी संदिग्ध व्यक्ति से पूछताछ करना चाहता है तो उसके द्वारा न्यायालय की अनुमति ली जाना अनिवार्य है। अत: कथन 2 सही है। विकल्प (b) सही उत्तर होगा।

3. भारत के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. जब एक कैदी पर्याप्त आधार प्रस्तुत करता है, तो ऐसे कैदी को पैरोल मना नहीं किया जा सकता, क्योंकि वह उसके अधिकार का मामला बन जाता है।

2. कैदी को पैरोल पर छोड़ने के लिये राज्य सरकारों के अपने नियम हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या: भारत में कारागारों में सज़ा काट रहे बंदियों को समय-समय पर पैरोल पर छोड़े जाने की व्यवस्था प्रचलित है। सामान्यत: एक बंदी द्वारा पर्याप्त आधार प्रस्तुत किये जाने पर उसे पैरोल दी जा सकती है। हालाँकि पैरोल पर छोड़े जाना किसी भी प्रकार से बंदी के अधिकार का मामला नहीं है और पर्याप्त आधारों के बावजूद प्रशासन उसे पैरोल देने से इनकार कर सकता है। अत: कथन 1 सही नहीं है।

संविधान की सातवीं अनुसूची के अंतर्गत दी गई राज्य सूची की प्रविष्टि संख्या 4 "कारागार, सुधारालय, बोर्स्टल संस्थाएँ और उसी प्रकार की अन्य संस्थाएँ और उनमें निरुद्ध व्यक्ति : कारागारों और अन्य संस्थाओं के उपयोग के लिये अन्य राज्यों से ठहराव" है। इससे यह स्पष्ट है कि पैरोल के नियमों सहित कारागारों से संबंधित किसी प्रकार की विधि व नियम बनाना राज्य विधानसभाओं का क्षेत्राधिकार है। अत: कथन 2 सही है व विकल्प (b) सही उत्तर होगा।

4. कानून को लागू करने के मामले में कोई विधान, जो किसी कार्यपालक अथवा प्रशासनिक प्राधिकारी को अनिर्देशित एवं अनियंत्रित विवेकाधिकार देता है, भारत के संविधान के निम्नलिखित अनुच्छेदों में से किसका उल्लंघन करता है?

(a) अनुच्छेद-14 **(b) अनुच्छेद-28**

(c) अनुच्छेद-32 **(d) अनुच्छेद-44**

सही उत्तर: **(a)**

व्याख्या: भारतीय संविधान के अनुच्छेद-14 में यह प्रावधान है कि राज्य, भारत के राज्यक्षेत्र में किसी व्यक्ति को विधि के समक्ष समता से या विधियों के सामान संरक्षण से वंचित नहीं करेगा। यहाँ 'विधि के समक्ष समता' का आशय यह है कि भारत में सभी व्यक्ति विधि के दायरे में समान रूप से आएंगे और किसी को भी कोई विशेषाधिकार प्राप्त नहीं होगा। ऐसे में यदि कोई विधान किसी कार्यपालक अथवा प्रशासनिक अधिकारी को अनिर्देशित एवं अनियंत्रित विवेकाधिकार देता है तो 'विधि के समक्ष समता' के सिद्धांत का उल्लंघन होगा। इस प्रकार विकल्प (a) सही उत्तर होगा।

5. भारत के संविधान के किस अनुच्छेद-के अंतर्गत 'निजता का अधिकार' संरक्षित है?

(a) अनुच्छेद-15 **(b) अनुच्छेद-19**

(c) अनुच्छेद-21 **(d) अनुच्छेद-29**

सही उत्तर: **(c)**

व्याख्या: 24 अगस्त, 2017 को उच्चतम न्यायालय की 9 न्यायाधीशों वाली संवैधानिक पीठ ने 'जस्टिस के.एस. पुट्टास्वामी बनाम भारत संघ मामले' में ऐतिहासिक निर्णय देते हुए 'निजता के अधिकार' को मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी। न्यायालय ने कहा कि निजता का अधिकार अनुच्छेद-21 के तहत प्रदत्त प्राण और दैहिक स्वतंत्रता के अधिकार के अंतर्भूत (Intrinsic) भाग के रूप में और संविधान के भाग 3 द्वारा प्रत्याभूत (Guaranteed) स्वतंत्रताओं के एक हिस्से के रूप में संरक्षित है। अत: विकल्प (c) सही उत्तर होगा।

2020

1. निम्नलिखित मूल अधिकारों के किस संवर्ग में अस्पृश्यता के रूप में किये गए विभेदन के विरुद्ध संरक्षण समाविष्ट है?

(a) शोषण के विरुद्ध अधिकार

(b) स्वतंत्रता का अधिकार

(c) सांविधानिक उपचार का अधिकार

(d) समता का अधिकार

सही उत्तर: **(d)**

व्याख्या: संविधान में 'समता का अधिकार' अनुच्छेद-14 से अनुच्छेद-18 में निहित है। इसी के अंतर्गत अनुच्छेद-17 में प्रावधान है कि-"अस्पृश्यता का अंत किया जाता है और उसका किसी भी रूप में

आचरण निषिद्ध किया जाता है। 'अस्पृश्यता' से उपजी निर्योग्यता को लागू करना अपराध होगा, जो विधि के अनुसार दंडनीय होगा।" अत: विकल्प (d) सही है।

2. मूल अधिकारों के अतिरिक्त, भारत के संविधान का निम्नलिखित में से कौन-सा/से भाग मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा 1948 (Universal Declaration of Human Rights 1948) के सिद्धांतों एवं प्रावधानों को प्रतिबिंबित करता/करते है/हैं?

1. उद्देशिका

2. राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व

3. मूल कर्त्तव्य

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: 'मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा, 1948' प्रत्येक मनुष्य की समानता और गरिमा को स्थापित करती है, साथ ही यह भी निर्धारित करती है कि प्रत्येक सरकार का यह कर्त्तव्य है कि वह सभी लोगों को उनके सभी अधिकारों और स्वतंत्रता का लाभ उठाने में सक्षम बनाए। भारत के संविधान में मौलिक अधिकार के अलावा 'प्रस्तावना' के उद्देश्य जैसे कि न्याय (सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक), समानता, स्वतंत्रता इत्यादि भी घोषणा के सिद्धांतों को दर्शाते हैं। इसलिये कथन 1 सही है।

राज्य नीति के निदेशक सिद्धांत वे सिद्धांत हैं जो सामाजिक और आर्थिक न्याय प्रदान करने के उद्देश्य से हैं और कल्याणकारी राज्य के लिये मार्ग निर्धारित करते हैं। ये सिद्धांत राज्य के नागरिकों के सकारात्मक अधिकारों या दायित्व के रूप में कार्य करते हैं और मानवधिकारों के अनुरूप भी हैं। ये मानवधिकार घोषणा के सिद्धांतों एवं प्रावधानों को सीधे प्रतिबिंबित करते हैं। इस प्रकार कथन 2 भी सही है।

मौलिक कर्त्तव्यों के अंतर्गत अनुच्छेद-51क (ञ) व मानवाधिकार घोषणा का अनुच्छेद-29 व्यक्ति द्वारा सामुदायिक दायित्व निभाते हुए व्यक्तिगत विकास किये जाने की बात कहते हैं। अत: कथन 3 सही है। इस प्रकार विकल्प (d) सही उत्तर होगा।

2019

1. भारत के संविधान का कौन-सा अनुच्छेद-अपनी पसंद के व्यक्ति से विवाह करने के किसी व्यक्ति के अधिकार को संरक्षण देता है?

(a) अनुच्छेद-19 **(b) अनुच्छेद-21**

(c) अनुच्छेद-25 **(d) अनुच्छेद-29**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: उच्चतम न्यायालय ने 'हादिया वाद' के निर्णय में कहा कि अनुच्छेद-21 अपनी पसंद के व्यक्ति से विवाह करने के किसी व्यक्ति के अधिकार को संरक्षण प्रदान करता है।

2018

1. निजता के अधिकार को जीवन एवं व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के अधिकार के अंतर्भूत भाग के रूप में संरक्षित किया जाता है। भारत के संविधान में निम्नलिखित में से किससे उपर्युक्त कथन सही एवं समुचित ढंग से अर्थित होता है?

(a) अनुच्छेद-14 एवं संविधान के 42वें संशोधन के अधीन उपबंध

(b) अनुच्छेद-17 एवं भाग IV में दिये राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व

(c) अनुच्छेद-21 एवं भाग III में गारंटी की गई स्वतंत्रताएँ

(d) अनुच्छेद-24 एवं संविधान के 44वें संशोधन के अधीन उपबंध

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: सुप्रीम कोर्ट के अनुसार, निजता का अधिकार एक मौलिक अधिकार है, जिसे भारतीय संविधान के अनुच्छेद-21 के अंतर्गत संरक्षण प्राप्त है। उल्लेखनीय है कि भारतीय संविधान का भाग-3 (अनुच्छेद 12–35 तक) मूल अधिकारों से संबंधित है, इसके अंतर्गत अनुच्छेद-19–22 तक स्वतंत्रता के अधिकार से संबंधित उपबंधों को शामिल किया गया है। अनुच्छेद-19 में वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, शांतिपूर्वक व निरायुध सम्मेलन का अधिकार, संघ या समिति बनाने का अधिकार, भारत में सर्वत्र अबाध संचरण का अधिकार तथा कोई भी वृत्ति-व्यापार या कारोबार के अधिकार को सुनिश्चित किया गया है। अनुच्छेद-20 में अपराधों के लिये दोषसिद्धि के संबंध में संरक्षण प्रदान किया गया है। अनुच्छेद-21 में प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता का अधिकार, जबकि अनुच्छेद-22 में कुछ दशाओं में गिरफ्तारी व निरोध से संरक्षण प्रदान किया गया है।

इस संबंध में अगस्त 2017 में सुप्रीम कोर्ट का निर्णय अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। न्यायालय के अनुसार, निजता के अधिकार को संविधान संरक्षण देता है, क्योंकि यह जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार का एक बाईप्रोडक्ट है। निजता के अधिकार के अंतर्गत 'व्यक्तिगत रुझान और पसंद को सम्मान देना, पारिवारिक जीवन की पवित्रता, विवाह करने का फैसला तथा बच्चे पैदा करने का निर्णय इत्यादि शामिल हैं। इस संबंध में सुप्रीम कोर्ट का कहना है कि "निजता मनुष्य के गरिमापूर्ण अस्तित्व का अभिन्न अंग है और यह सही है कि संविधान में इसका ज़िक्र नहीं है, लेकिन निजता का अधिकार वह अधिकार है जिसे संविधान में गढ़ा नहीं गया बल्कि मान्यता दी गई है।"

2017

1. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक सही है?

(a) अधिकार नागरिकों के विरुद्ध राज्य के दावे हैं।

(b) अधिकार वे विशेषाधिकार हैं जो किसी राज्य के संविधान में समाविष्ट हैं।

(c) अधिकार राज्य के विरुद्ध नागरिकों के दावे हैं।

(d) अधिकार अधिकांश लोगों के विरुद्ध कुछ नागरिकों के विशेषाधिकार हैं।

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: नागरिक अधिकारों का अर्थ वे मूल स्वतंत्रताएँ हैं जिनका उपयोग नागरिक कर सकता है और यदि इन अधिकारों के उपयोग में किसी प्रकार की कोई बाधा उत्पन्न हो तो वह न्यायालयों अथवा प्रशासनिक अधिकरणों की सहायता से उनके उपभोग की सुविधा प्राप्त कर सकता है। अत: स्पष्ट है कि अधिकार राज्य के विरुद्ध नागरिकों के दावे हैं।

2. भारत के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा अधिकारों और कर्त्तव्यों के बीच सही संबंध है?

(a) अधिकार कर्त्तव्यों के साथ सह-संबंधित हैं।

(b) अधिकार व्यक्तिगत हैं अत: समाज और कर्त्तव्यों से स्वतंत्र हैं।

(c) नागरिक के व्यक्तित्व के विकास के लिये अधिकार, न कि कर्त्तव्य, महत्त्वपूर्ण हैं।

(d) राज्य के स्थायित्व के लिये कर्त्तव्य, न कि अधिकार, महत्त्वपूर्ण हैं।

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: भारतीय परंपरा में अधिकार एवं कर्त्तव्य सहगामी एवं परस्पर पूरक माने जाते हैं। अत: ये सह-संबंधित होते हैं।

भारतीय संविधान में यद्यपि मूल अधिकार की तरह मूल कर्त्तव्यों को प्रवर्तनीय नहीं किया गया है, लेकिन ऐसी अपेक्षा रहती है कि कोई नागरिक अपने अधिकारों के साथ-साथ कर्त्तव्यों के प्रति भी सजग रहे। अत: विकल्प (a) सही है।

3. भारत के संविधान में शोषण के विरुद्ध अधिकार द्वारा निम्नलिखित में से कौन-से परिकल्पित हैं?

1. मानव देह व्यापार और बंधुआ मज़दूरी (बेगारी) का निषेध

2. अस्पृश्यता का उन्मूलन

3. अल्पसंख्यकों के हितों की सुरक्षा

4. कारख़ानों ओर खदानों में बच्चों के नियोजन का निषेध

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1, 2 और 4 **(b) केवल 2, 3 और 4**

(c) केवल 1 और 4 **(d) 1, 2, 3 और 4**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: शोषण के विरुद्ध अधिकार (अनुच्छेद-23 व 24) के अंतर्गत 'मानव दुर्व्यापार एवं बलात् श्रम का निषेध' तथा कारखानों आदि में बालकों के नियोजन का निषेध सम्मिलित है। अत: विकल्प (c) सही है।

मूल कर्त्तव्य

2017

1. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से भारतीय नागरिक के मूल कर्त्तव्यों के विषय में सही है/हैं?

1. इन कर्त्तव्यों को प्रवर्तित करने के लिये एक विधायी प्रक्रिया दी गई है।

2. वे विधिक कर्त्तव्यों के साथ परस्पर संबंधित हैं।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1, न ही 2**

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: मूल कर्त्तव्यों को प्रवर्तित करने के लिये संविधान में न तो कोई विधायी प्रक्रिया दी गई है और न ही वे विधिक कर्त्तव्यों के साथ परस्पर संबंधित हैं।

2015

1. "भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करें और उसे अक्षुण्ण रखें।" यह उपबंध किसमें किया गया है?

(a) संविधान की उद्देशिका

(b) राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व

(c) मूल अधिकार

(d) मूल कर्त्तव्य

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करने एवं उसे अक्षुण्ण बनाए रखने की बात भारतीय संविधान के भाग 4क के अंतर्गत शामिल किये गए मूल कर्त्तव्यों के खण्ड में की गई है।

- ज्ञातव्य है कि अनुच्छेद-51क(ग) में भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करने और उसे अक्षुण्ण रखने का प्रावधान शामिल किया गया है।
- भारतीय संविधान में मूल कर्त्तव्यों का प्रावधान मूलत: शामिल नहीं था बल्कि इसे 42वें संविधान (संशोधन) अधिनियम, 1976 द्वारा जोड़ा गया।

2012

1. भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त नागरिकों के मूल कर्त्तव्यों में निम्नलिखित में से क्या है/हैं?

1. मिश्रित संस्कृति की समृद्ध विरासत की रक्षा

2. सामाजिक अन्याय से कमज़ोर वर्गों की रक्षा

3. वैज्ञानिक मनोदशा और खोज की भावना का विकास

4. वैयक्तिक और सामूहिक कार्यकलापों के सभी क्षेत्रों में उत्कृष्टता के लिये प्रयत्न

निम्नलिखित कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2**

(c) केवल 1, 3 और 4 **(d) 1, 2, 3 और 4**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: मिश्रित (सामासिक) संस्कृति की गौरवशाली एवं समृद्ध विरासत की रक्षा, वैज्ञानिक मनोदशा और खोज की भावना का विकास तथा व्यक्तिगत और सामूहिक कार्यकलापों के सभी क्षेत्रों में उत्कृष्टता के लिये प्रयत्न आदि सभी मूल कर्त्तव्यों में शामिल हैं जबकि सामाजिक अन्याय से कमज़ोर वर्गों की रक्षा का प्रावधान मूल कर्त्तव्यों में शामिल नहीं है।

मूल कर्त्तव्यः वर्तमान में कुल 11 मूल कर्त्तव्य हैं जिन्हें संविधान में शामिल किया गया है। मूल कर्त्तव्यों का प्रावधान अनुच्छेद-51क के तहत शामिल है। इसके अनुसार भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह-

- संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे।
- स्वतंत्रता के लिये हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे।
- भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे।
- देश की रक्षा करे और आह्वान किये जाने पर राष्ट्र की सेवा करे।
- भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे, जो धर्म, भाषा, प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं।
- हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे।
- प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्यजीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्द्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे।
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे।
- सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे।
- व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले।
- 86वें संविधान (संशोधन) अधिनियम, 2002 के द्वारा छः वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु के बच्चों के माता-पिता और प्रतिपाल्य के संरक्षक, जैसा मामला हो, उन्हें शिक्षा के अवसर प्रदान करने संबंधी प्रावधान शामिल किया गया।

2011

1. भारतीय संविधान के अंतर्गत निम्नलिखित में से कौन-सा मूल कर्त्तव्य नहीं है?

(a) लोक चुनावों में मतदान करना

(b) वैज्ञानिक प्रवृत्ति विकसित करना

(c) सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा करना

(d) संविधान के प्रति निष्ठावान रहना और उसके आदर्शों का सम्मान करना

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः लोक चुनावों में मतदान करना मौलिक कर्त्तव्यों (अनुच्छेद 51क) के विषयों में शामिल नहीं है। इसके अतिरिक्त सभी विकल्प मौलिक कर्त्तव्यों के अंतर्गत आते हैं।

राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व

2021

1. भारतीय संविधान के अंतर्गत धन का केंद्रीकरण किसका उल्लंघन करता है?

(a) समता का अधिकार

(b) राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व

(c) स्वातंत्र्य का अधिकार

(d) कल्याण की अवधारणा

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः संविधान के भाग-4 में अनुच्छेद-36-51 के मध्य 'राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व' वर्णित हैं। भाग-4 के ही अंतर्गत अनुच्छेद-39 के खंड (ग) में प्रावधान है कि राज्य अपनी नीति का, विशिष्टतया, इस प्रकार संचालन करेगा कि सुनिश्चित रूप से आर्थिक व्यवस्था इस प्रकार चले जिससे धन और उत्पादन-साधनों का सर्वसाधारण के लिये अहितकारी संकेंद्रण न हो। इस प्रकार विकल्प (b) सही उत्तर होगा।

2020

1. भारत के संविधान का कौन-सा भाग कल्याणकारी राज्य के आदर्श की घोषणा करता है?

(a) राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व

(b) मूल-अधिकार

(c) उद्देशिका

(d) सातवीं अनुसूची

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः भारतीय संविधान के भाग-4 (राज्य की नीति के निदेशक तत्व) में यह निहित है कि राज्य लोक कल्याण को बढ़ावा देने वाली सामाजिक व्यवस्था सुनिश्चित करेगा। संविधान के अनुच्छेद-38(1) में प्रावधान है, "राज्य ऐसी सामाजिक व्यवस्था की, जिसमें सामाजिक,आर्थिक और राजनीतिक न्याय राष्ट्रीय जीवन की सभी संस्थाओं को अनुप्राणित करे, भरसक प्रभावी रूप में स्थापना और संरक्षण करके लोक कल्याण की अभिवृद्धि का प्रयास करेगा।" अतः विकल्प (a) सही उत्तर होगा।

2. भारत के संविधान के भाग IV में अंतर्विष्ट प्रावधानों के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

1. वे न्यायालयों द्वारा प्रवर्तनीय होंगे।

2. वे किसी भी न्यायालय द्वारा प्रवर्तनीय नहीं होंगे।

3. इस भाग में अधिकथित सिद्धांत राज्य के द्वारा कानून बनाने को प्रभावित करेंगे।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 3 **(d) केवल 2 और 3**

सही उत्तरः (d)

व्याख्या: संविधान के भाग-4 (अनुच्छेद-36-51 तक) में राज्य की नीति के निदेशक तत्त्वों के संबंध में चर्चा की गई है। अनुच्छेद-37 में प्रावधान है कि इस भाग के अंतर्गत उपबंध किसी न्यायालय द्वारा प्रवर्तनीय नहीं होंगे, फिर भी इनमें अधिकथित तत्त्व देश के शासन में मूलभूत है एवं विधि बनाने में इन तत्त्वों को लागू करना राज्य का कर्त्तव्य होगा। अत: कथन 1 गलत है तथा 2 व 3 सही है।

3. भारत में, न्यायपालिका का कार्यपालिका से पृथक्करण, किससे व्यादेशित है?

(a) संविधान की उद्देशिका द्वारा

(b) राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व द्वारा

(c) सातवीं अनुसूची द्वारा

(d) परंपरागत व्यवहार द्वारा *सही उत्तर:* **(b)**

व्याख्या: भारत में न्यायपालिका का कार्यपालिका से पृथक्करण, 'राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व' द्वारा व्यादेशित है। इसी के अंतर्गत अनुच्छेद-50 के अनुसार, "राज्य की लोकसेवाओं में, न्यायपालिका को कार्यपालिका से पृथक् करने के लिये राज्य कदम उठाएगा।"

2017

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-
भारत के संविधान के संदर्भ में, राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व

1. विधायिका के कृत्यों पर निर्बंधन करते हैं।

2. कार्यपालिका के कृत्यों पर निर्बंधन करते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1, न ही 2**

सही उत्तर: **(d)**

व्याख्या: भारत के संविधान के भाग 4 में अनुच्छेद-36 से 51 तक राज्य के नीति-निदेशक सिद्धांतों का वर्णन किया गया है। ये राज्य की शासन व्यवस्था के मूल आधार हैं। इस प्रकार ये सिद्धांत देश के प्रशासकों के लिये एक आचार संहिता प्रस्तुत करते हैं। इन आधारभूत सिद्धांतों का उद्देश्य एक कल्याणकारी राज्य की स्थापना करना है परंतु ये गैर-बाध्यकारी प्रकृति के हैं। साथ ही, ये न तो विधायिका और न ही कार्यपालिका पर किसी प्रकार का निर्बन्धन लगाते हैं। अत: दिये गए विकल्पों में (d) सही है।

2. संविधान के 42वें संशोधन द्वारा, निम्नलिखित में से कौन-सा सिद्धांत राज्य की नीति के निदेशक तत्त्वों में जोड़ा गया था?

(a) पुरुष और स्त्री दोनों के लिये समान कार्य का समान वेतन

(b) उद्योगों के प्रबंधन में कामगारों की सहभागिता

(c) काम, शिक्षा और सार्वजनिक सहायता पाने का अधिकार

(d) श्रमिकों के लिये निर्वाह-योग्य वेतन एवं काम की मानवीय दशाएँ सुरक्षित करना *सही उत्तर:* **(b)**

व्याख्या: भारतीय संविधान का अनुच्छेद-43A उद्योग प्रबंधन में कामगारों की भागीदारी से संबद्ध है और इसका उल्लेख भारतीय संविधान के भाग IV में राज्य के नीति निदेशक तत्त्वों के तहत किया गया है। यह अनुच्छेद-42वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1976 के द्वारा सम्मिलित किया गया।

2015

1. भारत के संविधान में 'कल्याणकारी राज्य' का आदर्श किसमें प्रतिष्ठापित है?

(a) उद्देशिका

(b) राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व

(c) मूल अधिकार

(d) सातवीं अनुसूची *सही उत्तर:* **(b)**

व्याख्या: भारत के संविधान में कल्याणकारी राज्य की संकल्पना का समावेश राज्य की नीति के निदेशक तत्त्वों में किया गया है।

- 'कल्याणकारी राज्य' से तात्पर्य एक ऐसे राज्य से है जहाँ सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक न्याय हो। नीति के निदेशक तत्त्वों में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक न्याय स्थापित करने की बात कही गई है।
- अनुच्छेद-36 से अनुच्छेद-51 तक अनेक ऐसे प्रावधान किये गए हैं जो कल्याणकारी राज्य की स्थापना के उद्देश्य से प्रेरित हैं।
- अनुच्छेद-38(1) में स्पष्ट किया गया है कि राज्य ऐसी सामाजिक व्यवस्था की स्थापना का प्रयास करेगा जिसमें सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक न्याय राष्ट्रीय जीवन की सभी संस्थाओं को अनुप्रमाणित करे। इसी प्रकार अनुच्छेद-38(2) में स्पष्ट किया गया है कि राज्य विशेषत: आय की असमानताओं को कम करने का प्रयास करेगा।
- अनुच्छेद-39 में लैंगिक समानता को स्थापित करने की बात कही गई है।
- अनुच्छेद-39(क) में पुरुष एवं स्त्री सभी नागरिकों को समान रूप से जीविका के पर्याप्त साधन प्राप्त करने का अधिकार होना चाहिये। इसी प्रकार अनुच्छेद-39(घ) में पुरुषों एवं स्त्रियों दोनों को समान कार्य के लिये समान वेतन का प्रावधान किया गया है।
- भारतीय संविधान में नीति के निदेशक तत्त्वों को आयरलैण्ड के संविधान से ग्रहण किया गया है।

2. राज्य की नीति के निदेशक तत्त्वों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. ये तत्त्व देश के सामाजिक-आर्थिक लोकतंत्र की व्याख्या करते हैं।

2. इन तत्त्वों में अन्तर्विष्ट उपबंध किसी न्यायालय द्वारा प्रवर्तनीय (एनफोर्सिएबल) नहीं हैं।

उपर्युक्त कथनों में कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तर: **(c)**

व्याख्या: अनुच्छेद-37 के अनुसार, इस भाग (अर्थात् भाग 4; अनुच्छेद-36 से 51 तक) के अंतर्गत शामिल उपबंध किसी न्यायालय के द्वारा प्रवर्तनीय नहीं होंगे किंतु फिर भी इनमें अधिकथित तत्त्व देश के शासन में मूलभूत हैं और विधि बनाने में इन तत्त्वों को लागू करना राज्य का कर्त्तव्य होगा।

2014

1. भारत के संविधान में अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा की अभिवृद्धि का कहाँ उल्लेख है?

(a) संविधान की उद्देशिका में

(b) राज्य की नीति के निदेशक तत्त्वों में

(c) मूल कर्त्तव्यों में

(d) नौवीं अनुसूची में

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या: भारत के संविधान में राज्य की नीति के निदेशक तत्त्वों के खण्ड में अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा की अभिवृद्धि का उल्लेख है। यह प्रावधान भारतीय संविधान में अनुच्छेद-51 के अंतर्गत किया गया है।

- अनुच्छेद-51 के अनुसार, राज्य-
  - (क) अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा की अभिवृद्धि का,
  - (ख) राष्ट्रों के मध्य न्यायसंगत एवं सम्मानपूर्ण संबंधों को बनाए रखने का,
  - (ग) संगठित लोगों के एक-दूसरे से व्यवहारों में अंतर्राष्ट्रीय विधि और संधि बाध्यताओं के प्रति आदर बढ़ाने का, और
  - (घ) अंतर्राष्ट्रीय विवादों को मध्यस्थ द्वारा निपटारे के लिये प्रोत्साहन देने का प्रयास करेगा।

2013

1. भारत के संविधान के उद्देश्यों में से एक के रूप में 'आर्थिक न्याय' का किसमें उपबंध किया गया है?

(a) उद्देशिका और मूल अधिकार

(b) उद्देशिका और राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व

(c) मूल अधिकार और राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व

(d) उपर्युक्त में से किसी में नहीं

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या: भारत के संविधान की उद्देशिका एवं राज्य की नीति के निदेशक तत्त्वों में संविधान के उद्देश्यों में से एक के रूप में 'आर्थिक न्याय' का उपबंध किया गया है।

उद्देशिका: 'हम भारत के लोग', भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिये तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय...।

इसी प्रकार राज्य की नीति के निदेशक तत्त्वों के अंतर्गत अनुच्छेद-38 में आर्थिक न्याय का उपबंध किया गया है।

राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व: अनुच्छेद-38(1): राज्य ऐसी सामाजिक व्यवस्था की जिसमें सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय राष्ट्रीय जीवन की सभी संस्थाओं को अनुप्रमाणित करे, भरसक प्रभावी रूप में स्थापना और संरक्षण करके लोक कल्याण की अभिवृद्धि का प्रयास करेगा।

अनुच्छेद-38(2): राज्य विशिष्टतया आय की असमानताओं को कम करने का प्रयास करेगा और न केवल व्यक्तियों के बीच बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले और विभिन्न व्यवसायों में लगे हुए लोगों के समूहों के बीच भी प्रतिष्ठा, सुविधाओं और अवसरों की असमानता समाप्त करने का प्रयास करेगा।

2. भारत के संविधान के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सा देश के शासन के लिये आधारभूत है?

(a) मूल अधिकार

(b) मूल कर्त्तव्य

(c) राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व

(d) मूल अधिकार तथा मूल कर्त्तव्य

सही उत्तर: **(c)**

व्याख्या: भारतीय संविधान के भाग 4 में शामिल राज्य की नीति के निदेशक तत्त्वों (अनुच्छेद-36 से अनुच्छेद-51 तक) को देश के शासन में आधारभूत तत्त्वों के रूप में शामिल किया गया है।

- अनुच्छेद-37 में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि भाग 4 में अंतर्विष्ट उपबंध किसी न्यायालय के द्वारा प्रवर्तनीय नहीं होंगे किंतु फिर भी इस भाग में अधिकथित तत्त्व देश के शासन में मूलभूत हैं और विधि बनाने में इन तत्त्वों को लागू करना राज्य का कर्त्तव्य होगा।
- भारत एक कल्याणकारी राज्य है। कल्याणकारी राज्य का उद्देश्य सामाजिक और आर्थिक प्रजातंत्र की स्थापना करना होता है। सामाजिक एवं आर्थिक प्रजातंत्र की स्थापना के उद्देश्य से ही संविधान के भाग 4 में नीति के निदेशक तत्त्वों को शामिल किया गया है।

2012

1. भारतीय संविधान में प्रतिष्ठापित राज्य की नीति के निदेशक तत्त्वों के अंतर्गत निम्नलिखित प्रावधानों पर विचार कीजिये-

1. भारतीय नागरिकों के लिये समान नागरिक (सिविल) संहिता सुरक्षित करना

2. ग्राम पंचायतों को संघटित करना

3. ग्रामीण क्षेत्रों में कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित करना

4. सभी कर्मकारों के लिये यथोचित अवकाश तथा सांस्कृतिक अवसर सुरक्षित करना

उपर्युक्त में से कौन-से गांधीवादी सिद्धांत हैं, जो राज्य की नीति के निदेशक तत्त्वों में प्रतिबिंबित होते हैं?

(a) केवल 1, 2 और 4 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 1, 3 और 4 **(d) 1, 2, 3 और 4**

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या: उपर्युक्त कथनों में से केवल कथन 2 और 3 ही ऐसे नीति के निदेशक तत्त्व हैं जो गांधीवादी सिद्धांतों से मेल खाते हैं।

- ज्ञातव्य है कि गांधी जी सामाजिक एवं आर्थिक समानता के पक्षधर थे। उन्होंने कभी भी समान नागरिक संहिता की बात नहीं कही।
- समान नागरिक संहिता से तात्पर्य सामान्यत: एक ऐसे कानून से है जो सभी नागरिकों के पारिवारिक मामलों में जाति एवं धर्म से परे रहकर समान विधि को लागू करता है।
- गांधी जी आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था के पक्षधर थे। इसके लिये वे ग्रामों में कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित करने के हिमायती थे।
- इसी प्रकार ग्राम पंचायतों के संघटन की अवधारणा भी गांधीवादी सिद्धांतों से मेल खाती है।

उल्लेखनीय है कि गांधी जी ने कहा था कि विभिन्न धर्मों में एकता के लिये अंतर्जातीय विवाहों को बढ़ावा दिया जाना चाहिये। इस प्रकार के कथनों से समान नागरिक संहिता के पक्ष में गांधी जी के झुकाव को देखा जा सकता है किंतु उन्होंने कभी भी स्पष्टत: समान नागरिक संहिता की बात नहीं कही।

विधायिका

2025

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

I. लोकसभा का विघटन होने पर विघटन के पश्चात् होने वाले लोकसभा के पहले अधिवेशन के ठीक पहले तक अध्यक्ष अपने पद को रिक्त नहीं करेगा।

II. भारत के संविधान के उपबंधों के अनुसार, लोकसभा का कोई सदस्य अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित होने पर अपने राजनीतिक दल से तुरंत त्याग-पत्र दे देगा।

III. लोकसभा के अध्यक्ष को लोकसभा के तत्कालीन समस्त सदस्यों के बहुमत से पारित संकल्प द्वारा अपने पद से हटाया जा सकेगा, किंतु कोई संकल्प तब तक प्रस्तावित नहीं किया जाएगा जब तक कि उस संकल्प को प्रस्तावित करने के आशय की कम-से-कम चौदह दिन की सूचना न दे दी गई हो।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल I और II **(b) केवल II और III**

(c) केवल I और III **(d) I, II और III**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या:

- संविधान का अनुच्छेद-94 यह स्पष्ट करता है कि लोकसभा के विघटन के पश्चात भी स्पीकर का पद रिक्त नहीं होता और वे तब तक अपने पद पर बने रहते हैं जब तक कि नया स्पीकर निर्वाचित नहीं हो जाता। **अत: कथन I सही है।**
- संविधान में अध्यक्ष चुने जाने पर किसी राजनीतिक दल से इस्तीफा देने का प्रावधान नहीं है। हालाँकि परंपरा के अनुसार अध्यक्ष से निष्पक्षता से कार्य करने की अपेक्षा की जाती है, लेकिन औपचारिक इस्तीफा देने की आवश्यकता नहीं होती। **अत: कथन II सही नहीं है।**
- लोकसभा में प्रक्रिया और कार्य संचालन के नियमों के अनुच्छेद-94 (c) में लोकसभा के सभी तत्कालीन सदस्यों के बहुमत (अर्थात् प्रभावी बहुमत) द्वारा अध्यक्ष को हटाने की अनुमति दी गई है। ऐसा प्रस्ताव 14 दिन की अग्रिम सूचना देने के बाद ही पेश किया जा सकता है। **अत: कथन III सही है। अत: विकल्प (c) सही है।**

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

I. यदि कोई प्रश्न उठता है कि लोकसभा का कोई सदस्य 10वीं अनुसूची के अधीन निरर्हता से ग्रस्त हो गया है या नहीं, तब संघ की मंत्रिपरिषद की राय के अनुसार राष्ट्रपति का निर्णय अंतिम होगा।

II. भारत के संविधान में शब्द 'राजनीतिक दल' का कोई उल्लेख नहीं है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/है?

(a) केवल 1 **(b) केवल II**

(c) I और II दोनों **(d) न तो I और न ही II**

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: दल-बदल विरोधी कानून का उद्देश्य उन सांसदों/विधायकों को दंडित करना है जो किसी एक राजनीतिक दल को छोड़कर दूसरे दल में शामिल हो जाते हैं। इस कानून को वर्ष 1985 में संविधान में 'दसवीं अनुसूची' के रूप में जोड़ा गया था। इसका मुख्य उद्देश्य विधायिकाओं में राजनीतिक स्थिरता सुनिश्चित करना था, ताकि निर्वाचित प्रतिनिधि बार-बार दल न बदलें और जनादेश का अनादर न हो।

- दसवीं अनुसूची, जिसे लोकप्रिय रूप से दलबदल विरोधी अधिनियम के रूप में जाना जाता है, को 52वें संशोधन अधिनियम, 1985 के माध्यम से संविधान में शामिल किया गया था और यह किसी अन्य राजनीतिक दल में दलबदल के आधार पर निर्वाचित सदस्यों की अयोग्यता के प्रावधान निर्धारित करता है।
- दलबदल के आधार पर अयोग्यता के प्रश्नों पर निर्णय ऐसे सदन के अध्यक्ष को भेजा जाता है, जो 'न्यायिक समीक्षा' के अधीन होता है। **अत: कथन I सही नहीं है।**
- 'राजनीतिक दल' शब्द का स्पष्ट रूप से दसवीं अनुसूची में उल्लेख किया गया है, जो दलबदल विरोध से संबंधित है। **अत: कथन II सही नहीं है। अत: विकल्प (d) सही है।**

2024

1. दिसंबर 2023 तक भारत सरकार द्वारा कितने परिसीमन आयोग गठित किये गए हैं?

(a) एक **(b) दो**

(c) तीन **(d) चार**

सही उत्तर: (d)

व्याख्या:

- परिसीमन का तात्पर्य जनसंख्या में होने वाले परिवर्तनों के आलोक में किसी देश के **क्षेत्रीय निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाओं का निर्धारण**

करना है। **संविधान के अनुच्छेद-82** में प्रावधान है कि प्रत्येक जनगणना के बाद संसद द्वारा परिसीमन अधिनियम बनाया जाए।

- भारत में परिसीमन आयोग का **गठन 4 बार** किया जा चुका है- **वर्ष 1952** में (परिसीमन आयोग अधिनियम, 1952 के तहत), **वर्ष 1963** में (परिसीमन आयोग अधिनियम, 1962 के तहत), **वर्ष 1973** में (परिसीमन आयोग अधिनियम, 1972 के तहत) और **वर्ष 2002** में (परिसीमन आयोग अधिनियम, 2002 के तहत)।
- भारत में परिसीमन आयोग एक उच्च शक्ति प्राप्त निकाय है जिसके आदेशों को विधिक शक्ति प्राप्त होती है तथा **किसी भी न्यायालय के समक्ष इन आदेशों को प्रश्नगत नहीं किया जा सकता** है।

अतः विकल्प (d) सही है।

2. लोकसभा में आचार समिति के संबंध में, निम्नलिखित कथनों में से कौन-से सही हैं?

1. **प्रारंभ में यह एक तदर्थ समिति थी।**
2. **केवल कोई लोकसभा का सदस्य ही किसी लोकसभा सदस्य के अनैतिक आचरण से संबंधित शिकायत कर सकता है।**
3. **यह समिति किसी ऐसे मामले पर विचार नहीं कर सकती जो न्यायाधीन है।**

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर उत्तर चुनिये:

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2 और 3**
(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: **(c)**

व्याख्या:

- **आचार समिति का परिचय:**
  - इस समिति का गठन वर्ष 1997 में राज्यसभा में और वर्ष 2000 में लोकसभा में किया गया था। यह संसद के सदस्यों के लिये आचरण संहिता को लागू करती है। यह कदाचार के मामलों की जाँच करती है एवं उचित कार्रवाई की सिफारिश करती है। इस प्रकार, यह संसद में अनुशासन व शिष्टाचार बनाए रखने का कार्य करती है।
  - यह एकमात्र समिति है जो लोकसभा के सांसदों के खिलाफ नागरिकों की शिकायतों की जाँच करती है।
- **लोकसभा में आचार समिति का इतिहास:**
  - लोकसभा के मामले में, सदन की विशेषाधिकार समिति के एक अध्ययन समूह ने वर्ष 1997 में ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन तथा अमेरिका का दौरा करने के बाद विधि निर्माताओं के आचरण व नैतिकता से संबंधित प्रथाओं की संवीक्षा के लिये एक आचार समिति के गठन की सिफारिश की, लेकिन इसे लोकसभा द्वारा स्वीकार नहीं किया गया।
  - विशेषाधिकार समिति ने अंततः 13वीं लोकसभा के दौरान एक आचार समिति के गठन की सिफारिश की। स्वर्गीय अध्यक्ष जी. एम. सी. बालयोगी ने वर्ष 2000 में एक तदर्थ आचार समिति का गठन किया, जो वर्ष 2015 में ही सदन का स्थायी हिस्सा बन गई। **अतः कथन 1 सही है।**
- **शिकायतों के लिये प्रक्रिया:**
  - शुरू में, आचार समिति के नियमों के तहत एक प्रावधान था जो किसी भी भारतीय नागरिक को एक विधिनिर्माता के खिलाफ शिकायत दर्ज करने की अनुमति देता था।
  - लेकिन, वर्ष 2014 में एक उप-समिति ने सुझाव दिया कि इस तरह का प्रावधान किसी भी राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी को कमज़ोर आधार पर एक विधिनिर्माता के खिलाफ शिकायत दर्ज करने की अनुमति देगा। इसके बाद नियम को संशोधित कर प्रावधान किया गया कि शिकायत एक विधिनिर्माता के माध्यम से ही प्रस्तुत की जा सकती थी।
  - तब तक, कोई भी व्यक्ति किसी अन्य लोकसभा सांसद के माध्यम से किसी सदस्य के खिलाफ शिकायत कर सकता है, साथ ही कथित कदाचार के साक्ष्य और एक हलफनामा जिसमें कहा गया है कि शिकायत "मिथ्यापूर्ण, निरर्थक या परेशान करने वाली" नहीं है। यदि सदस्य स्वयं शिकायत करता है, तो शपथ-पत्र की आवश्यकता नहीं है। **अतः कथन 2 सही नहीं है।**
  - हालाँकि, समिति केवल मीडिया रिपोर्टों या वर्तमान में न्यायिक समीक्षा के तहत मामलों के आधार पर शिकायतों पर विचार नहीं करती है। **अतः कथन 3 सही है। अतः विकल्प (c) सही है।**

3. भारत के संविधान के अनुच्छेद-368 के अनुसार, संसद निम्नलिखित में से किनके द्वारा संविधान के किसी उपबंध में संशोधन कर सकेगी?

1. परिवर्धन **2. परिवर्तन**
3. निरसन

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2 और 3**
(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: **(d)**

व्याख्या:

- संविधान के भाग XX में अनुच्छेद-368 संविधान एवं इसकी प्रक्रियाओं में संशोधन करने की संसद की शक्ति से संबंधित है। इसमें कहा गया है कि संसद इस उद्देश्य के लिये **निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार, किसी भी प्रावधान के परिवर्धन, परिवर्तन या निरसन के माध्यम से संविधान में संशोधन** कर सकती है।
- **केशवानंद भारती वाद (1973) में उच्चतम न्यायालय ने यह निर्णय** दिया गया था कि संसद संविधान के प्रावधानों में संशोधन कर सकती है, लेकिन इसके **'मूल ढाँचे' को नष्ट नहीं** कर सकती।

अतः विकल्प (d) सही है।

4. संसद में धन विधेयक के संबंध में निम्नलिखित कथनों में से कौन-से सही हैं?

1. **अनुच्छेद-109 में धन विधेयक के संबंध में विशेष प्रक्रिया का उल्लेख है।**
2. **धन विधेयक राज्यसभा में पुरःस्थापित नहीं किया जाएगा।**

3. राज्यसभा या तो विधेयक को अनुमोदन दे सकती है या परिवर्तन के लिये सुझाव दे सकती है किंतु इसे अस्वीकार नहीं कर सकती।

4. राज्यसभा द्वारा धन विधेयक में सुझाए गए संशोधन को लोकसभा द्वारा स्वीकार करना होगा।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर उत्तर चुनिये:

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) 1, 2 और 3

(d) 1, 3 और 4

सही उत्तर: (c)

व्याख्या:

- संविधान के **अनुच्छेद-109** में धन विधेयक के संबंध में एक विशेष प्रक्रिया का उल्लेख किया गया है। **अतः कथन 1 सही है।**
- धन विधेयक को **केवल लोकसभा में प्रस्तुत** किया जाना चाहिये तथा उसे राज्यसभा (राज्य परिषद) में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। **अतः कथन 2 सही है।**
- राज्य सभा किसी धन विधेयक पर **केवल सिफारिशें** कर सकती है लेकिन उसमें संशोधन अथवा अस्वीकार करने की शक्ति उसके पास नहीं है। **अतः कथन 3 सही है।**
- राज्य सभा द्वारा धन विधेयक में प्रस्तावित संशोधन, जिसे लोकसभा चाहे तो अस्वीकार कर सकती है। **अतः कथन 4 सही नहीं है।**

अतः विकल्प (c) सही है।

5. लोकसभा के अध्यक्ष के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

जब लोकसभा के अध्यक्ष को हटाने का कोई संकल्प विचाराधीन है, तब

1. वह पीठासीन नहीं होगा/होगी।

2. उसे बोलने का अधिकार नहीं होगा।

3. वह संकल्प पर प्रथमतः मत देने का/की हकदार नहीं होगा/होगी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 1 और 2

(c) केवल 2 और 3

(d) 1, 2 और 3

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: भारत के संविधान के अनुच्छेद-96 के अनुसार, लोकसभा की किसी भी बैठक में, जब उपाध्यक्ष/अध्यक्ष को उसके पद से हटाने का संकल्प विचाराधीन है तब उपाध्यक्ष/अध्यक्ष, उपस्थित रहने पर भी, **पीठासीन नहीं रहेगा** और अनुच्छेद-95 के खंड (2) के उपबंध ऐसे ही लागू होंगे जैसे वे उस बैठक के संबंध में लागू होते हैं जिससे, यथास्थिति, उपाध्यक्ष/अध्यक्ष अनुपस्थित है। **अतः कथन 1 सही है।**

- भारत के संविधान के अनुच्छेद-96 (2) के अनुसार, **जब लोकसभा के अध्यक्ष/उपाध्यक्ष को हटाने का कोई संकल्प विचाराधीन है**, तब उसे लोकसभा में बोलने एवं अन्यथा उसकी कार्यवाही में भाग लेने का अधिकार होगा। अनुच्छेद-100 में किसी प्रावधान के बावजूद वह ऐसे संकल्प पर या ऐसी कार्यवाही के दौरान या किसी अन्य मामले पर केवल प्रथमतः मत देने का/की हकदार होगा/होगी, लेकिन मतों की समानता के मामले में वह मत देने का/की हकदार नहीं होगा/होगी। **अतः कथन 2 और 3 सही नहीं हैं। अतः विकल्प (a) सही है।**

6. भारतीय संसद के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. लोकसभा में लंबित कोई विधेयक उसके विघटन हो जाने पर व्यपगत हो जाता है।

2. लोकसभा द्वारा पारित और राज्यसभा में लंबित कोई विधेयक लोकसभा के विघटन हो जाने पर व्यपगत हो जाता है।

3. कोई विधेयक, जिसके संबंध में भारत के राष्ट्रपति ने सदनों की संयुक्त बैठक आहूत करने के अपने आशय की सूचना दे दी है, लोकसभा का विघटन हो जाने पर व्यपगत हो जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) 1 और 2

(c) 2 और 3

(d) केवल 3

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: अनुच्छेद-107 के अनुसार, कोई विधेयक जो लोकसभा में प्रस्तुत होकर लंबित रह जाता है, वह सदन के विघटन के साथ ही व्यपगत माना जाता है। **अतः कथन 1 सही है।**

- अनुच्छेद-107(5) के अनुसार, कोई विधेयक जो लोकसभा में प्रस्तुत होकर पारित हो जाता है, लेकिन राज्यसभा में लंबित रहता है, उसे भी व्यपगत माना जाता है। **अतः कथन 2 सही है।**
- अनुच्छेद-108(5) के अनुसार, इस अनुच्छेद-के अंतर्गत संयुक्त बैठक आयोजित की जा सकेगी और उसमें विधेयक पारित किया जा सकेगा, भले ही राष्ट्रपति द्वारा सदनों को उसमें बैठक के लिये बुलाने के अपने इरादे की अधिसूचना दिये जाने के बाद से लोकसभा का विघटन हो गया हो। **अतः कथन 3 सही नहीं है। अतः विकल्प (b) सही है।**

7. भारत के संसद के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों विचार कीजिये:

1. भारत के राष्ट्रपति द्वारा किसी सदन के सत्रावसान के लिये मंत्रि-परिषद के परामर्श की आवश्यकता नहीं है।

2. सदन का सत्रावसान सामान्यतः सदन के अनिश्चित काल के लिये स्थगित होने के पश्चात् किया जाता है, किंतु भारत के राष्ट्रपति द्वारा उस सदन का सत्रावसान करने पर कोई वर्जन नहीं है जो सत्र में है।

3. लोकसभा का विघटन भारत के राष्ट्रपति द्वारा असाधारण परिस्थितियों को छोड़कर, मंत्रि-परिषद के परामर्श से किया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) 1 और 2**

(c) 2 और 3 **(d) केवल 3**

सही उत्तरः **(c)**

व्याख्याः संविधान का अनुच्छेद-85(1) राष्ट्रपति को, संसद के प्रत्येक सदन को ऐसे समय एवं स्थान पर सत्र आहूत करने का अधिकार देता है, जिसे वह उचित समझे, किंतु एक सत्र में सदन की अंतिम बैठक और अगले सत्र में सदन की पहली बैठक के लिये नियत तिथि के बीच छह महीने का अंतर नहीं होगा। राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री या मंत्रिमंडल की सिफारिश पर सदनों को आहूत करने की शक्ति का प्रयोग करता है। **अतः कथन 1 सही नहीं है।**

- सत्रावसान सामान्यतः सदन की बैठक के अनिश्चित काल के लिये स्थगित होने के बाद होता है। सदन के अनिश्चित काल के लिये स्थगन और उसके सत्रावसान के बीच का समय अंतराल सामान्यतः दो से चार दिनों का होता है, यद्यपि ऐसे उदाहरण भी हैं जब सदन को उसी दिन स्थगित कर दिया गया जिस दिन उसे अनिश्चित काल के लिये स्थगित किया गया था। यह भी आवश्यक नहीं है कि दोनों सदनों का सत्रावसान एक ही दिन हो। ऐसे उदाहरण हैं, जब एक सदन को उसके अनिश्चित काल के लिये स्थगन पर स्थगित कर दिया गया, जबकि दूसरे सदन को उसके अनिश्चित काल के लिये स्थगन पर स्थगित नहीं किया गया। (राज्यसभा का 141वाँ सत्र जो 23 फरवरी 1987 को शुरू हुआ था, 20 मार्च 1987 को अनिश्चित काल के लिये स्थगित कर दिया गया था और 24 मार्च 1987 को सत्रावसान कर दिया गया था।) **अतः कथन 2 सही है।**
- भारत में, लोकसभा का कार्यकाल पाँच वर्ष का होता है, लेकिन इसे **पहले भी भंग किया जा सकता है।** संविधान के अनुच्छेद-83(2) के अनुसार, इसकी बैठक के पहले दिन से पाँच वर्ष पूरे होने पर निचले सदन को भंग कर दिया जाता है। **प्रधानमंत्री की सलाह पर राष्ट्रपति द्वारा निचले सदन को पहले भी भंग किया जा सकता है।** इसे तब भी भंग किया जा सकता है जब राष्ट्रपति को लगता है कि किसी सरकार के त्याग-पत्र देने के बाद कोई व्यवहार्य सरकार नहीं बन सकती। **अतः कथन 3 सही है।**

अतः विकल्प (c) सही है।

2023

1. भारतीय संसद में वित्त विधेयक और धन विधेयक के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजियेः

1. जब लोक सभा वित्त विधेयक को राज्य सभा में भेजती है, तो राज्य सभा उस विधेयक को संशोधित या अस्वीकृत कर सकती है।

2. जब लोक सभा धन विधेयक को राज्य सभा में भेजती है, तो राज्य सभा उस विधेयक को संशोधित या अस्वीकृत नहीं कर सकती, वह केवल अनुशंसाएँ कर सकती है।

3. लोक सभा और राज्य सभा के बीच असहमति होने पर, धन विधेयक के लिये कोई संयुक्त बैठक नहीं होती, किंतु वित्त विधेयक के लिए, संयुक्त बैठक आवश्यक होती है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही है?

(a) केवल एक **(b) केवल दो**

(c) सभी तीन **(d) कोई भी नहीं**

सही उत्तरः **(b)**

व्याख्याः

- वित्त विधेयक संविधान के अनुच्छेद-110 (a) के तहत परिभाषित धन विधेयक है। इसे अनुच्छेद-112 के तहत वार्षिक वित्तीय विवरण (बजट) के एक भाग के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
- **राज्यसभा के पास धन विधेयक** के संबंध में **सीमित शक्तियाँ हैं।** लोकसभा द्वारा पारित होने और राज्यसभा को प्रेषित होने के बाद यह धन विधेयक को अस्वीकार या संशोधित नहीं कर सकता है। इसे 14 दिनों के भीतर सिफारिशों के साथ या बिना सिफारिश के विधेयक को वापस करना होगा। राज्यसभा द्वारा की गई किसी या सभी सिफारिशों को स्वीकार या अस्वीकार करना लोकसभा के विवेक पर निर्भर है। **अतः कथन 2 सही है।**
- वित्त विधेयक के धन विधेयक की सभी शर्तों के अधीन होने के कारण, राज्यसभा केवल इस पर सिफारिशें कर सकती है। राज्यसभा वित्त विधेयक में न तो संशोधन कर सकती है और न ही इसे अस्वीकार नहीं कर सकती है (जैसा कि धन विधेयक के मामले में भी लागू होता है)। अतः कथन 1 सही नहीं है।
- **संयुक्त बैठक का प्रावधान** केवल सामान्य विधेयकों या वित्तीय विधेयकों पर लागू होता है न कि धन विधेयकों (वित्त विधेयकों सहित) या संविधान संशोधन विधेयकों पर। **अतः कथन 3 सही नहीं है।**

2022

1. निम्नलिखित में कौन-सी लोक सभा की अनन्य शक्ति (याँ) है/हैं?

1. आपात की उद्घोषणा का अनुसमर्थन करना

2. मंत्रिपरिषद के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पारित करना

3. भारत के राष्ट्रपति पर महाभियोग चलाना

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

(a) 1 और 2 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 3 **(d) केवल 3** *सही उत्तर:* (b)

व्याख्या: मंत्रिपरिषद के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पारित करना लोकसभा की अनन्य शक्ति है। जब लोकसभा मंत्रिपरिषद के विरुद्ध एक अविश्वास प्रस्ताव पारित करती है तो सभी मंत्रियों (जिसमें राज्यसभा के मंत्री भी शामिल हों) को त्यागपत्र देना पड़ता है। **अतः कथन 2 सही है।**

- आपात की उद्घोषणा का संकल्प संसद के प्रत्येक सदन की कुल सदस्य संख्या के बहुमत तथा उपस्थित व मतदान करने वाले सदस्यों के 2/3 बहुमत द्वारा पारित किया जाना आवश्यक होगा। राष्ट्रीय आपात की घोषणा को संसद के प्रत्येक सदन के समक्ष रखा जाता है तथा एक महीने के अंदर अनुमोदन न मिलने पर यह प्रवर्तन में नहीं रहती, किंतु एक बार अनुमोदन मिलने पर छह माह के लिये प्रवर्तन में बनी रह सकती है। परिणामतः आपात की उद्घोषणा का अनुसमर्थन लोकसभा तथा राज्यसभा दोनों द्वारा किया जाता है। यह लोकसभा की अनन्य शक्ति नहीं है। **अतः कथन 1 सही नहीं है।**
- राष्ट्रपति पर महाभियोग का प्रस्ताव मूल सदन (Originating House) में विशेष बहुमत (दो-तिहाई) द्वारा पारित किया जाना चाहिये। इसके बाद प्रस्ताव को विचार हेतु दूसरे सदन में भेजा जाता है। दूसरा सदन एक निरीक्षक के रूप में कार्य करता है। राष्ट्रपति पर लगे आरोपों की जाँच के लिये एक प्रवर समिति का गठन किया जाता है। भारत के राष्ट्रपति पर महाभियोग चलाना लोकसभा तथा राज्यसभा दोनों के अंतर्गत आता है। यह लोकसभा की अनन्य शक्ति नहीं है। **अतः कथन 3 सही नहीं है। अतः विकल्प (b) सही है।**

2. भारत में दल-बदल विरोधी कानून के सन्दर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. **यह कानून विनिर्दिष्ट करता है कि कोई नामनिर्दिष्ट विधायक सदन में नियुक्त होने के छह मास के अन्दर किसी राजनीतिक दल में शामिल नहीं हो सकता।**
2. **यह कानून कोई समयावधि नहीं देता जिसके अन्दर पीठासीन अधिकारी को दल-बदल मामला विनिश्चित करना होता है।**

उपर्युक्त कथनों में कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1, न ही 2**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: दल-बदल विरोधी कानून के तहत किसी जनप्रतिनिधि को अयोग्य घोषित किया जा सकता है यदि:

- एक निर्वाचित सदस्य स्वेच्छा से किसी राजनीतिक दल की सदस्यता छोड़ देता है।
- कोई निर्दलीय निर्वाचित सदस्य किसी राजनीतिक दल में शामिल हो जाता है।
- किसी सदस्य द्वारा सदन में पार्टी के पक्ष के विपरीत वोट किया जाता है।
- कोई सदस्य स्वयं को मतदान से अलग रखता है।
- छह महीने की समाप्ति के बाद कोई मनोनीत सदस्य किसी राजनीतिक दल में शामिल हो जाता है।
- अतः कोई भी नामनिर्दिष्ट विधायक सदन में नियुक्त होने के छः माह के भीतर किसी राजनितिक दल में शामिल हो सकता है परंतु छः माह के उपरांत नहीं। **अतः कथन 1 गलत है।**
- कानून के अनुसार, सदन के अध्यक्ष के पास सदस्यों को अयोग्य घोषित करने संबंधी निर्णय लेने की शक्ति है।
- यदि सदन के अध्यक्ष को दल से संबंधित कोई शिकायत प्राप्त होती है तो सदन द्वारा चुने गए किसी अन्य सदस्य को इस संबंध में निर्णय लेने का अधिकार है। अतः यह कानून कोई समयावधि नहीं निर्धारित करता जिसके भीतर पीठासीन अधिकारी को दल-बदल का मामला विनिश्चित करना होता है। **अतः कथन 2 सही है। अतः विकल्प (b) सही है।**

3. लोकसभा के उपाध्यक्ष के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. **लोकसभा के कार्य-पद्धति और कार्य-संचालन नियमों के अनुसार, उपाध्यक्ष का निर्वाचन उस तारीख को होगा जो अध्यक्ष नियत करे।**
2. **यह आज्ञापक उपबंध है कि लोकसभा के उपाध्यक्ष के रूप में किसी प्रतियोगी का निर्वाचन या तो मुख्य विपक्षी दल से, या शासक दल से, होगा।**
3. **सदन की बैठक की अध्यक्षता करते समय उपाध्यक्ष की शक्ति वैसी ही होती है जैसी कि अध्यक्ष की, और उसके विनिर्णयों के विरुद्ध अपील नहीं हो सकती।**
4. **उपाध्यक्ष की नियुक्ति के बारे में सुस्थापित संसदीय पद्धति यह है कि प्रस्ताव अध्यक्ष द्वारा रखा जाता है और प्रधान मंत्री द्वारा विधिवत समर्थित होता है।**

उपर्युक्त कथनों में कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 3 **(b) 1, 2 और 3**

(c) केवल 3 और 4 **(d) केवल 2 और 4**

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: लोकसभा में प्रक्रिया और कार्य संचालन के नियमों के अनुसार, उपसभापति का चुनाव उस तारीख को होगा जो अध्यक्ष तय करेगा। कन्वेंशन के अनुसार, डिप्टी स्पीकर का पद भारत में विपक्षी दल को दिया जाता है। **अतः विकल्प 1 सही है।**

- 10वीं लोकसभा तक अध्यक्ष और उपाध्यक्ष दोनों आमतौर पर सत्ताधारी दल से चुने जाते थे। 11वीं लोकसभा के बाद से यह आम सहमति रही है कि अध्यक्ष का पद सत्ता पक्ष/गठबंधन को और उपाध्यक्ष का पद मुख्य विपक्षी दल को दिया जाता है। **अतः विकल्प 2 सही नहीं है।**

- अनुच्छेद-95 उपाध्यक्ष या अन्य व्यक्ति को अध्यक्ष के पद के कर्तव्यों का पालन करने या अध्यक्ष के रूप में कार्य करने की शक्ति का प्रावधान प्रदान करता है। अत: उपाध्यक्ष द्वारा सदन की बैठक की अध्यक्षता करते समय उसकी शक्ति ठीक लोकसभा अध्यक्ष के समान होती है और उसके विनिर्णयों के विरुद्ध कोई अपील नहीं हो सकती है। **अत: विकल्प 3 सही है।**
- उपाध्यक्ष का चुनाव लोकसभा द्वारा ही अपने सदस्यों में से किया जाता है। स्पीकर के चुनाव के बाद डिप्टी स्पीकर का भी चुनाव होता है। **अत: विकल्प 4 सही नहीं है। अत: विकल्प (a) सही है।**

2021

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. भारत में ऐसा कोई कानून नहीं है जो प्रत्याशियों को किसी एक लोकसभा चुनाव में तीन निर्वाचन-क्षेत्रों से लड़ने से रोकता है।

2. 1991 में लोकसभा चुनाव में श्री देवी लाल ने तीन लोकसभा निर्वाचन-क्षेत्रों से चुनाव लड़ा था।

3. वर्तमान नियमों के अनुसार, यदि कोई प्रत्याशी किसी एक लोकसभा चुनाव में कई निवार्चन-क्षेत्रों से चुनाव लड़ता है, तो उसकी पार्टी को उन निर्वाचन-क्षेत्रों के उप-चुनावों का खर्च उठाना चाहिये, जिन्हें उसने खाली किया है बशर्ते वह सभी निर्वाचन-क्षेत्रों से विजयी हुआ हो।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**
(c) 1 और 3 **(d) 2 और 3**

सही उत्तर: **(*)**

व्याख्या: लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 33(7) के प्रावधानों के अनुसार कोई व्यक्ति 2 से अधिक लोकसभा क्षेत्रों में प्रत्याशी नहीं बन सकता है। अत: कथन 1 सही नहीं है।

- निर्वाचन आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध चुनाव परिणाम डाटा के अनुसार, देवीलाल 1991 के चुनाव में केवल हरियाणा के रोहतक लोकसभा क्षेत्र से चुनाव लड़े थे। हालाँकि 1989 में वे 3 सीटों (रोहतक, सीकर व फिरोजपुर) से चुनाव लड़े थे। अत: कथन 2 भी सही नहीं है।
- यदि कोई प्रत्याशी एकाधिक निर्वाचन क्षेत्रों से लोकसभा चुनाव लड़कर जीत जाता है और बाद में किसी जीते हुए निर्वाचन क्षेत्र को खाली करता है, तो उसके उप-चुनावों का खर्चा सामान्य स्थिति की तरह केंद्र सरकार ही उठाएगी। अत: कथन 3 सही नहीं है।

नोट: ध्यातव्य है कि संघ लोक सेवा आयोग ने इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

2020

1. संसदीय व्यवस्था वाली सरकार वह होती है, जिसमें

(a) संसद के सभी राजनीतिक दलों का सरकारों में प्रतिनिधित्व होता है।

(b) सरकार संसद के प्रति उत्तरदायी होती है और उसके द्वारा हटाई जा सकती है।

(c) सरकार लोगों के द्वारा निर्वाचित होती है और उनके द्वारा हटाई जा सकती है।

(d) सरकार संसद के द्वारा चुनी जाती है किंतु निर्धारित समयावधि के पूर्ण होने के पूर्व हटाई नहीं जा सकती।

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या: संसदीय व्यवस्था के अंतर्गत सरकार संसद के प्रति उत्तरदायी होती है और संसद द्वारा सरकार को हटाया भी जा सकता है। उदाहरण के तौर पर देखें तो भारत में संसदीय व्यवस्था वाली सरकार है और संविधान के अनुच्छेद-75(3) के अनुसार मंत्रिपरिषद सामूहिक रूप से लोकसभा के प्रति उत्तरदायी है। अत: विकल्प (b) सही उत्तर होगा।

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. भारत के संविधान के अनुसार, कोई भी ऐसा व्यक्ति, जो मतदान के लिये योग्य है, किसी राज्य में छह माह के लिये मंत्री बनाया जा सकता है तब भी, जब कि वह उस राज्य के विधानमंडल का सदस्य नहीं है।

2. लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 के अनुसार, कोई भी ऐसा व्यक्ति, जो दांडिक अपराध के अंतर्गत दोषी पाया गया है और जिसे पाँच वर्ष के लिये कारावास का दंड दिया गया है, चुनाव लड़ने के लिये स्थायी तौर पर निरर्हत हो जाता है, भले ही वह कारावास से मुक्त हो चुका हो।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**
(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1, न ही 2**

सही उत्तर: **(d)**

व्याख्या: अनुच्छेद-326 लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं के लिये निर्वाचनों का वयस्क मताधिकार के आधार पर होना सुनिश्चित करता है। इस अनुच्छेद-में 61वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1988 के द्वारा मतदान की आयु को 21 से घटाकर 18 वर्ष निर्धारित की गई है। वहीं संविधान के अनुच्छेद-164(4) के प्रावधानों के अंतर्गत कोई मंत्री छह माह तक बिना राज्य विधानमंडल की सदस्यता के अपने पद पर बना रह सकता है। उल्लेखनीय है कि उक्त छह माह की अवधि के लिये मंत्री बनने वाले व्यक्ति की अर्हता के संबंध में संविधान में कोई स्पष्ट प्रावधान नहीं है। उसकी अर्हता का प्रश्न तभी उठता है जब वह

विधानमंडल की सदस्यता लेने जाता है, जहाँ अनुच्छेद-173(ख) के अनुसार राज्य विधानसभा की सदस्यता हेतु उसकी आयु न्यूनतम 25 वर्ष व विधान परिषद् हेतु आयु न्यूनतम 30 वर्ष होनी चाहिये। इस प्रकार अनुच्छेद-164(4) व 173(ख) दोनों के अनुसार छह माह की अवधि के लिये मंत्री बनने हेतु किसी व्यक्ति के मतदान के लिये योग्य होने की अनिवार्यता नहीं है। **अतः कथन 1 सही नहीं है।**

जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 8(3) उपबंध करती है कि कोई भी व्यक्ति, जो दांडिक अपराध के अंतर्गत दोषी पाया गया है तथा उसे 2 वर्ष या उससे अधिक के लिये कारावास भेजा गया है, कारावास से मुक्त होने के बाद छः वर्ष तक चुनाव लड़ने के लिये निरर्हत रहेगा। अतः कथन 2 सही नहीं है।

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. भारत का राष्ट्रपति ऐसे स्थान पर, जिसे वह ठीक समझे, संसद का सत्र आहूत (आह्वान) कर सकता है।

2. भारत का संविधान एक वर्ष में संसद के तीन सत्रों का प्रावधान करता है, किंतु सभी तीन सत्रों का चलाया जाना अनिवार्य नहीं है।

3. एक वर्ष में दिनों की कोई न्यूनतम संख्या निर्धारित नहीं है जब संसद का चलना आवश्यक हो।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 3 **(d) केवल 2 और 3**

सही उत्तरः (c)

व्याख्याः संविधान के अनुच्छेद-85 में संसद के सत्र, सत्रावसान एवं विघटन संबंधी उपबंध है। इस अनुच्छेद-के अनुसार राष्ट्रपति समय-समय पर संसद के प्रत्येक सदन को ऐसे समय एवं स्थान पर, जो वह ठीक समझे, अधिवेशन के लिये आहूत कर सकता है। अतः कथन 1 सही है।

सामान्यतः एक वर्ष में संसद के तीन सत्र होते हैं-बजट सत्र (फरवरी से मई), मानसून सत्र (जुलाई से सितंबर) एवं शीतकालीन सत्र (नवंबर से दिसंबर), किंतु संविधान में यह उपबंध नहीं है कि एक वर्ष में संसद के तीन सत्र होंगे। अतः कथन 2 सही नहीं है। संविधान के अनुसार एक सत्र की अंतिम बैठक एवं आगामी सत्र की प्रथम बैठक के लिये नियत तारीख के मध्य छः माह का अंतर नहीं होना चाहिये। परंतु एक वर्ष में दिनों की कोई न्यूनतम संख्या निर्धारित नहीं है। अतः कथन 3 सही है।

4. राज्य सभा की लोक सभा के समान शक्तियाँ किस क्षेत्र में हैं?

(a) नई अखिल भारतीय सेवाएँ गठित करने के विषय में

(b) संविधान में संशोधन करने के विषय में

(c) सरकार को हटाने के विषय में

(d) कटौती प्रस्ताव प्रस्तुत करने के विषय में

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः राज्य सभा संसद का द्वितीय एवं उच्च सदन है, जबकि लोकसभा प्रथम एवं निम्न सदन। राज्य सभा को संविधान संशोधन के संबंध में लोक सभा के समान शक्ति है, क्योंकि संविधान संशोधन विधेयक संसद के किसी भी सदन में लाया जा सकता है एवं दोनों सदनों द्वारा अलग-अलग विशेष बहुमत (कुल सदस्य संख्या के बहुमत तथा उस सदन में उपस्थित एवं मत देनेवाले सदस्यों के कम-से-कम दो तिहाई बहुमत) से पारित किया जाना आवश्यक है। यदि किसी कारण दोनों सदनों के मध्य गतिरोध उत्पन्न हो जाता है, तो संसद की संयुक्त बैठक नहीं बुलाई जा सकती है। अतः विकल्प (b) सही है। उल्लेखनीय है कि नई अखिल भारतीय सेवाओं के गठन में राज्यसभा को विशेष अधिकार प्राप्त हैं।

5. वित्त मंत्री संसद में बजट प्रस्तुत करते हुए उसके साथ अन्य प्रलेख भी प्रस्तुत करते हैं जिनमें वृहद आर्थिक रूपरेखा विवरण (The Macro Economic Framework Statement) भी सम्मिलित रहता है। यह पूर्वोक्त प्रलेख निम्न आदेशन के कारण प्रस्तुत किया जाता है-

(a) चिरकालिक संसदीय परंपरा के कारण

(b) भारत के संविधान के अनुच्छेद-112 तथा अनुच्छेद-110 (1) के कारण

(c) भारत के संविधान के अनुच्छेद-113 के कारण

(d) राजकोषीय उत्तरदायित्व एवं बजट प्रबंधन अधिनियम, 2003 के प्रावधानों के कारण

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः वृहत् आर्थिक रूपरेखा विवरण, राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन अधिनियम, 2003 की धारा-3 और इसके तहत बनाए गए नियमों के तहत संसद में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें अंतर्निहित पूर्वानुमानों के विवरण सहित अर्थव्यवस्था की वृद्धि की संभावनाओं का मूल्यांकन शमिल है। इसमें सकल घरेलू उत्पाद विकास दर, केन्द्र सरकार का राजकोषीय संतुलन और अर्थव्यवस्था के वैदेशिक क्षेत्र संतुलन से संबंधित अनुमान भी शामिल होते हैं। अतः विकल्प (d) सही है।

2019

1. भारत के किसी राज्य की विधानसभा के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. वर्ष के प्रथम सत्र के प्रारंभ में राज्यपाल सदन के सदस्यों के लिये रूढ़िगत संबोधन करता है।

2. जब किसी विशिष्ट विषय पर राज्य विधानमंडल के पास कोई नियम नहीं होता, तो उस विषय पर वह लोकसभा के नियम का पालन करता है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1, न ही 2**

सही उत्तरः (c)

व्याख्याः अनुच्छेद-176(1) के अनुसार, राज्यपाल (विधानसभा के लिये प्रत्येक साधारण निर्वाचन के पश्चात् प्रथम सत्र के आरंभ में और प्रत्येक वर्ष के प्रथम सत्र के आरंभ में) विधानसभा में या विधानपरिषद्

वाले राज्य की दशा में एक साथ समवेत दोनों सदनों में अभिभाषण (रूढ़िगत संबोधन) करेगा और विधानमंडल को उसके आह्वान के कारण बताएगा। इस प्रकार कथन (1) सही है।

- अनुच्छेद-209 के तहत किसी राज्य का विधानमंडल, वित्तीय कार्य को समय के भीतर पूरा करने के प्रयोजन के लिये किसी वित्तीय विषय से संबंधित या राज्य की संचित निधि में से धन का विनियोग करने के लिये किसी विधेयक से संबंधित, राज्य के विधानमंडल के सदन या सदनों की प्रक्रिया और कार्य संचालन का विनियमन विधि द्वारा कर सकेगा।
- संविधान में किसी विषय पर नियम न होने की स्थिति में राज्य विधानमंडल द्वारा लोकसभा के नियम का पालन किया जा सकता है। अतः कथन (2) भी सही है।

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. संसद (निरर्हता निवारण) अधिनियम, 1959 कई पदों को 'लाभ का पद' के आधार पर निरर्हता से छूट देता है।

2. उपर्युक्त अधिनियम पाँच बार संशोधित किया गया था।

3. शब्द 'लाभ का पद' भारत के संविधान में भली-भाँति परिभाषित किया गया है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 3**

(c) केवल 2 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः कथन 1 सही है क्योंकि संसद (निरर्हता निवारण) अधिनियम, 1959 कई पदों को 'लाभ का पद' के आधार पर निरर्हता से छूट देता है। चूँकि, इस अधिनियम में अब तक 5 बार संशोधन (1993, 1999, 2000, 2006 तथा 2013) किया जा चुका है, अतः कथन 2 भी सही है।

- कथन 3 गलत है क्योंकि भारत के संविधान में 'लाभ का पद' शब्द को परिभाषित नहीं किया गया है, हालाँकि इस शब्द का उल्लेख विभिन्न अनुच्छेदों, यथा-अनुच्छेद-102(1)(क) तथा अनुच्छेद-191(1)(क) में हुआ है।

2018

1. धन विधेयक के संबंध में, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही *नहीं* है?

(a) किसी बिल (विधेयक) को धन विधेयक तब माना जाएगा जब इसमें केवल किसी कर के अधिरोपण, उन्मूलन, माफी, परिवर्तन या विनियमन से संबंधित प्रावधान हों।

(b) धन विधेयक में भारत की संचित निधि एवं भारत की आकस्मिकता निधि की अभिरक्षा से संबंधित उपबंध होते हैं।

(c) धन विधेयक भारत की आकस्मिकता निधि से धन के विनियोजन से संबंधित होता है।

(d) धन विधेयक भारत सरकार द्वारा धन के उधार लेने या कोई प्रत्याभूति देने के विनियमन से संबंधित होता है।

सही उत्तरः (c)

व्याख्याः धन विधेयक भारत की आकस्मिकता निधि से धन के विनियोजन से संबंधित नहीं है, क्योंकि धन का विनियोजन भारत की संचित निधि से होता है। इसलिये कथन (c) सही नहीं है, जबकि कथन (a), (b) एवं (d) सही हैं।

संविधान के अनुच्छेद-110 के तहत धन विधेयक का विभिन्न उपबंधों में वर्णन है। कोई विधेयक धन विधेयक समझा जाएगा यदि वह निम्नलिखित सभी या किन्हीं विषयों से संबंधित है अर्थात्-

- किसी कर का अधिरोपण, उत्सादन, परिहार, परिवर्तन या विनियमन;
- भारत सरकार द्वारा धन उधार लेने या कोई प्रत्याभूति देने का विनियमन अथवा भारत सरकार द्वारा उधार ली गई या ली जाने वाली किन्हीं वित्तीय बाध्यताओं से संबंधित विधि का संशोधन;
- भारत की संचित निधि या आकस्मिकता निधि की अभिरक्षा, ऐसी किसी निधि में धन जमा करना या उसमें से धन निकालना।
- किसी व्यय को भारत की संचित निधि पर भारित व्यय घोषित करना या ऐसे किसी व्यय की रकम को बढ़ाना।
- भारत की संचित निधि या भारत के लोक लेखा मद से धन प्राप्त करना।

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. विधान सभा का/की अध्यक्ष, यदि विधान सभा का/की सदस्य नहीं रहता है/रहती है तो अपना पद रिक्त कर देगा/देगी।

2. जब कभी विधान सभा का विघटन किया जाता है तो अध्यक्ष अपने पद को तुरंत रिक्त कर देगा/देगी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1, न ही 2**

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः विधानसभा का अध्यक्ष और उपाध्यक्ष निम्नलिखित मामले में अपना पद रिक्त करेगा:

- यदि वह विधानसभा का सदस्य नहीं रहता है तो अपना पद रिक्त कर देगा। अतः कथन 1 सही है।
- किसी भी समय, यदि वह सदस्य अध्यक्ष है तो उपाध्यक्ष को संबोधित और यदि वह सदस्य उपाध्यक्ष है तो अध्यक्ष को संबोधित अपने हस्ताक्षरित पत्र द्वारा अपना पद त्याग सकेगा; और
- विधानसभा के तत्कालीन समस्त सदस्यों के बहुमत से पारित संकल्प द्वारा अपने पद से हटाया जा सकेगा; परंतु इसके लिये कोई संकल्प तब तक प्रस्तावित नहीं किया जाएगा जब तक कि उस संकल्प को प्रस्तावित करने के आशय की कम-से-कम चौदह दिनों की सूचना न दे दी गई हो।

लेकिन, जब कभी विधानसभा का विघटन किया जाता है तो विघटन के पश्चात् होने वाले विधानसभा के प्रथम अधिवेशन के ठीक पहले तक अध्यक्ष अपने पद को रिक्त नहीं करेगा। अत: कथन 2 सही नहीं है।

3. भारत की संसद के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सी संसदीय समिति इसकी संवीक्षा करती है और सदन को सूचित करती है कि जो विनियम, नियम, उप-नियम, उप-विधि, आदि बनाने की शक्तियाँ संविधान द्वारा प्रदत्त हैं या संसद द्वारा प्रत्यायोजित हैं उनका कार्यपालिका द्वारा इन प्रत्यायोजनों (डेलिगेशन) की परिधि के भीतर उचित प्रयोग हो रहा है?

(a) सरकारी आश्वासनों संबंधी समिति

(b) अधीनस्थ विधान संबंधी समिति

(c) नियम समिति

(d) कार्य सलाहकार (बिज़नेस ऐडवाइज़री) समिति

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या: विनियम, नियम, उपनियम तथा नियमावली बनाने के लिये संसद अथवा संविधान द्वारा कार्यपालिका को प्रदत्त शक्तियों का उपयोग भली-भाँति हो रहा है या नहीं, इस पर अधीनस्थ विधायन समिति विचार करती है और प्रतिवेदन देती है। दोनों सदनों में समिति की सदस्य संख्या 15 होती है। इसका गठन 1953 में किया गया था। **अत: विकल्प (b) सही है।**

4. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. पहली लोकसभा में विपक्ष में सबसे बड़ा राजनीतिक दल स्वतंत्र पार्टी था।

2. लोक सभा में 'नेता-प्रतिपक्ष' को सर्वप्रथम 1969 में मान्यता दी गई थी।

3. लोक सभा में यदि किसी दल के न्यूनतम 75 सदस्य न हों तो उसके नेता को नेता-प्रतिपक्ष के रूप में मान्यता नहीं मिल सकती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 3 **(b) केवल 2**

(c) केवल 2 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या: पहली बार 1969 में लोकसभा में नेता-प्रतिपक्ष को मान्यता दी गई थी। अत: कथन 2 सही है, जबकि पहली लोकसभा में विपक्ष में सबसे बड़ा दल कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया था, न कि स्वतंत्र पार्टी। अत: कथन (1) सही नहीं है। विपक्ष के नेताओं के वेतन एवं भत्ते संसदीय अधिनियम, 1977 के अनुसार लोकसभा में नेता-प्रतिपक्ष की मान्यता के लिये किसी दल के पास लोकसभा की कुल सीटों का 10% अथवा 55 सीटें होनी चाहियें। अत: कथन 3 सही नहीं है।

2017

1. भारत की संसद के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. ग़ैर-सरकारी विधेयक ऐसा विधेयक है जो संसद् के ऐसे सदस्य द्वारा प्रस्तुत किया जाता है जो निर्वाचित नहीं है किंतु भारत के राष्ट्रपति द्वारा नामनिर्दिष्ट है।

2. हाल ही में, भारत की संसद् के इतिहास में पहली बार एक ग़ैर-सरकारी विधेयक पारित किया गया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, न ही 2

सही उत्तर: **(d)**

व्याख्या: मंत्री द्वारा पेश किये जाने वाले विधेयक को सरकारी विधेयक कहा जाता है तथा मंत्री को छोड़कर शेष किसी भी सदस्य द्वारा पेश किये जाने वाले विधेयक को गैर-सरकारी विधेयक कहा जाता है। हाल ही में संसद में गैर-सरकारी विधेयक पेश तो किया गया, लेकिन पारित नहीं हो पाया।

2. निम्नलिखित कथनों में से उस एक को चुनिये, जो मंत्रिमंडल स्वरूप की सरकार के अंतर्निहित सिद्धांत को अभिव्यक्त करता है-

(a) ऐसी सरकार के विरुद्ध आलोचना को कम-से-कम करने की व्यवस्था, जिसके उत्तरदायित्व जटिल हैं तथा उन्हें सभी के संतोष के लिये निष्पादित करना कठिन है।

(b) ऐसी सरकार के कामकाज में तेज़ी लाने की क्रियाविधि, जिसके उत्तरदायित्व दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं।

(c) सरकार के जनता के प्रति सामूहिक उत्तरदायित्व को सुनिश्चित करने के लिये संसदीय लोकतंत्र की एक क्रियाविधि।

(d) उस शासनाध्यक्ष के हाथों को मज़बूत करने का एक साधन जिसका जनता पर नियंत्रण ह्रासोन्मुख दशा में है।

सही उत्तर: **(c)**

व्याख्या: मंत्रिमंडल स्वरूप की सरकार के अंतर्निहित सिद्धांतों में से एक सामूहिक उत्तरदायित्व भी है। अत: प्रश्न के संदर्भ में विकल्प (c) सही है।

3. संसदीय स्वरूप के शासन का प्रमुख लाभ यह है कि

(a) कार्यपालिका और विधानमंडल दोनों स्वतंत्र रूप से कार्य करते हैं।

(b) यह नीति की निरंतरता प्रदान करता है और यह अधिक दक्ष है।

(c) कार्यपालिका, विधानमंडल के प्रति उत्तरदायी बनी रहती है।

(d) सरकार के अध्यक्ष को निर्वाचन के बिना नहीं बदला जा सकता।

सही उत्तर: **(c)**

व्याख्या: संसदीय स्वरूप के शासन में कार्यपालिका अर्थात् सरकार तभी तक बनी रह सकती है जब तक विधायिका का समर्थन हासिल हो।

भारतीय संदर्भ में चर्चा करें तो केंद्र सरकार को लोक सभा में तथा राज्य सरकार को विधान सभा में बहुमत हासिल करना होता है जबकि

अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली में विधायिका का समर्थन हासिल करना ज़रूरी नहीं रहता है। अतः संसदीय शासन प्रणाली में कार्यपालिका विधानमंडल के प्रति उत्तरदायी बनी रहती है।

4. भारत की संसद् किसके/किनके द्वारा मंत्रिपरिषद् के कृत्यों के ऊपर नियंत्रण रखती है?

1. स्थगन प्रस्ताव
2. प्रश्न काल
3. अनुपूरक प्रश्न

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः भारत की संसद मंत्रिपरिषद् पर नियंत्रण रखने के लिये प्रश्नकाल, अनुपूरक प्रश्न, शून्यकाल, स्थगन प्रस्ताव इत्यादि का प्रयोग करती है। अतः तीनों विकल्प सही हैं।

5. लोक सभा के निर्वाचन के लिये नामंकन-पत्र

(a) भारत में निवास करने वाले किसी भी व्यक्ति द्वारा दाखिल किया जा सकता है।
(b) जिस निर्वाचन क्षेत्र में निर्वाचन लड़ा जाना है, वहाँ के किसी निवासी द्वारा दाखिल किया जा सकता है।
(c) भारत के किसी नागरिक द्वारा, जिसका नाम किसी निर्वाचन क्षेत्र की मतदाता-सूची में है, दाखिल किया जा सकता है।
(d) भारत के किसी भी नागरिक द्वारा दाखिल किया जा सकता है।

सही उत्तरः (c)

व्याख्याः संसद की सदस्यता के लिये अर्हता संविधान के अनुच्छेद-84 में वर्णित है। इसके अनुसार कोई व्यक्ति संसद के किसी स्थान को भरने के लिये तभी अर्हित होगा, जब–

- वह भारत का नागरिक है और निर्वाचन आयोग द्वारा इस निमित्त प्राधिकृत किसी व्यक्ति के समक्ष तीसरी अनुसूची में इस प्रयोजन हेतु दिये गए प्रारूप के अनुसार शपथ लेता है और उस पर हस्ताक्षर करता है।
- वह राज्य सभा में स्थान के लिये कम-से-कम तीस वर्ष का और लोक सभा के लिये कम-से-कम पच्चीस वर्ष का है।
- उसके पास ऐसी अन्य अर्हताएँ हैं जो संसद द्वारा बनाई गई किसी विधि द्वारा या उसके अधीन इस निमित्त विहित की जाएँ।
- उल्लेखनीय है कि जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 4(डी) किसी व्यक्ति को चुनाव लड़ने से रोकती है, यदि वह किसी भी संसदीय निर्वाचन क्षेत्र में मतदाता नहीं है। इस अधिनियम की धारा 5(सी) विधानसभा के लिये इसी तरह का प्रावधान करती है।

6. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. लोक सभा अथवा राज्य की विधान सभा के निर्वाचन में, जीतने वाले उम्मीदवार को निर्वाचित घोषित किये जाने के लिये, किये गए मतदान का कम-से-कम 50 प्रतिशत पाना अनिवार्य है।

2. भारत के संविधान में अधिकथित उपबंधों के अनुसार, लोक सभा में अध्यक्ष का पद बहुमत वाले दल को जाता है तथा उपाध्यक्ष का पद विपक्ष को जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः लोक सभा तथा राज्यों की विधान सभाओं के प्रतिनिधि जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से चुने जाते हैं। इनमें सर्वाधिक मत प्राप्त करने वाला उम्मीदवार, निर्वाचित घोषित किया जाता है। इसमें 50% मत प्राप्त करने जैसी कोई बाध्यता नहीं होती है। संविधान में इस प्रकार का कोई उपबंध नहीं है कि लोक सभा में अध्यक्ष का पद बहुमत वाले दल को जाता है तथा उपाध्यक्ष का पद विपक्ष को जाता है, परंतु व्यवहार में इस परिपाटी का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार विकल्प (d) सही उत्तर होगा।

2016

1. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

1. लोक सभा में लम्बित कोई विधेयक उसके सत्रावसान पर व्यपगत (लैप्स) हो जाता है।

2. राज्य सभा में लम्बित कोई विधेयक, जिसे लोक सभा ने पारित नहीं किया है, लोक सभा के विघटन पर व्यपगत नहीं होगा।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः अनुच्छेद-107(3) के अनुसार लोक सभा में लम्बित कोई भी विधेयक उसके सत्रावसान पर व्यपगत नहीं होता है। वहीं अनुच्छेद-107(4) के अनुसार राज्य सभा में लम्बित कोई विधेयक जिसे लोक सभा ने पारित नहीं किया है, लोक सभा के विघटन पर व्यपगत नहीं होता। क्योंकि राज्य सभा एक स्थायी सदन है अतः यह विधेयक बना रहता है। नई लोक सभा के गठन के पश्चात् यह विधेयक लोक सभा में भेजा जा सकता है। अतः कथन 1 असत्य है तथा कथन 2 सही है।

2. राष्ट्र हित में भारत की संसद राज्य सूची के किसी भी विषय पर विधिक शक्ति प्राप्त कर लेती है यदि इसके लिये एक संकल्प

(a) लोक सभा द्वारा अपनी सम्पूर्ण सदस्यता के साधारण बहुमत से पारित कर लिया जाए।
(b) लोक सभा द्वारा अपनी सम्पूर्ण सदस्य संख्या के कम से-कम दो-तिहाई बहुमत से पारित कर लिया जाए।
(c) राज्य सभा द्वारा अपनी सम्पूर्ण सदस्यता के साधारण बहुमत से पारित कर लिया जाए।

(d) राज्य सभा द्वारा अपने उपस्थित एवं मत देने वाले सदस्यों के कम-से-कम दो-तिहाई बहुमत से पारित कर लिया जाए।

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः अनुच्छेद-249 के अनुसार राज्य सभा राज्य सूची के किसी विषय पर विधि बनाने का अधिकार एक वर्ष के लिये उपस्थित एवं मतदान करने वाले सदस्यों के दो-तिहाई बहुमत द्वारा पारित संकल्प से संसद को प्रदान कर सकती है।

2015

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. राज्य सभा में धन विधेयक को अस्वीकार करने या संशोधित करने की कोई शक्ति निहित नहीं है।

2. राज्य सभा अनुदानों की मांगों पर मतदान नहीं कर सकती है।

3. राज्य सभा में वार्षिक वित्तीय विवरण पर चर्चा नहीं हो सकती।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 1 और 2**

(c) केवल 2 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः राज्य सभा को न तो धन विधेयक को अस्वीकार करने की शक्ति है और न ही संशोधित करने की। राज्य सभा धन विधेयक को अधिकतम 14 दिनों तक रोक सकती है। अतः कथन (1) सही है।

- धन विधेयक को केवल लोक सभा में ही पुरःस्थापित किया जाता है। धन विधेयक के संबंध में विस्तृत प्रावधान भारतीय संविधान के अनुच्छेद-109 एवं 110 में दिये गए हैं।
- अनुदान की मांगों पर मतदान करने का अधिकार सिर्फ लोक सभा को है। अतः कथन (2) सही है।
- अनुदान संबंधी मांगें दो प्रकार की होती हैं। प्रथम प्रकार में वे अनुदान मांगें शामिल होती हैं जो संचित निधि पर भारित होती हैं। ऐसी अनुदान मांगों पर किसी सदन में कोई मतदान नहीं होता है। दूसरे प्रकार में वे अनुदान मांगें शामिल होती हैं जो संचित निधि पर भारित नहीं होती हैं। इस दूसरे प्रकार की अनुदान मांगों पर लोक सभा में मतदान होता है।
- वार्षिक वित्तीय विवरण (बजट) पर लोक सभा एवं राज्य सभा दोनों सदनों में चर्चा होती है। अनुच्छेद-112 में स्पष्ट किया गया है कि राष्ट्रपति प्रत्येक वित्तीय वर्ष के संबंध में संसद के दोनों सदनों के समक्ष भारत सरकार की उस वर्ष के लिये प्राक्कलित प्राप्तियों एवं व्यय का विवरण रखवाएगा जिसे वार्षिक वित्तीय विवरण कहा गया है। अतः कथन (3) असत्य है।

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. भारत में किसी राज्य की विधान परिषद् आकार में उस राज्य की विधान सभा के आधे से अधिक बड़ी हो सकती है।

2. किसी राज्य का राज्यपाल उस राज्य की विधान परिषद् के सभापति को नाम निर्देशित करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः भारतीय संविधान के अनुच्छेद-171(1) के द्वारा स्पष्ट किया गया है कि विधान परिषद् वाले राज्य की विधान परिषद् के सदस्यों की कुल संख्या उस राज्य की विधान सभा के सदस्यों की कुल संख्या के एक-तिहाई से अधिक नहीं होगी। अतः कथन (1) गलत है।

- राज्य का राज्यपाल उस राज्य की विधान परिषद् के सभापति को नाम निर्देशित नहीं करता है बल्कि अनुच्छेद-182 के तहत विधान परिषद् के सदस्य अपने में से सभापति एवं उपसभापति को चुनते हैं। अतः कथन (2) गलत है। इसलिये सही विकल्प (d) होगा।

3. भारत में संसदीय प्रणाली की सरकार है, क्योंकि-

(a) लोक सभा जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित होती है

(b) संसद संविधान में संशोधन कर सकती है

(c) राज्य सभा को भंग नहीं किया जा सकता है

(d) मंत्रिपरिषद्, लोक सभा के प्रति उत्तरदायी है

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः भारत में संसदीय प्रणाली की सरकार है क्योंकि मंत्रिपरिषद्, लोक सभा के प्रति उत्तरदायी है।

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद-75(3) में यह स्पष्ट किया गया है कि मंत्रिपरिषद् सामूहिक रूप से लोक सभा के प्रति उत्तरदायी होगी।
- भारत में संसदीय प्रणाली की सरकार का मॉडल ब्रिटेन से ग्रहण किया गया है।
- ज्ञातव्य है कि ब्रिटेन के वेस्टमिंस्टर (Westminster) संसदीय मॉडल में मंत्रिपरिषद् संसद के निचले सदन (हाउस ऑफ कॉमन्स) के प्रति उत्तरदायी होती है।

4. संघ की सरकार (यूनियन गवर्नमेंट) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. राजस्व विभाग, संसद में प्रस्तुत किये जाने वाले केंद्रीय बजट को तैयार करने के लिये उत्तरदायी है।

2. भारत की संसद के प्राधिकरण (ऑथराइज़ेशन) के बिना कोई धन भारत की संचित निधि से निकाला नहीं जा सकता।

3. लोक लेखा से किये जाने वाले सभी संवितरणों (डिस्बर्समेंट्स) के लिये भी भारत की संसद के प्राधिकरण की आवश्यकता होती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 2 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तरः (c)

व्याख्या: वित्त मंत्रालय का आर्थिक कार्य विभाग केन्द्रीय बजट को तैयार करता है न कि राजस्व विभाग। अत: कथन (1) गलत है।

भारत की संचित निधि से धन तभी निकाला जा सकता है जब संसद की अनुमति प्राप्त कर ली गई हो। अत: कथन (2) सही है।

लोक लेखा का विवरण भारतीय संविधान के अनुच्छेद-266(2) में दिया गया है। लोक लेखा से किये जाने वाले सभी प्रकार के व्ययों के लिये सरकार स्वतंत्र होती है तथा इसके लिये संसद की अनुमति नहीं लेनी पड़ती है। अत: कथन (3) गलत है।

5. जब संसद के दोनों सदनों की संयुक्त बैठक में कोई विधेयक निर्दिष्ट (रेफर) किया जाता है, तो इसे किसके द्वारा पारित किया जाना होता है?

(a) उपस्थित तथा मत देने वाले सदस्यों का साधारण बहुमत

(b) उपस्थित तथा मत देने वाले सदस्यों का तीन-चौथाई बहुमत

(c) सदनों का दो-तिहाई बहुमत

(d) सदनों का पूर्ण बहुमत

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: भारतीय संविधान के अनुच्छेद-108 में दोनों सदनों की संयुक्त बैठक का प्रावधान है। जब संसद के दोनों सदनों की संयुक्त बैठक में कोई विधेयक निर्दिष्ट किया जाता है तो इस विधेयक को दोनों सदनों के उपस्थित तथा मत देने वाले सदस्यों के साधारण बहुमत से पारित किया जाता है। अनुच्छेद-108(4)।

किसी विधेयक पर गतिरोध की स्थिति में दोनों सदनों की संयुक्त बैठक निम्न तीन परिस्थितियों में बुलाई जाती है-

1. यदि किसी विधेयक को दूसरे सदन के द्वारा अस्वीकृत कर दिया जाता है।
2. यदि सदन विधेयक में किये गए संशोधनों से सहमत न हो।
3. यदि दूसरे सदन ने विधेयक प्राप्ति के छ: महीने के बाद भी कोई कार्यवाही नहीं की है।

- संयुक्त बैठक का प्रावधान केवल साधारण विधेयक एवं वित्त विधेयक के बारे में ही उपलब्ध है। धन विधेयक एवं संविधान संशोधन विधेयक के संबंध में संयुक्त बैठक का कोई प्रावधान नहीं है।
- दोनों सदनों की संयुक्त बैठक की अध्यक्षता लोक सभा अध्यक्ष के द्वारा की जाती है। यदि लोक सभा अध्यक्ष अनुपस्थित है तो संयुक्त बैठक की अध्यक्षता लोक सभा का उपाध्यक्ष करता है। किंतु यदि लोक सभा के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष दोनों अनुपस्थित हों तो संयुक्त बैठक की अध्यक्षता राज्य सभा के उपसभापति के द्वारा की जाती है। संयुक्त बैठक का कोरम (गणपूर्ति) दोनों सदनों की कुल संख्या का दसवाँ भाग होता है।
- संयुक्त बैठक की समस्त कार्यवाही लोक सभा की प्रक्रिया के अनुसार होती है।

2014

1. भारत में अविश्वास प्रस्ताव के विषय में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. भारत के संविधान में किसी अविश्वास प्रस्ताव का कोई उल्लेख नहीं है।

2. अविश्वास प्रस्ताव केवल लोक सभा में ही पुर:स्थापित किया जा सकता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: कथन (1) सही है, क्योंकि भारत के संविधान में किसी अविश्वास प्रस्ताव का कोई उल्लेख नहीं है। इसी प्रकार कथन (2) भी सही है क्योंकि अविश्वास प्रस्ताव केवल लोक सभा में ही पुर:स्थापित किया जा सकता है।

- भारत में अविश्वास प्रस्ताव सरकार के विरुद्ध लाया जाता है। यदि अविश्वास प्रस्ताव पारित हो जाता है तो सरकार को इस्तीफा देना पड़ता है।
- केंद्र सरकार के मामले में अविश्वास प्रस्ताव को लोक सभा में लाया जाता है जबकि राज्य सरकारों के मामले में अविश्वास प्रस्ताव को संबंधित राज्य की विधान सभा में लाया जाता है।
- अविश्वास प्रस्ताव को लोक सभा/विधान सभा में ही लाने का कारण यह है कि मंत्रिपरिषद् लोक सभा/विधान सभा के प्रति सामूहिक रूप से उत्तरदायी होती है।
- केंद्र सरकार के मामले में अविश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिये कम-से-कम 50 लोक सभा सदस्यों के समर्थन की ज़रूरत होती है। जबकि अविश्वास प्रस्ताव को पारित कराने के लिये लोक सभा के सदस्यों के बहुमत की ज़रूरत होती है।

2. निम्नलिखित में से कौन-सी एक सबसे बड़ी संसदीय समिति है?

(a) लोक लेखा समिति

(b) प्राक्कलन समिति

(c) सरकारी उपक्रम समिति

(d) याचिका समिति (कमिटी ऑन पिटिशन्स)

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: उपर्युक्त समितियों में प्राक्कलन समिति सबसे बड़ी संसदीय समिति है क्योंकि इसमें 30 सदस्य होते हैं जबकि लोक लेखा समिति में 22 और याचिका समिति में दोनों सदनों की समितियों के सदस्यों को मिलाकर कुल 25 सदस्य (लोक सभा की याचिका समिति में 15 और राज्य सभा की याचिका समिति में 10 सदस्य) होते हैं।

- स्वतंत्रता के पश्चात् वर्ष 1950 में पहली बार प्राक्कलन समिति का गठन तत्कालीन वित्तमंत्री जॉन मथाई की सिफारिश पर किया गया। इस समिति में 30 सदस्य होते हैं एवं इसके सभी सदस्य

लोक सभा से चुने जाते हैं अर्थात् इसमें राज्य सभा का कोई प्रतिनिधित्व नहीं होता है। सदस्यों का चयन समानुपातिक प्रतिनिधित्व के आधार पर एकल हस्तांतरणीय मत द्वारा प्रतिवर्ष किया जाता है।

- वर्ष 1921 में पहली बार लोक लेखा समिति का गठन माण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड अधिनियम के तहत किया गया। इस समिति में कुल 22 सदस्य होते हैं। इन 22 सदस्यों में से 15 सदस्य लोक सभा से और 7 सदस्य राज्य सभा से होते हैं। सदस्यों का चयन प्रतिवर्ष संसद द्वारा समानुपातिक प्रतिनिधित्व के आधार पर एकल हस्तांतरणीय मत के द्वारा किया जाता है।
- वर्ष 1964 में वी.कृष्ण मेनन समिति की सिफारिश के आधार पर सरकारी उपक्रम समिति का पहली बार गठन किया गया। मूलतः इसमें 15 सदस्य थे किंतु वर्ष 1974 में सदस्यों की संख्या बढ़ाकर 22 कर दी गई। इन 22 सदस्यों में से 15 सदस्य लोक सभा से एवं 7 सदस्य राज्य सभा से होते हैं। इस समिति के सदस्यों का चयन प्रतिवर्ष समानुपातिक प्रतिनिधित्व के आधार पर एकल संक्रमणीय मत के द्वारा किया जाता है।
- याचिका समिति विधेयकों पर सार्वजनिक महत्त्व के मामलों पर दायर याचिकाओं एवं आवेदनों पर विचार करती है। दोनों सदनों, मसलन लोक सभा एवं राज्य सभा की अलग-अलग याचिका समिति होती है। लोक सभा की याचिका समिति में 15 सदस्य एवं राज्य सभा की याचिका समिति में 10 सदस्य होते हैं।

2013

1. यदि राज्य सभा किसी धन विधेयक में सारभूत संशोधन करती है, तो तत्पश्चात् क्या होगा?

(a) लोक सभा, राज्य सभा की अनुशंसाओं को स्वीकार करे या अस्वीकार करे, इस विधेयक पर आगे कार्यवाही कर सकती है।

(b) लोक सभा विधेयक पर आगे कोई विचार नहीं कर सकती।

(c) लोक सभा विधेयक को पुनर्विचार के लिये राज्य सभा को लौटा सकती है।

(d) राष्ट्रपति विधेयक को पारित करने के लिये संयुक्त बैठक आहूत कर सकता है।

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: संविधान के अनुच्छेद-109 के अनुसार धन विधेयक के संबंध में लोक सभा को अनन्य अधिकार प्रदान किया गया है।

- धन विधेयक के संबंध में राज्य सभा केवल सिफारिश कर सकती है। राज्य सभा के द्वारा की गई सिफारिश को स्वीकार करना लोक सभा के लिये ज़रूरी नहीं है।
- यदि धन विधेयक को लोक सभा के द्वारा पारित कर राज्य सभा के पास भेजा जाता है तो राज्य सभा के लिये यह ज़रूरी होता है कि वह धन विधेयक को अपनी सिफारिशों के साथ या सिफारिशों के बिना 14 दिनों के भीतर लोक सभा को वापस कर दे।
- यदि राज्य सभा के द्वारा उक्त 14 दिनों के भीतर धन विधेयक को लोक सभा को नहीं लौटाया जाता है तो धन विधेयक को दोनों सदनों के द्वारा उस रूप में पारित किया गया मान लिया जाता है जिस रूप में उसे लोक सभा के द्वारा पारित किया गया था।
- धन विधेयक के बारे में संसद की संयुक्त बैठक आहूत किये जाने का कोई प्रावधान नहीं है।

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. भारत के संविधान में संशोधन केवल लोक सभा में एक विधेयक की पुर:स्थापना द्वारा ही प्रारंभ किया जा सकता है।

2. यदि ऐसा संशोधन संविधान के संघीय चरित्र में परिवर्तन की मांग करता है, तो संशोधन का अनुसमर्थन भारत के सभी राज्यों के विधानमण्डल द्वारा किया जाना भी आवश्यक है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तर: (d)

व्याख्या:

- संविधान संशोधन विधेयक को किसी भी सदन में पेश किया जा सकता है। अत: कथन (1) गलत है।
- संविधान अनुच्छेद-368(2) के तहत ही यदि ऐसा संशोधन संविधान के संघीय चरित्र में परिवर्तन की मांग करता है तो संशोधन का अनुसमर्थन भारत के कम से कम आधे राज्यों के विधानमंडलों द्वारा किया जाना आवश्यक है, न कि सभी राज्यों के विधानमंडलों द्वारा। अत: कथन 2 भी गलत है।

3. भारत के संदर्भ में, संसदीय शासन-प्रणाली में निम्नलिखित में से कौन-सा/से सिद्धांत संस्थागत रूप में निहित है/हैं?

1. मंत्रिमंडल के सदस्य संसद के सदस्य होते हैं।

2. जब तक मंत्रियों को संसद का विश्वास प्राप्त रहता है तब तक ही वे अपने पद पर बने रहते हैं।

3. राज्य का अध्यक्ष ही मंत्रिमंडल का अध्यक्ष होता है।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 3**

(c) केवल 2 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: मंत्रिमंडल के सदस्यों के लिये यह ज़रूरी होता है कि वे लोक सभा या राज्य सभा में से किसी एक सदन के सदस्य हों। हालाँकि, मंत्री बनने वाला सदस्य 6 महीने तक किसी सदन की सदस्यता प्राप्त किये बगैर भी मंत्री बना रह सकता है। मंत्रिमंडल के सदस्य सामूहिक रूप से लोक सभा के प्रति उत्तरदायी होते हैं। चूँकि लोक सभा संसद का ही अंग है, अत: यदि विकल्प में लोक सभा नहीं है तो संसद वाला विकल्प ही सही माना जाएगा, जबकि मंत्रिमंडल का अध्यक्ष प्रधानमंत्री

होता है तथा राज्य का अध्यक्ष राष्ट्रपति होता है। यहाँ राज्य से तात्पर्य देश से है। अत: कथन (3) गलत है।

अनुच्छेद-75(3): मंत्रिपरिषद् लोक सभा के प्रति सामूहिक रूप से उत्तरदायी होगी।

अनुच्छेद-75(5): कोई मंत्री, जो निरंतर छ: मास की किसी अवधि तक संसद के किसी सदन का सदस्य नहीं है, उस अवधि की समाप्ति पर मंत्री नहीं रहेगा।

4. संसद, अंतर्राष्ट्रीय संधियों को भारत के किसी भाग अथवा संपूर्ण भारत में लागू करने के लिये, कोई भी कानून बना सकती है-

(a) सभी राज्यों की सहमति से

(b) बहुसंख्य राज्यों की सहमति से

(c) संबंधित राज्यों की सहमति से

(d) बिना किसी राज्य की सहमति से *सही उत्तर:* (d)

व्याख्या: भारत में संघात्मक व्यवस्था को अपनाया गया है। संघात्मक व्यवस्था से तात्पर्य संघ एवं राज्यों के बीच शक्तियों के विभाजन से है।

- किंतु देश की एकता एवं अखंडता को सुनिश्चित करने के लिये संसद को विशेष अधिकार भी प्रदान किये गए हैं। इन विशेष अधिकारों के प्रयोग के दौरान संसद को स्वयं निर्णय लेने के अधिकार होते हैं। अर्थात् विधि बनाते समय संसद को किसी राज्य से सहमति बनाने की कोई ज़रूरत नहीं होती है।
- यह विशेष अधिकार अनुच्छेद-253 के तहत संसद को प्रदान किया गया है। अनुच्छेद-253 के अनुसार संसद को किसी अन्य देश या देशों के साथ की गई किसी संधि, करार या अभिसमय अथवा किसी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, संगम या अन्य निकाय में किये गए किसी विनिश्चय के कार्यान्वयन के लिये भारत के संपूर्ण राज्य क्षेत्र या उसके किसी भाग के लिये विधि बनाने की शक्ति है।

5. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. राज्य सभा का सभापति तथा उपसभापति उस सदन के सदस्य नहीं होते।

2. जबकि राष्ट्रपति के निर्वाचन में संसद के दोनों सदनों के मनोनीत सदस्यों को मतदान का कोई अधिकार नहीं होता, उनको उप-राष्ट्रपति के निर्वाचन में मतदान का अधिकार होता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: अनुच्छेद-89(1) के अनुसार भारत का उप-राष्ट्रपति राज्य सभा का पदेन सभापति होगा। इसके तहत उप-राष्ट्रपति के लिये राज्य सभा की सदस्यता संबंधी कोई प्रावधान नहीं है जबकि राज्य सभा के उपसभापति के लिये यह ज़रूरी होता है कि वह राज्य सभा का सदस्य हो। अनुच्छेद-89(2) में स्पष्ट किया गया है कि राज्य सभा यथाशीघ्र अपने किसी सदस्य को अपना उपसभापति चुनेगी। अत: कथन (1) असत्य है।

अनुच्छेद-54(क) में स्पष्ट किया गया है कि राष्ट्रपति के निर्वाचन के लिये बनने वाले निर्वाचकगण में संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्य शामिल होंगे। जबकि अनुच्छेद-66(1) में उल्लेख किया गया है कि उप-राष्ट्रपति का निर्वाचन संसद के दोनों सदनों के सदस्यों से मिलकर बनने वाले निर्वाचकगण से होगा। संसद के दोनों सदनों से बनने वाले निर्वाचकगण में निर्वाचित एवं मनोनीत दोनों सदस्य शामिल होते हैं। अत: कथन (2) सही है।

6. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

लोक लेखा की संसदीय समिति

1. लोक सभा के अधिकतम 25 सदस्यों से गठित होती है।

2. सरकार के विनियोग तथा वित्त लेखाओं की जाँच करती है।

3. भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की रिपोर्ट की जाँच करती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 3 **(d) 1, 2 और 3** *सही उत्तर:* (b)

व्याख्या: लोक लेखा समिति में अधिकतम 22 सदस्य होते हैं। इन 22 सदस्यों में से 15 सदस्य लोक सभा तथा 7 सदस्य राज्य सभा से होते हैं। कोई मंत्री इसका सदस्य नहीं हो सकता है।

- वर्ष 1967 से लोक लेखा समिति का अध्यक्ष लोक सभा में विपक्षी दल का नेता होता है। इस समिति के अध्यक्ष की नियुक्ति लोक सभा अध्यक्ष के द्वारा की जाती है।
- लोक लेखा समिति भारत सरकार के विनियोग तथा वित्त लेखाओं की जाँच करती है तथा नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की रिपोर्ट की जाँच भी इसी के द्वारा की जाती है।

2012

1. लोक सभा अध्यक्ष के पद के विषय में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. वह राष्ट्रपति के प्रसादपर्यंत पद धारण करता है।

2. यह आवश्यक नहीं कि अपने निर्वाचन के समय वह सदन का सदस्य हो, परंतु उसे अपने निर्वाचन के बाद छ: माह के भीतर सदन का सदस्य हो जाना पड़ेगा।

3. यदि वह त्यागपत्र देना चाहे, तो उसे अपना त्यागपत्र उपाध्यक्ष को संबोधित करना होगा।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 3**

(c) 1, 2 और 3 **(d) कोई भी नहीं**

सही उत्तर: (b)

व्याख्याः लोक सभा का अध्यक्ष राष्ट्रपति के प्रसादपर्यंत पद धारण नहीं करता है बल्कि उसे जब तक लोक सभा का विश्वास हासिल रहता है वह तब तक अपने पद पर बना रहता है। अनुच्छेद-94(ग) में स्पष्ट किया गया है कि लोक सभा के तत्कालीन समस्त सदस्यों के बहुमत से पारित संकल्प के द्वारा उसे पद से हटाया जा सकेगा।

लोक सभा अध्यक्ष के लिये चयनित किये जाने वाले सदस्य के लिये यह ज़रूरी है कि वह लोक सभा के लिये निर्वाचित किया जा चुका हो। अनुच्छेद-93 में स्पष्ट किया गया है कि लोक सभा यथाशीघ्र अपने दो सदस्यों को अपना अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष चुनेगी।

अनुच्छेद-94(ख) में स्पष्ट किया गया है कि लोक सभा अध्यक्ष अपना इस्तीफा उपाध्यक्ष को सौंपता है।

2. निम्नलिखित विशेषाधिकारों में से कौन-से भारत के संविधान द्वारा राज्य सभा को प्रदत्त किये जाते हैं?

(a) राज्य का वर्तमान राज्यक्षेत्र परिवर्तित करना और राज्य का नाम परिवर्तित करना

(b) संसद को राज्य सूची में नियम बनाने और एक अथवा एकाधिक अखिल भारतीय सेवाओं का सृजन करने हेतु सशक्त बनाने के लिये एक प्रस्ताव पारित करना

(c) राष्ट्रपति की निर्वाचन-प्रक्रिया में संशोधन करना और राष्ट्रपति की सेवानिवृत्ति के पश्चात् उसकी पेंशन निर्धारित करना

(d) चुनाव आयोग के क्रियाकलापों का निर्धारण करना और चुनाव आयुक्तों की संख्या निर्धारित करना

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः राज्य सभा में राज्यों का प्रतिनिधित्व होता है। सभी राज्यों एवं दिल्ली तथा पुदुच्चेरी जैसे दो संघशासित प्रदेशों को राज्य सभा में प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद-249(1) के अनुसार यदि राज्य सभा ने उपस्थित और मत देने वाले सदस्यों में से कम-से-कम दो-तिहाई सदस्यों के द्वारा समर्थित संकल्प के द्वारा घोषित किया है कि राष्ट्रीय हित में यह आवश्यक या समीचीन है कि संसद राज्य सूची में शामिल किसी भी विषय पर कानून बनाए तो संसद के लिये उस विषय के संबंध में भारत के सम्पूर्ण राज्य क्षेत्र या उसके किसी भाग के लिये विधि बनाना कानूनी रूप से वैध होगा।

अनुच्छेद-312(1) के अधीन यदि राज्य सभा ने उपस्थित और मत देने वाले सदस्यों में से कम-से-कम दो-तिहाई सदस्यों द्वारा समर्थित संकल्प के द्वारा यह घोषित किया है कि राष्ट्रीय हित में ऐसा करना आवश्यक है तो संसद विधि द्वारा संघशासित प्रदेशों और राज्यों के लिये सम्मिलित एक या अधिक अखिल भारतीय सेवाओं के सृजन के लिये उपबंध कर सकेगी। इसके तहत अखिल भारतीय न्यायिक सेवा भी शामिल है।

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. संघ राज्यक्षेत्रों का राज्य सभा में प्रतिनिधित्व नहीं होता।

2. निर्वाचन झगड़ों का निर्णय करना मुख्य निर्वाचन आयुक्त के अधिकार-क्षेत्र में है।

3. भारत के संविधान के अनुसार, संसद में केवल लोक सभा और राज्य सभा होती हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 | **(b) 2 और 3**
(c) 1 और 3 | **(d) कोई भी नहीं**

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः उपर्युक्त कथनों में से कोई भी कथन सही नहीं है। वर्तमान में देश के आठ संघ राज्य क्षेत्रों में से सिर्फ दो संघ राज्यों, दिल्ली एवं पुदुच्चेरी को राज्य सभा में प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया है। दिल्ली के लिये 3 सीटें जबकि पुदुच्चेरी के लिये 1 सीट निर्धारित की गई है। अतः कथन (1) असत्य है। निर्वाचन से संबंधित विवादों का निपटारा करना न्यायालय की ज़िम्मेदारी के अंतर्गत आता है। अतः कथन (2) भी असत्य है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद-79 में स्पष्टतः उल्लिखित किया गया है कि संघ के लिये एक संसद होगी जो राष्ट्रपति और दो सदनों (राज्य सभा और लोक सभा) से मिलकर बनेगी। अतः कथन (3) भी असत्य है।

4. लोक सभा और राज्य सभा के बीच गतिरोध की किस स्थिति/किन स्थितियों में संसद की संयुक्त बैठक बुलाई जाती है?

1. साधारण विधि निर्माण को पारित करने की स्थिति में

2. धन विधेयक को पारित करने की स्थिति में

3. संविधान संशोधन विधेयक को पारित करने की स्थिति में

निम्नलिखित कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 | **(b) केवल 2 और 3**
(c) केवल 1 और 3 | **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः भारतीय संविधान के अनुच्छेद-108 में स्पष्टतः उल्लेख किया गया है कि यदि साधारण विधि निर्माण की स्थिति में दोनों सदनों के बीच गतिरोध उत्पन्न हो जाता है तो उस गतिरोध को दूर करने के लिये दोनों सदनों की संयुक्त बैठक बुलाई जा सकती है।

- किंतु अनुच्छेद-108(1)(ग) के परंतुक में स्पष्टतः उल्लेख कर दिया गया है कि संयुक्त बैठक धन विधेयक के मामले में लोक सभा को विशेष अधिकार प्राप्त है। अर्थात् जब लोक सभा के द्वारा पारित किये गए धन विधेयक को राज्य सभा में भेजा जाता है तो राज्य सभा के लिये चौदह दिनों के भीतर धन विधेयक को अपनी सिफारिशों के साथ या बिना, लोक सभा को लौटाना होता है। राज्य सभा की सिफारिशों को स्वीकार करने के लिये लोक सभा बाध्य नहीं होती है। यदि उक्त चौदह दिनों की अवधि के भीतर राज्य सभा धन विधेयक को वापस नहीं लौटाती है तो धन विधेयक दोनों सदनों के द्वारा पारित मान लिया जाता है।

यदि किसी संविधान संशोधन विधेयक को पारित करने की स्थिति में दोनों सदनों के बीच कोई गतिरोध उत्पन्न हो जाए तो दोनों सदनों की संयुक्त बैठक बुलाने का कोई प्रावधान नहीं है।

5. निम्नलिखित में से कौन-सी विधियाँ भारत के लोक वित्त पर संसदीय नियंत्रण रखने के काम आती हैं?

1. संसद के सम्मुख वार्षिक वित्तीय विवरण का प्रस्तुत किया जाना

2. विनियोजन विधेयक के पारित होने के बाद ही भारत की संचित निधि से मुद्रा निकाल पाना

3. अनुपूरक अनुदानों तथा लेखानुदान का प्रावधान

4. संसदीय बजट कार्यालय द्वारा समष्टिगत आर्थिक पूर्वानुमानों तथा व्यय हेतु सरकार के कार्यक्रम का एक नियतकालिक अथवा कम-से-कम मध्यवर्षीय पुनरावलोकन

5. संसद में वित्त विधेयक का प्रस्तुत किया जाना

निम्नलिखित कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1, 2, 3 और 5 **(b) केवल 1, 2 और 4**

(c) केवल 3, 4 और 5 **(d) 1, 2, 3, 4 और 5**

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: लोक वित्त पर नियंत्रण रखने के लिये अनुच्छेद-112 में प्रावधान किया गया है कि राष्ट्रपति प्रत्येक वित्तीय वर्ष के संदर्भ में संसद के दोनों सदनों के समक्ष 'वार्षिक वित्तीय विवरण' प्रस्तुत करवाएगा।

- भारत की संचित निधि से राशि तभी निकाली जा सकती है जब इसके लिये विनियोग विधेयक को पारित करा लिया जाए।
- अनुपूरक अनुदानों एवं लेखानुदान के माध्यम से भी लोक वित्त पर प्रभावी नियंत्रण रखा जाता है।
- अनुपूरक अनुदानों की मांग को उस समय सरकार के द्वारा लोक सभा में लाया जाता है जब कभी वित्तीय वर्ष की समाप्ति से पहले सरकार को यह अनुभव होता है कि पहले स्वीकृत किया गया अनुदान उस प्रयोजन के लिये अपर्याप्त है।
- इसी प्रकार, जब एक अप्रैल से पूर्व सरकार विनियोग विधेयक पारित नहीं करा पाती तो सरकार लेखानुदान के माध्यम से तब तक के खर्च का प्रबंध करती है, जब तक कि पुन: विनियोग विधेयक न पारित करा लिया जाए। ऐसा सामान्यत: चुनावी वर्ष या लोक सभा का विघटन होने की स्थिति में होता है।
- संसदीय बजट कार्यालय का प्रावधान भारत में नहीं है।
- संसद में वित्त विधेयक के द्वारा भी लोक वित्त पर नियंत्रण रखा जाता है। किसी वित्तीय वर्ष के संबंध में सरकार की वित्तीय प्रस्थापनाओं को प्रभावित करने के लिये एक वित्त विधेयक वित्त मंत्री के बजट भाषण के तुरंत बाद संसद में पुर:स्थापित किया जाता है। ज्ञातव्य है कि यह भी एक धन विधेयक है और इसे बजट सत्र में विनियोग विधेयकों के साथ-साथ पारित किया जाता है।

6. भारतीय संसद में स्थगन प्रस्ताव लाने का क्या उद्देश्य है?

(a) सार्वजनिक महत्त्व के निश्चित अत्यावश्यक मुद्दे पर बहस करने हेतु

(b) विपक्षी सदस्यों के मंत्रियों से सूचना प्राप्त करने हेतु

(c) किसी अनुदान की मांग में एक निश्चित मात्रा में कटौती करने हेतु

(d) कुछ सदस्यों के हिंसक अथवा अनुचित व्यवहार पर रोक लगाने के लिये कार्यवाही स्थगित करने हेतु

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: जब कभी सार्वजनिक महत्त्व का कोई प्रश्न उपस्थित होता है तो संसद का कोई भी सदस्य यह प्रस्ताव रख सकता है कि उस विषय पर विचार करने के लिये सदन का नियमित कार्य रोक दिया जाए। स्थगन प्रस्ताव को सदन के अध्यक्ष की अनुमति से ही सदन में प्रस्तावित किया जा सकता है अन्यथा नहीं। सामान्यत: स्थगन प्रस्ताव को सायं 4 बजे ही लाया जाता है।

2011

1. भारत की संचित निधि से निधि निकालने के लिये निम्नलिखित में से किसका अनुमोदन अनिवार्य है?

(a) भारत के राष्ट्रपति

(b) भारत की संसद

(c) भारत के प्रधानमंत्री

(d) संघीय वित्त मंत्री

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: संचित निधि से धन निकालने के लिये संसद से विनियोग विधेयक पारित कराना ज़रूरी होता है।

- अनुदान की मांगों पर मतदान होने और उन्हें पारित करने के शीघ्र बाद लोक सभा में विनियोग विधेयक पुर:स्थापित किये जाते हैं। विनियोग विधेयकों में उस रकम का भी उल्लेख होता है जिसे भारत की संचित निधि में से निकाला जाना है।
- भारतीय संविधान के अनुच्छेद-114 के अनुसार, संचित निधि में से कोई भी राशि विनियोग विधेयक के द्वारा ही निकाली जा सकेगी। विनियोग विधेयक के अलावा अन्य कोई उपाय नहीं है जिसके द्वारा संचित निधि से धन निकाला जा सके।
- यह उल्लेखनीय तथ्य है कि प्रत्येक विनियोग विधेयक धन विधेयक होता है।

संचित निधि: संविधान के अनुच्छेद-266(1) में भारत की संचित निधि एवं राज्य की संचित निधि के बारे में उल्लेख किया गया है।

- भारत सरकार के द्वारा प्राप्त सभी प्रकार के करों, मसलन व्यक्तिगत आयकर, निगम आयकर, सीमा शुल्क एवं उत्पाद शुल्क के साथ-साथ गैर-कर राजस्व (लाइसेंस शुल्क तथा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के लाभों) तथा सरकार के द्वारा ट्रेज़री बिल जारी करके लिया गया ऋण, आंतरिक एवं बाह्य ऋण तथा अन्य समस्त धनराशि जो दिये गए ऋण की अदायगी से भारत सरकार को प्राप्त होती है, उन सभी धनराशियों से मिलकर भारत की संचित निधि बनती है।

2. यदि वार्षिक संघीय बजट लोक सभा द्वारा पारित नहीं होता, तो
(a) बजट में संशोधन कर यह दुबारा पेश किया जाता है
(b) सुझाव हेतु बजट राज्य सभा को भेज दिया जाता है
(c) संघीय वित्त मंत्री से त्यागपत्र देने के लिये कहा जाता है
(d) प्रधानमंत्री अपनी मंत्रिपरिषद् का त्याग-पत्र पेश कर देता है

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: प्रत्येक वित्तीय वर्ष के संदर्भ में राष्ट्रपति के द्वारा संसद के दोनों सदनों में वार्षिक वित्तीय विवरण रखवाया जाता है। यह वार्षिक वित्तीय विवरण केंद्र सरकार के वित्त मंत्री के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

चूँकि, सरकार का निर्माण उसी दल या दलों के गठबंधन के द्वारा किया जाता है जिसे लोक सभा में पूर्ण बहुमत प्राप्त होता है, अत: यदि वार्षिक संघीय बजट लोक सभा के द्वारा पारित नहीं किया जाता है तो इसका तात्पर्य यह होता है कि सरकार का लोक सभा में बहुमत नहीं रह गया है। लोक सभा में बहुमत नहीं रह जाने पर प्रधानमंत्री को अपनी मंत्रिपरिषद् का त्याग-पत्र प्रस्तुत करना पड़ता है।

3. करों और सरकारी कामकाज के निर्वाह में हुई अन्य प्राप्तियों से संघीय सरकार को प्राप्त हुआ समूचा राजस्व जमा होता है-
(a) भारत की आकस्मिकता निधि में
(b) लोक लेखे में
(c) भारत की संचित निधि में
(d) निक्षेप तथा अग्रिम निधि में

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: करों और सरकारी कामकाज के निर्वाह में हुई अन्य प्राप्तियों से संघीय सरकार को प्राप्त हुआ समूचा राजस्व भारत की संचित निधि में जमा होता है। ज्ञातव्य है कि संविधान के अनुच्छेद&266(1) में भारत की संचित निधि एवं राज्य की संचित निधि के बारे में उल्लेख किया गया है।

कार्यपालिका

2025

1. भारत के राष्ट्रपति की क्षमा प्रदान करने की शक्ति के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
I. राष्ट्रपति द्वारा इस शक्ति का प्रयोग सीमित न्यायिक पुनर्विलोकन के अधीन लाया जा सकता है।
II. राष्ट्रपति इस शक्ति का प्रयोग केंद्र सरकार की सलाह के बगैर कर सकता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/ कौन-से सही है /हैं?
(a) केवल I
(b) केवल II
(c) I और II दोनों
(d) न तो I और न ही II

सही उत्तर: (a)

व्याख्या:

- भारत के राष्ट्रपति देश के संवैधानिक प्रमुख होते हैं। भारतीय संविधान, 1950 (COI) राष्ट्रपति को विधायी, कार्यकारी और न्यायिक शक्तियों से सशक्त करता है। अनुच्छेद-72 राष्ट्रपति की न्यायिक शक्ति से संबंधित है, जिसे राष्ट्रपति की क्षमादान शक्ति भी कहा जाता है।
- भारतीय संविधान के अनुच्छेद-72 के अंतर्गत राष्ट्रपति की क्षमादान शक्ति पूर्णत: निरंकुश नहीं है, बल्कि यह विशिष्ट मामलों में न्यायिक पुनरवलोकन (judicial review) के अधीन हो सकती है। ईपुरु सुधाकर बनाम आंध्र प्रदेश मामले के अनुसार, यदि राष्ट्रपति यह शक्ति मनमाने ढंग से प्रयोग करें तो यह न्यायिक समीक्षा के अंतर्गत आ सकती है। **अतः कथन I सही है।**
- भारतीय संविधान के अनुच्छेद-74 के अनुसार, राष्ट्रपति सरकार से स्वतंत्र रूप से क्षमादान की शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकते। इस अनुच्छेद-के अनुसार, प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में एक मंत्रिपरिषद होगी, जो राष्ट्रपति की सहायता और सलाह के लिये कार्य करेगी, राष्ट्रपति को अपने कार्यों के निष्पादन में इस सलाह के अनुसार ही कार्य करना होगा। **अतः कथन II सही नहीं है। अतः विकल्प (a) सही है।**

2. भारतीय राज्य-व्यवस्था के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
I. अध्यादेश किसी केंद्रीय अधिनियम को संशोधित कर सकता है।
II. अध्यादेश किसी मूल अधिकार को न्यून कर सकता है।
III. अध्यादेश किसी पिछली तारीख से प्रभावी हो सकता है।
उपर्युक्त कथनों में कौन-कौन से सही हैं?
(a) केवल I और II **(b) केवल II और III**
(c) केवल I और III **(d) I, II और III**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या:

- अनुच्छेद-123 के तहत राष्ट्रपति को संसद के सत्र में न होने के दौरान अध्यादेश जारी करने का अधिकार प्राप्त है। राष्ट्रपति केवल तभी अध्यादेश जारी कर सकते हैं जब संसद का कोई एक सदन या दोनों सदन सत्र में न हों, क्योंकि विधायी प्रक्रिया के लिये दोनों सदनों की स्वीकृति आवश्यक होती है।
- अध्यादेश का बल और प्रभाव संसद द्वारा पारित अधिनियम के समान होता है। अत: राष्ट्रपति किसी मौजूदा केंद्रीय या राज्य अधिनियम में संशोधन या उसे रद्द करने के लिये भी अध्यादेश जारी कर सकते हैं। **अतः कथन I सही है।**
- अध्यादेश, अन्य किसी अधिनियम की तरह, पिछली तारीख से प्रभावी हो सकता है। उदाहरण: शत्रु संपत्ति (संशोधन और विधिमान्यकरण) अध्यादेश, 2016 को 7 जनवरी, 2016 को जारी किया गया था, ताकि शत्रु संपत्ति अधिनियम, 1968 में संशोधन किया जा सके। यह अध्यादेश बाद में शत्रु संपत्ति (संशोधन और विधिमान्यकरण)

अधिनियम, 2017 द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया, जिसमें अध्यादेश को पिछली तारीख से प्रभावी बनाया गया। **अतः कथन III सही है।**

- हालाँकि संसद के किसी भी सामान्य अधिनियम की तरह ही अध्यादेश भी संवैधानिक सीमाओं से बंधा होता है। अध्यादेश द्वारा संविधान में प्रदत्त मूल अधिकारों को न्यून नहीं किया जा सकता है और न ही उन्हें छीना जा सकता है। **अतः कथन II सही नहीं है।**
- संविधान के अनुच्छेद-13 के अनुसार अध्यादेश को "विधि" की परिभाषा में शामिल किया गया है। **अतः विकल्प (c) सही है।**

3. निम्नलिखित कथन पर विचार कीजियेः

I. भारत के संविधान में स्पष्ट रूप से उल्लिखित है कि कतिपय बातों में किसी राज्य का राज्यपाल अपने विवेकानुसार कार्य करता है।

II. भारत का राष्ट्रपति, अपने आप, किसी राज्य विधान-मंडल द्वारा पारित विधेयक को भले ही वह संबंधित राज्य के राज्यपाल द्वारा न भेजा गया हो, अपने विचार के लिये आरक्षित कर सकता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल I **(b) केवल II**

(c) I और II दोनों **(d) न तो I और न ही II**

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः

- संविधान कुछ विशेष परिस्थितियों में राज्यपाल को स्पष्ट रूप से विवेकाधीन शक्तियाँ प्रदान करता है।
- उदाहरणस्वरूप अनुच्छेद-371A(1)(b) (नगालैंड), अनुच्छेद-371H(a) (अरुणाचल प्रदेश) तथा अनुच्छेद-200 के अंतर्गत राष्ट्रपति के विचारार्थ किसी विधेयक को सुरक्षित रखने जैसे मामलों में, राज्यपाल व्यक्तिगत विवेक से कार्य कर सकते हैं। **अतः कथन I सही है।**
- राष्ट्रपति स्वयं किसी राज्य विधान-मंडल द्वारा पारित विधेयक को आरक्षित नहीं कर सकते। अनुच्छेद-200 के तहत केवल राज्यपाल ही कुछ विशेष प्रकार के विधेयकों को राष्ट्रपति के विचारार्थ आरक्षित कर सकता है। राष्ट्रपति केवल तभी कार्यवाही करते हैं जब राज्यपाल द्वारा ऐसा आरक्षण किया जाता है। **अतः कथन II सही नहीं है। अतः विकल्प (a) सही है। अतः कथन (c) सही नहीं है।**

4. भारतीय राज्य-व्यवस्था के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजियेः

I. किसी राज्य का राज्यपाल अपने पद की शक्तियों और दायित्वों के प्रयोग तथा निष्पादन के लिये किसी न्यायालय के प्रति उत्तरदायी नहीं है।

II. राज्यपाल के विरुद्ध उसकी पदावधि के दौरान कोई दांडिक कार्यवाही संस्थित नहीं की जाएगी या जारी नहीं रखी जाएगी।

III. किसी राज्य विधान-मंडल के सदस्य सदन के अंदर कही गई किसी भी बात के लिये किसी भी न्यायालय में कार्यवाही के लिये उत्तरदायी नहीं हैं।

उपर्युक्त कथनों में कौन-कौन से सही हैं?

(a) केवल I और II **(b) केवल II और III**

(c) केवल I और III **(d) I, II और III**

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद-361(1) के अनुसार, राज्यपाल अपने पद के अधिकारों और कर्त्तव्यों के प्रयोग तथा निष्पादन के लिये अथवा उन अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के प्रयोग में किये गए किसी भी कार्य के लिये किसी न्यायालय के प्रति उत्तरदायी नहीं होता है। **अतः कथन I सही है।**
- अनुच्छेद-361(2) में कहा गया है कि राज्यपाल के पदावधि के दौरान उनके विरुद्ध कोई दांडिक/आपराधिक कार्यवाही संस्थित या जारी नहीं की जा सकती है। साथ ही, किसी भी राज्यपाल को उसके कार्यकाल के दौरान गिरफ्तार नहीं किया जा सकता या कारावास नहीं दिया जा सकता। **अतः कथन II सही है।**
- अनुच्छेद-194(2) के अनुसार, राज्य विधान-मंडल के किसी भी सदस्य पर विधानसभा या उसकी समितियों में कुछ कहने या मतदान करने के लिये किसी भी न्यायालय में कोई कार्यवाही नहीं की जा सकती। यह विशेषाधिकार (संसदीय विशेषाधिकार) राज्य विधायकों को भी प्राप्त है। **अतः कथन III सही है। अतः विकल्प (d) सही है।**

2024

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजियेः

1. वह राज्य का राज्यपाल है जो उस राज्य के किसी समुदाय को अनुसूचित जनजाति के रूप में मान्यता देता है और घोषित करता है।

2. किसी राज्य में अनुसूचित जनजाति के रूप में घोषित किसी समुदाय के लिये यह आवश्यक नहीं है कि दूसरे राज्य में भी ऐसा हो।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1, न ही 2**

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः अनुसूचित जनजातियों की परिभाषाः

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद-366 (25) में निर्धारित किया गया है कि अनुसूचित जनजातियों से तात्पर्य ऐसी जनजातियों या जनजातीय समुदायों से है जिन्हें संविधान के अनुच्छेद-342 के अंतर्गत अनुसूचित जनजाति माना गया है।
- **अनुच्छेद-342(1):** किसी भी राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के संबंध में **राष्ट्रपति (राज्य के मामले में राज्यपाल के परामर्श के बाद)** उस राज्य/ **संघ राज्य क्षेत्र में जनजातियों/आदिवासी समुदायों/जनजातियों के भाग या समूहों/आदिवासी समुदायों को अनुसूचित जनजाति के रूप में निर्दिष्ट** कर सकते हैं। **अतः कथन 1 सही नहीं है।**

- अनुसूचित जनजातियों की सूची **राज्य/संघ राज्य क्षेत्र विशेष** के लिये है और किसी राज्य में अनुसूचित जनजाति के रूप में घोषित समुदाय को **दूसरे राज्य/संघ राज्य क्षेत्र में भी अनुसूचित जनजाति घोषित किया जाना आवश्यक नहीं** है। **अतः कथन 2 सही है।**

अतः विकल्प (b) सही है।

2. केंद्रीय बजट (यूनियन बजट) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. प्रधानमंत्री की ओर से केंद्रीय वित्त मंत्री संसद के दोनों सदनों के समक्ष वार्षिक वित्तीय विवरण रखते हैं।

2. केंद्रीय (यूनियन) स्तर पर, भारत के राष्ट्रपति की अनुशंसा के बिना अनुदानों की मांग नहीं की जा सकती।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं?

(a) केवल 1	**(b) केवल 2**
(c) 1 और 2 दोनों	**(d) न तो 1, न ही 2**

सही उत्तरः (c)

नोटः यूपीएससी के अनुसार है जबकि अन्य मानक पुस्तकों के अनुसार उत्तर (b) है।

व्याख्याः राष्ट्रपति की ओर से केंद्रीय वित्त मंत्री संसद के दोनों सदनों के समक्ष वार्षिक वित्तीय विवरण प्रस्तुत करते हैं। **अतः कथन 1 सही नहीं है।**

- भारतीय संविधान के **अनुच्छेद-112** के अनुसार, राष्ट्रपति प्रत्येक वित्तीय वर्ष के संबंध में संसद के दोनों सदनों के समक्ष उस वर्ष के लिये भारत सरकार की प्राक्कलित प्राप्तियों और व्यय का विवरण रखवाएगा, जिसे "वार्षिक वित्तीय विवरण" कहा गया है।
- भारतीय संविधान के **अनुच्छेद-113** के अनुसार, संघ स्तर पर भारत के राष्ट्रपति की सिफारिश के बिना अनुदान की कोई मांग नहीं की जा सकती। **अतः कथन 2 सही है। अतः विकल्प (c) सही है।**

2023

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजियेः

1. यदि भारत के राष्ट्रपति का निर्वाचन भारत के उच्चतम न्यायालय द्वारा शून्य घोषित कर दिया जाता है, तो ऐसे विनिश्चय की तिथि से पूर्व राष्ट्रपति के पद के कर्तव्यों के निष्पादन में राष्ट्रपति के द्वारा किये गए सभी कृत्य अविधिमान्य हो जाते हैं।

2. भारत के राष्ट्रपति के पद के लिये निर्वाचन इस आधार पर मुल्तवी किया जा सकता है कि कुछ विधान-सभाएँ विघटित हो गई हैं और उनके निर्वाचन अभी होने शेष हैं।

3. कोई विधेयक भारत के राष्ट्रपति को प्रस्तुत किये जाने पर, संविधान द्वारा विहित की गई समय-सीमा के अंदर राष्ट्रपति को अपनी अनुमति देनी होती है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक	**(b) केवल दो**
(c) सभी तीन	**(d) कोई भी नहीं**

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः

- यदि राष्ट्रपति या उपराष्ट्रपति के रूप में किसी व्यक्ति का निर्वाचन उच्चतम न्यायालय द्वारा शून्य घोषित किया जाता है तो उसके द्वारा राष्ट्रपति या उपराष्ट्रपति के कार्यालय की शक्तियों और कर्तव्यों के प्रयोग एवं किये गए कृत्य, उच्चतम न्यायालय के निर्णय की तारीख से पूर्व उस घोषणा के कारण अविधिमान्य नहीं होते हैं। **अतः कथन 1 सही नहीं है।**
- जब विधानसभा भंग हो जाती है तो सदस्य राष्ट्रपति निर्वाचन में मतदान करने के योग्य नहीं रह जाते हैं, भले ही राष्ट्रपति निर्वाचन से पूर्व विघटित विधानसभा के नवीन निर्वाचन न हुए हों। इस प्रकार राष्ट्रपति का निर्वाचन इस आधार पर स्थगित नहीं किया जाएगा कि कुछ विधानसभाएँ भंग कर दी गई हैं। **अतः कथन 2 सही नहीं है।**
- **विधेयकों पर सहमतिः** जब कोई विधेयक संसद के सदनों द्वारा पारित कर दिया जाता है, तो उसे राष्ट्रपति के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है ऐसे में राष्ट्रपति या तो यह घोषणा करेगा कि वह विधेयक पर अपनी सहमति देता है या वह उस पर सहमति रोक लेता है (बशर्ते यह विधेयक धन विधेयक न हो)। राष्ट्रपति, विधेयक पेश करने के बाद सदनों को इस अनुरोध के साथ लौटा सकता है कि वे विधेयक या उसके किसी निर्दिष्ट प्रावधान पर पुनर्विचार करेंगे एवं विशेष रूप से विधेयक पर विचार करेंगे। जब कोई विधेयक इस प्रकार लौटाया जाता है तो सदन तदनुसार विधेयक पर पुनर्विचार करेगा एवं यदि विधेयक सदनों द्वारा संशोधन के साथ या बिना संशोधन के फिर से पारित किया जाता तो राष्ट्रपति वित्तीय मामलों से संबंधित मामलों में अपनी सहमति नहीं रोकेंगे। **अतः कथन 3 सही नहीं है। अतः विकल्प (d) सही है।**

2. भारत के राष्ट्रपति के निर्वाचन के बारे में, निम्निलिखित कथनों पर विचार कीजियेः

1. संसद के दोनों में से किसी भी सदन या राज्यों की विधान-सभाओं में नामनिर्दिष्ट किये गए सदस्य निर्वाचक मंडल में शामिल किये जाने के लिये भी अर्ह है।

2. निर्वाच्य विधान-सभा सीटें जितनी अधिक होती हैं, उस राज्य के प्रत्येक एम.एल.ए. के वोट का मान भी उतना ही अधिक होता है।

3. मध्य प्रदेश के प्रत्येक एम.एल.ए. के वोट का मान, केरल के प्रत्येक एम.एल.ए. के वोट के मान से अधिक है।

4. पुदुच्चेरी के प्रत्येक एम.एल.ए. के वोट का मान, अरुणाचल प्रदेश के प्रत्येक एम.एल.ए. के वोट के मान से अधिक है, क्योंकि अरुणाचल प्रदेश की तुलना में पुदुच्चेरी में कुल जनसंख्या का निर्वाच्य सीटों की कुल संख्या से अनुपात अधिक है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही है?

(a) केवल एक	**(b) केवल दो**
(c) केवल तीन	**(d) सभी चार**

सही उत्तरः (a)

व्याख्या: विधायकों के वोट का मान अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग होगा क्योंकि ऐसे प्रत्येक वोट के मान की गणना नीचे बताई गई प्रक्रिया द्वारा की जाती है। हालाँकि, सभी सांसदों के वोट का मान एक समान होता है।

S.No.	NAME OF STATE	NUMBER OF ASSEMBLY SEATS (ELECTIVE)	POPULATION 1971 CENSUS)	VALUE OF VOTE OF EACH M.L.A.	TOTAL VALUE OF VOTES FOR THE STATE
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
1.	ANDHRA PRADESH	175	27800586	159	159 X 175 = 27825
2.	ARUNACHAL PRADESH	60	467511	8	008 X 060 = 480
3.	ASSAM	126	14625152	116	116 X 126 = 14616
4.	BIHAR	243	42126236	173	173 X 243 = 42039
5.	CHHATTISGARH	90	11637494	129	129 X 090 = 11610
6.	GOA	40	795120	20	020 X 040 = 800
7.	GUJARAT	182	26697475	147	147 X 182 = 26754
8.	HARYANA	90	10036808	112	112 X 090 = 10080
9.	HIMACHAL PRADESH	68	3460434	51	051 X 068 = 3468
10.	JAMMU & KASHMIR*	87	6300000	72	072 X 087 = 6264
11.	JHARKHAND	81	14227133	176	176 X 081 = 14256
12.	KARNATAKA	224	29299014	131	131 X 224 = 29344
13.	KERALA	140	21347375	152	152 X 140 = 21280
14.	MADHYA PRADESH	230	30016625	131	131 X 230 = 30130
15.	MAHARASHTRA	288	50412235	175	175 X 288 = 50400
16.	MANIPUR	60	1072753	18	018 X 060 = 1080
17.	MEGHALAYA	60	1011699	17	017 X 060 = 1020
18.	MIZORAM	40	332390	8	008 X 040 = 320
19.	NAGALAND	60	516449	9	009 X 060 = 540
20.	ODISHA	147	21944615	149	149 X 147 = 21903
21.	PUNJAB	117	13551060	116	116 X 117 = 13572
22.	RAJASTHAN	200	25765806	129	129 X 200 = 25800
23.	SIKKIM	32	209843	7	007 X 032 = 224
24.	TAMIL NADU	234	41199168	176	176 X 234 = 41184
25.	TELANGANA	119	15702122	132	132 X 119 = 15708
26.	TRIPURA	60	1556342	26	026 X 060 = 1560
27.	UTTARAKHAND	70	4491239	64	064 X 070 = 4480
28.	UTTAR PRADESH	403	83849905	208	208 X 403 = 83824
29.	WEST BENGAL	294	44312011	151	151 X 294 = 44394
30.	NCT OF DELHI	70	4065698	58	058 X 070 = 4060
31.	PUDUCHERRY	30	471707	16	016 X 030 = 480
	TOTAL	**4120**	**549302005**		**= 549495**

* Constitution (Application to the Jammu & Kashmir) Order

- **कथन 1 सही नहीं है।**
- **कथन 2 और 3 सही नहीं हैं।**
- पुदुच्चेरी में कुल निर्वाच्य सीटों की कुल जनसंख्या का अनुपात = 471707 / 30 = **15,723.56**
  - अरुणाचल प्रदेश में कुल निर्वाचित सीटों की कुल जनसंख्या का अनुपात = 467511/60 = **7,791.85**
  - पुदुच्चेरी के प्रत्येक एम.एल.ए. के वोट का मान अरुणाचल प्रदेश की तुलना में अधिक है क्योंकि पुदुच्चेरी में कुल निर्वाच्य सीटों की कुल संख्या का अनुपात अरुणाचल प्रदेश की तुलना में अधिक है। **अतः कथन 4 सही है। अतः विकल्प (a) सही है।**

2022

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. भारत का संविधान मंत्रियों को चार श्रेणियों, अर्थात् कैबिनेट मंत्री, स्वतंत्र प्रभार वाले राज्यमंत्री, राज्यमंत्री और उपमंत्री, में वर्गीकृत करता है।

2. संघ सरकार में मंत्रियों की कुल संख्या, प्रधान मंत्री को मिला कर, लोक सभा के कुल सदस्यों के 15% से अधिक नहीं होनी चाहिए।

उपर्युक्त कथनों में कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1, न ही 2**

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या:

- मंत्रिपरिषद में मंत्रियों की तीन श्रेणियाँ होती हैं- कैबिनट मंत्री, राज्य मंत्री, उपमंत्री। उनके बीच का अंतर है, उनका पदक्रम, उनका वेतन तथा राजनैतिक महत्त्व। **अतः कथन 1 सही नही है।**
- "प्रधानमंत्री सहित मंत्रिपरिषद के सदस्यों की कुल संख्या, लोकसभा की कुल संख्या की 15 प्रतिशत से अधिक नही होगी" इस उपबंध का समावेश 91वें संविधान संसोधन विधेयक 2003 द्वारा किया गया था। **अतः कथन 2 सही है। अतः विकल्प (b) सही है।**

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. भारत का महान्यायवादी और भारत का सॉलिसिटर जनरल ही सरकार के एकमात्र अधिकारी हैं जिन्हें भारत की संसद की बैठकों में भाग लेने की अनुमति है।

2. भारत के संविधान के अनुसार, भारत का महान्यायवादी अपना त्यागपत्र दे देता है, जब वह सरकार जिसने उसको नियुक्त किया था इस्तीफा देती है।

उपर्युक्त कथनों में कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1, न ही 2**

सही उत्तर: **(d)**

व्याख्या: संविधान के अनुसार, भारत के महान्यायवादी को वोट देने के अधिकार के बिना उसे संसद के दोनों सदनों या उनकी संयुक्त बैठक और संसद की किसी भी समिति की कार्यवाही में बोलने तथा भाग लेने का अधिकार है, जिसका वह सदस्य नामित किया जाता है। वह उन सभी विशेषाधिकारों और उन्मुक्तियों का हकदार होता है जो एक संसद सदस्य को प्राप्त होते हैं। वह सरकारी सेवकों की श्रेणी में नहीं आता है, अत: उसे निजी कानूनी अभ्यास से वंचित नहीं किया जाता है। हालाँकि उसे भारत सरकार के खिलाफ किसी मामले में सलाह या संक्षिप्त जानकारी देने का अधिकार नहीं है।

- भारत का सॉलिसिटर जनरल और भारत के अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल आधिकारिक जिम्मेदारियों को पूरा करने में महान्यायवादी की सहायता करते हैं। अत: ऐसा वर्णित नहीं है कि भारत का महान्यायवादी भी भारत की संसद की बैठकों में भाग लेता है। अतः कथन 1 सही नहीं है।
- महान्यायवादी को हटाने की प्रक्रिया और आधार संविधान में नहीं बताए गए हैं। वह राष्ट्रपति के प्रसादपर्यंत पद धारण करता है (राष्ट्रपति द्वारा किसी भी समय हटाया जा सकता है)। अतः भारत का महान्यायवादी सरकार के इस्तीफा देने पर त्यागपत्र नहीं देता है। **अतः कथन 2 सही नहीं है। अतः विकल्प (d) सही है।**

2021

1. भारत के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. भारत में केवल एक नागरिक और एक ही अधिवास है।

2. जो व्यक्ति जन्म से नागरिक हो, केवल वही राष्ट्राध्यक्ष बन सकता है।

3. जिस विदेशी को एक बार नागरिकता दे दी गई है, किसी भी परिस्थिति में उसे इससे वंचित नहीं किया जा सकता।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 3 **(d) 2 और 3**

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः भारत में एकल नागरिकता और एकल अधिवास की व्यवस्था स्वीकार की गई है। अतः कथन 1 सही है।

- भारत में राष्ट्राध्यक्ष (राष्ट्रपति) देश का कोई भी नागरिक बन सकता है, इस संदर्भ में संबंधित नागरिक को जिस विधि से मान्यता मिली है, उससे जुड़ी कोई बाध्यता आरोपित नहीं की जाती है। अतः कथन 2 सही नहीं है।
- नागरिकता अधिनियम, 1955 की धारा-10 के अनुसार, "पंजीकरण, देशीयकरण या केवल संविधान के अनुच्छेद-5(ग) के आधार पर नागरिकता अर्जित करने वाले नागरिकों को केंद्र सरकार आदेश द्वारा नागरिकता से वंचित कर सकती है।" इस प्रावधान के आधार पर विदेशियों को भारत की नागरिकता से वंचित किया जा सकता है। अतः कथन 3 सही नहीं है। विकल्प (a) सही उत्तर होगा।

2020

1. भारत के संदर्भ में, नौकरशाही का निम्नलिखित में से कौन-सा उपयुक्त चरित्र चित्रण है?

(a) संसदीय लोकतंत्र की व्याप्ति को विस्तार देने वाला अभिकरण

(b) संघीय ढाँचे को सुदृढ़ करने वाला अभिकरण

(c) राजनीतिक स्थायित्व और आर्थिक वृद्धि को सुलभ बनाने वाला अभिकरण

(d) लोकनीति को कार्यान्वित करने वाला अभिकरण

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः सामान्यतः नौकरशाही का आशय एक विशेषीकृत प्रणाली और एक संगठन के भीतर एकरूपता और नियंत्रण बनाए रखने के लिये डिजाइन की गई प्रक्रियाओं से माना जाता है। बड़े संगठनों या सरकारों में नौकरशाही बेहद आम है। लोकतांत्रिक व्यवस्था के विशिष्ट संदर्भ में यह नौकरशाही की ज़िम्मेदारी है कि वह सरकार की नीतियों को आगे बढ़ाए और कार्यान्वित करे। अतः विकल्प (d) सही उत्तर होगा।

2. संसद सदस्य स्थानीय क्षेत्र विकास योजना (MPLADS) के अंतर्गत निधियों के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों में से कौन-से सही हैं?

1. MPLADS निधियाँ टिकाऊ परिसंपत्तियों जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा, आदि की भौतिक आधारभूत संरचनाओं के निर्माण में ही प्रयुक्त हो सकती हैं।

2. प्रत्येक सांसद की निधि का एक निश्चित अंश अनुसूचित जाति/जनजाति जनसंख्या के लाभार्थ प्रयुक्त होना आवश्यक है।

3. MPLADS निधियाँ वार्षिक आधार पर स्वीकृत की जाती हैं और अप्रयुक्त निधि को अगले वर्ष के लिये अग्रेनीत नहीं किया जा सकता।

4. कार्यान्वित हो रहे सभी कार्यों में से कम-से-कम 10 प्रतिशत कार्यों का ज़िला प्राधिकारी द्वारा प्रति वर्ष निरीक्षण अनिवार्य है।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 3 और 4**

(c) केवल 1, 2 और 3 **(d) केवल 1, 2 और 4**

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास योजना (MPLADS) की शुरूआत 1993 में की गई। इस योजना के तहत सांसद स्थानीय लोगों की आवश्यकताओं के अनुसार स्थायी सामुदायिक परिसंपत्तियों एवं अवसंरचना से संबंधित निर्माण कार्य करवाते हैं। अतः कथन 1 सही है।

- इस योजना के तहत प्रत्येक सांसद को प्रदत्त निधि का कम-से-कम 15 प्रतिशत अनुसूचित जाति जनसंख्या एवं 7.5 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति जनसंख्या के लाभ के लिये प्रयुक्त किया जाएगा। अतः कथन 2 सही है।
- MPLADS निधियाँ वार्षिक आधार पर स्वीकृत की जाती है और अप्रयुक्त निधि को अलगे वर्ष के लिये अग्रेनीत (Carry Forward) किया जा सकता है। अतः कथन 3 सही नहीं है।
- इस योजना के तहत कार्यान्वित हो रहे सभी कार्यों में से कम-से-कम 10 प्रतिशत कार्यों का ज़िला प्राधिकारी द्वारा प्रति वर्ष निरीक्षण किया जाना चाहिये। अतः कथन 4 सही है।

2019

1. निम्नलिखित में से किस एक का यह सुझाव था कि राज्यपाल को उस राज्य के बाहर का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति होना चाहिये और उसे एक ऐसा तटस्थ व्यक्ति होना चाहिये जिसके गहन राजनीतिक जुड़ाव न हों या उसने हाल के पिछले वर्षों में राजनीति में भाग नहीं लिया हो?

(a) पहला प्रशासनिक सुधार आयोग (1966)

(b) राजमन्नार समिति (1969)

(c) सरकारिया आयोग (1983)

(d) संविधान के कार्यचालन की समीक्षा हेतु राष्ट्रीय आयोग (2000)

सही उत्तरः (c)

व्याख्या: सरकारिया आयोग का गठन जून 1983 में किया गया था। इस आयोग का यह सुझाव था कि राज्यपाल को संबंधित राज्य के बाहर का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति (Eminent Person) होना चाहिये और उसे एक ऐसा तटस्थ व्यक्ति होना चाहिये जिसका गहन राजनीतिक जुड़ाव न हो।

ध्यातव्य है कि सरकारिया आयोग के अध्यक्ष सुप्रीम कोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायाधीश आर.एस. सरकारिया थे।

2018

1. भारत के राष्ट्रपति के निर्वाचन के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. प्रत्येक एम.एल.ए. के वोट का मूल्य अलग-अलग राज्य में अलग-अलग होता है।

2. लोक सभा के सदस्यों के वोट का मूल्य राज्य सभा के सदस्यों के वोट के मूल्य से अधिक होता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1, न ही 2**

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: अनुच्छेद-54 में राष्ट्रपति के निर्वाचन का वर्णन है। राष्ट्रपति के निर्वाचन में संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्य एवं राज्यों की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य भाग लेते हैं। राष्ट्रपति का चुनाव आनुपातिक प्रतिनिधित्व के अनुसार एकल संक्रमणीय मत और गुप्त मतदान द्वारा होता है। प्रत्येक विधानसभा के निर्वाचित सदस्य के मतों की संख्या, उस राज्य की जनसंख्या को, उस राज्य की विधानसभा के निर्वाचित सदस्यों तथा 1000 के गुणनफल से प्राप्त संख्या द्वारा भाग देने पर प्राप्त होती है, प्रत्येक एम.एल.ए. के वोट का मूल्य अलग-अलग राज्य में अलग-अलग होता है। इसलिये, कथन 1 सही है।

$$\text{विधायक के मत का मूल्य} = \frac{\text{राज्य की कुल जनसंख्या}}{\text{राज्य विधानसभा के निर्वाचित कुल सदस्य}} \times \frac{1}{1000}$$

संसद के प्रत्येक सदन के निर्वाचित सदस्यों के मतों की संख्या, सभी राज्यों के विधायकों के मतों का मूल्य संसद के कुल सदस्यों की संख्या से भाग देने पर प्राप्त होता है।

$$\text{सांसद के मत का मूल्य} = \frac{\text{सभी राज्यों के विधायकों के मतों का कुल मूल्य}}{\text{संसद के निर्वाचित सदस्यों की कुल सदस्य संख्या}}$$

लोकसभा के सदस्यों के वोट का मूल्य राज्यसभा के सदस्यों के वोट के मूल्य से अधिक नहीं होता है बल्कि दोनों सदनों के सदस्य के मत का मूल्य समान या समतुल्य होता है। अतः कथन 2 सही नहीं है।

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. किसी राज्य के राज्यपाल के विरुद्ध उसकी पदावधि के दौरान किसी न्यायालय में कोई दांडिक कार्यवाही संस्थित नहीं की जाएगी।

2. किसी राज्य के राज्यपाल की परिलब्धियाँ और भत्ते उसकी पदावधि के दौरान कम नहीं किये जाएंगे।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1, न ही 2**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: संविधान में राज्यपाल को उसके पद के संदर्भ में अनेक विशेषाधिकार तथा उन्मुक्तियाँ प्राप्त हैं।

उसे अपने शासकीय कृत्यों के लिये विधिक दायित्वों से निजी उन्मुक्ति प्राप्त है। उसे अपने कार्यकाल के दौरान आपराधिक कार्यवाही (चाहे वह व्यक्तिगत क्रियाकलाप हो) की सुनवाई की उन्मुक्ति प्राप्त है [अनुच्छेद&361(2)] तथा कार्यकाल के दौरान उसकी आर्थिक उपलब्धियों व भत्तों को कम नहीं किया जा सकता। **अतः कथन 1 और 2 दोनों सही हैं।**

2017

1. किसी राज्य में राष्ट्रपति शासन की उद्घोषणा के निम्नलिखित में से कौन-से परिणामों का होना आवश्यक नहीं है?

1. राज्य विधान सभा का विघटन

2. राज्य के मंत्रिपरिषद् का हटाया जाना

3. स्थानीय निकायों का विघटन

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 1 और 3**

(c) केवल 2 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: राष्ट्रपति शासन की स्थिति में राज्य कार्यपालिका बर्खास्त हो जाती है तथा राज्य विधायिका या तो निलंबित हो जाती है अथवा विघटित हो जाती है। राज्य की कार्यकारी व विधायी शक्तियाँ केंद्र को प्राप्त हो जाती हैं। अतः राष्ट्रपति शासन के आवश्यक परिणामों में केवल राज्य की मंत्रिपरिषद् का हटाया जाना है। **अतः विकल्प (b) सही है।**

2016

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. किसी राज्य में मुख्य सचिव को उस राज्य के राज्यपाल द्वारा नियुक्त किया जाता है।

2. राज्य में मुख्य सचिव का नियत कार्यकाल होता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तर: (d)

व्याख्याः

- मुख्य सचिव का चयन मुख्यमंत्री द्वारा भारतीय प्रशासनिक सेवा के राज्य काडर के वरिष्ठ अधिकारियों में से किया जाता है।
- इसकी नियुक्ति मुख्यमंत्री द्वारा की जाती है।
- मुख्य सचिव राज्य सचिवालय का शासकीय प्रधान होता है।
- वह राज्य प्रशासन का प्रशासनिक प्रमुख होता है तथा राज्य के प्रशासनिक पदानुक्रम में उसका सर्वोच्च स्थान होता है।
- मुख्य सचिव राज्य के अन्य मंत्रालयों के सचिवों का प्रमुख होता है तथा सचिवालय के सभी विभाग उसके नियंत्रण में होते हैं।
- मुख्य सचिव का कोई निश्चित कार्यकाल नहीं होता।
- मुख्य सचिव राज्य प्रशासन से जुड़े सभी मामलों में मुख्यमंत्री के प्रधान सलाहकार के रूप में कार्य करता है।
- यह राज्य मंत्रिमंडल के सचिव के रूप में कार्य करता है।
- यह राज्य लोकसेवा के प्रमुख के रूप में कार्य करता है।

अत: उक्त व्याख्या के आधार पर कथन (1) और (2) गलत हैं, **अतः सही विकल्प (d) होगा।**

2015

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. भारतीय संघ की कार्यपालिका शक्ति प्रधानमंत्री में निहित है।

2. प्रधानमंत्री, सिविल सेवा बोर्ड का पदेन अध्यक्ष होता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः कथन (1) गलत है, क्योंकि संघ की कार्यपालिका शक्ति राष्ट्रपति में निहित है न कि प्रधानमंत्री में। इसी प्रकार कथन (2) भी गलत है क्योंकि सिविल सेवा बोर्ड का पदेन अध्यक्ष कैबिनेट सचिव होता है।

- अनुच्छेद-53(1) के अनुसार, संघ की कार्यपालिका शक्ति राष्ट्रपति में निहित होगी और संविधान के अनुसार वह इसका प्रयोग स्वयं या अपने अधीनस्थ अधिकारियों के द्वारा करेगा।
- जबकि कैबिनेट सचिव, मंत्रिमंडल सचिवालय का प्रशासनिक प्रमुख होने के साथ ही सिविल सर्विसेज बोर्ड का पदेन अध्यक्ष होता है।
- यद्यपि मंत्रिमंडल सचिवालय प्रत्यक्ष तौर पर प्रधानमंत्री के अधीन कार्य करता है किंतु इसका प्रशासनिक प्रमुख कैबिनेट सचिव होता है।

2014

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. राष्ट्रपति, भारत सरकार का कार्य अधिक सुविधापूर्वक किये जाने के लिये और मंत्रियों में उक्त कार्य के आवंटन के लिये नियम बनाएगा।

2. भारत सरकार की समस्त कार्यपालिका कार्रवाइयाँ प्रधानमंत्री के नाम से की हुई कही जाएंगी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः

- संविधान के अनुच्छेद-77(3) में यह स्पष्ट किया गया है कि राष्ट्रपति, भारत सरकार का कार्य अधिक सुविधाजनक रूप से किये जाने के लिये और मंत्रियों में उक्त कार्य के आवंटन के लिये नियम बनाएगा। अत: कथन (1) सही है।
- संविधान के अनुच्छेद-77(1) के तहत भारत सरकार की समस्त कार्यपालिका कार्रवाई राष्ट्रपति के नाम से की हुई कही जाएंगी न कि प्रधानमंत्री के नाम से। अत: कथन (2) असत्य है।

2. निम्नलिखित में से कौन-सा/से मंत्रिमंडल सचिवालय का/के कार्य है/हैं?

1. मंत्रिमंडल बैठकों के लिये कार्यसूची तैयार करना

2. मंत्रिमंडल समितियों के लिये सचिवालयी सहायता

3. मंत्रालयों को वित्तीय संसाधनों का आवंटन

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 1 और 2 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तरः (c)

व्याख्याः मंत्रिमंडल सचिवालय मंत्रिमंडल बैठकों के लिये कार्य सूची तैयार करता है तथा मंत्रिमंडल समितियों के लिये सचिवालयी सहायता भी प्रदान करता है। किंतु मंत्रालयों के लिये वित्तीय संसाधनों का आवंटन वित्त मंत्रालय के द्वारा किया जाता है न कि मंत्रिमंडल सचिवालय के द्वारा।

मंत्रिमंडल सचिवालय के प्रमुख कार्य

मंत्रिमंडल सचिवालय भारत सरकार (कार्य आवंटन) नियम, 1961 के अंतर्गत प्रत्यक्ष तौर पर प्रधानमंत्री के अधीन कार्य करता है। इसका प्रशासनिक प्रमुख कैबिनेट सचिव होता है। कैबिनेट सचिव सिविल सर्विसेज बोर्ड का पदेन अध्यक्ष भी होता है। इसके प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं-

- विभिन्न मंत्रालयों के बीच समन्वय स्थापित करता है।
- मंत्रिमंडल सचिवालय विभिन्न मंत्रालयों के बीच मतभेदों को दूर कर सरकार को समुचित निर्णय लेने में मदद करता है।
- यह स्थायी एवं तदर्थ समितियों के माध्यम से आपस में सहमति बनाने का कार्य भी करता है।
- मंत्रिमंडल सचिवालय यह सुनिश्चित करता है कि सभी मंत्रालयों और विभागों की प्रमुख गतिविधियों के बारे में प्रत्येक महीने एक सारांश बनाकर राष्ट्रपति, उप-राष्ट्रपति एवं मंत्रियों को उससे अवगत कराया जाए।
- मंत्रिमंडल सचिवालय देश में किसी बड़े संकट के समय उसका प्रबंधन करने तथा ऐसी परिस्थितियों में विभिन्न मंत्रालयों की गतिविधियों में समन्वय स्थापित करने का कार्य भी करता है।

3. निम्नलिखित में से कौन-सी किसी राज्य के राज्यपाल को दी गई विवेकाधीन शक्तियाँ हैं?

1. भारत के राष्ट्रपति को, राष्ट्रपति शासन अधिरोपित करने के लिये रिपोर्ट भेजना

2. मंत्रियों की नियुक्ति करना

3. राज्य विधानमण्डल द्वारा पारित कतिपय विधेयकों को, भारत के राष्ट्रपति के विचार के लिये आरक्षित करना

4. राज्य सरकार के कार्य संचालन के लिये नियम बनाना

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये।

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 1 और 3**

(c) केवल 2, 3 और 4 **(d) 1, 2, 3 और 4**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या:

- राज्यपाल की विवेकाधीन शक्तियाँ- भारतीय संविधान के अनुच्छेद-356(1) के तहत राज्यपाल द्वारा राष्ट्रपति को राष्ट्रपति शासन अधिरोपित करने के लिये रिपोर्ट भेजी जाती है। अत: कथन (1) सही है।
- अनुच्छेद-164 के तहत राज्य में मंत्रियों की नियुक्ति मुख्यमंत्री की सलाह पर की जाती है, अत: यह राज्यपाल की विवेकाधीन शक्ति नहीं है। इसलिये कथन (2) गलत है।
- अनुच्छेद-201 के तहत राज्यपाल राज्य-विधान सभा द्वारा पारित विधेयकों को राष्ट्रपति के विचार के लिये आरक्षित रखता है। अत: कथन (3) सही है।
- अनुच्छेद-166(3) के तहत राज्यपाल राज्य सरकार के कार्यों को अधिक सुविधापूर्वक किये जाने के लिये नियम बनाएगा। लेकिन यह उसकी विवेकाधीन शक्ति नहीं हैं बल्कि इसका प्रयोग वह राज्य मंत्रिपरिषद् की सलाह के अनुसार करेगा। अत: कथन (4) गलत है।

2013

1. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक सही है?

(a) भारत में एक ही व्यक्ति को एक ही समय में दो या अधिक राज्यों में राज्यपाल नियुक्त नहीं किया जा सकता

(b) भारत में राज्यों के उच्च न्यायालय के न्यायाधीश राज्य के राज्यपाल द्वारा नियुक्त किये जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किये जाते हैं

(c) भारत के संविधान में राज्यपाल को उसके पद से हटाने हेतु कोई भी प्रक्रिया अधिकथित नहीं है

(d) विधायी व्यवस्था वाले संघ राज्यक्षेत्र में मुख्यमंत्री की नियुक्ति उपराज्यपाल द्वारा, बहुमत समर्थन के आधार पर की जाती है

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: मूल संविधान में अनुच्छेद-153 में यह उल्लिखित था कि प्रत्येक राज्य के लिये एक राज्यपाल होगा। किंतु, सातवें संविधान संशोधन (1956) द्वारा इसमें एक परंतुक जोड़ दिया गया जिसके अनुसार एक ही व्यक्ति को दो या दो से अधिक राज्यों के लिये भी राज्यपाल नियुक्त किया जा सकता है। अत: कथन (a) गलत है।

- अनुच्छेद-217 के तहत उच्च न्यायालय के न्यायाधीश की नियुक्ति भी राष्ट्रपति द्वारा की जाती है। अत: कथन (b) गलत है।
- भारत के संविधान में राज्यपाल को उसके पद से हटाने हेतु किसी भी प्रक्रिया का उल्लेख नहीं है। अत: कथन (c) सही है।
- अनुच्छेद-239 के तहत विधायी व्यवस्था वाले संघ राज्यक्षेत्रों (दिल्ली एवं पुदुच्चेरी) में मुख्यमंत्री की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है, उपराज्यपाल द्वारा नहीं अत: कथन (d) गलत है।

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. केंद्र में मंत्रिपरिषद् संसद के प्रति सामूहिक रूप से उत्तरदायी होगी।

2. संघीय मंत्री भारत के राष्ट्रपति के प्रसादपर्यन्त पद धारण करेंगे।

3. विधि-निर्माण हेतु प्रस्ताव के बारे में प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति को सूचित करेगा।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: भारतीय संविधान के अनुच्छेद-75(3) के अनुसार मंत्रिपरिषद् लोक सभा के प्रति सामूहिक रूप से उत्तरदायी होगी न कि संसद के प्रति। अत: कथन (1) असत्य है।

- अनुच्छेद-75(2) के अनुसार मंत्री राष्ट्रपति के प्रसादपर्यंत अपना पद धारण करेंगे। अत: कथन (2) सही है।
- संविधान के अनुच्छेद-78 में विधि-निर्माण हेतु राष्ट्रपति को जानकारी देने आदि के बारे में प्रधानमंत्री के कर्त्तव्य का उल्लेख किया गया है। अत: कथन (3) सही है।

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

भारत का महान्यायवादी

1. लोक सभा की कार्यवाही में भाग ले सकता है

2. लोक सभा की किसी समिति का सदस्य हो सकता है

3. लोक सभा में बोल सकता है

4. लोक सभा में मतदान कर सकता है

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2 और 4

(c) 1, 2 और 3

(d) केवल 1 और 3

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: भारत के राष्ट्रपति द्वारा महान्यायवादी को नियुक्त किया जाता है। महान्यायवादी के विषय में भारतीय संविधान के अनुच्छेद-76 और अनुच्छेद-88 में उल्लेख किया गया है।

अनुच्छेद-76

- राष्ट्रपति, उच्चतम न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त होने के लिये अर्हित किसी व्यक्ति को भारत का महान्यायवादी नियुक्त करेगा।
- महान्यायवादी का यह कर्त्तव्य होगा कि वह भारत सरकार को विधि संबंधी ऐसे विषयों पर सलाह दे और विधिक स्वरूप के ऐसे अन्य कर्त्तव्यों का पालन करे जो राष्ट्रपति उसको समय-समय पर निर्देशित करे या सौंपे और उन कृत्यों का निर्वहन करे जो उसको इस संविधान अथवा तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि द्वारा या उसके अधीन प्रदान किये गए हों।
- महान्यायवादी को अपने कर्त्तव्यों के पालन में भारत के राज्यक्षेत्र में सभी न्यायालयों में सुनवाई का अधिकार होगा।
- महान्यायवादी, राष्ट्रपति के प्रसादपर्यंत पद धारण करेगा और ऐसा पारिश्रमिक प्राप्त करेगा जो राष्ट्रपति अवधारित करे।

अनुच्छेद-88

प्रत्येक मंत्री और भारत के महान्यायवादी को यह अधिकार होगा कि वह किसी भी सदन में, सदनों की संयुक्त बैठक में और संसद की किसी समिति में जिसमें उसका नाम सदस्य के रूप में दिया गया है, बोले और उसकी कार्यवाहियों में भाग ले किंतु इस अनुच्छेद-के आधार पर वह मत देने का अधिकारी नहीं होगा।

2012

1. भारतीय संविधान के अनुसार, भारत के राष्ट्रपति का यह कर्त्तव्य है कि वे निम्नलिखित में से किसको/किनको संसद के पटल पर रखवाएँ?

1. संघ वित्त आयोग की सिफारिशों को

2. लोक लेखा समिति के प्रतिवेदन को

3. नियंत्रक-महालेखा परीक्षक के प्रतिवेदन को

4. राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के प्रतिवेदन को

निम्नलिखित कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1

(b) केवल 2 और 4

(c) केवल 1, 3 और 4

(d) 1, 2, 3 और 4

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: भारत में राष्ट्रपति के द्वारा संघ वित्त आयोग की सिफारिशों, नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के प्रतिवेदन तथा राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के प्रतिवेदन को संसद के पटल पर रखवाया जाता है। जबकि लोक लेखा समिति एक संसदीय समिति है जिसका कार्य नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की वार्षिक रिपोर्ट की जाँच करना है तथा यह अपनी रिपोर्ट लोक सभा अध्यक्ष को सौंपता है। इस प्रकार उपरोक्त प्रश्न के संदर्भ में विकल्प (c) सही है।

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद-281 के तहत राष्ट्रपति वित्त आयोग की सिफारिशों को संसद के प्रत्येक सदन के समक्ष रखवाता है।
- संविधान के अनुच्छेद-151(1) के अंतर्गत राष्ट्रपति नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के प्रतिवेदन को संसद के प्रत्येक सदन के समक्ष रखवाएगा।
- संविधान के अनुच्छेद-338(6) के तहत राष्ट्रपति राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के प्रतिवेदन को संसद के प्रत्येक सदन के समक्ष रखवाएगा।

2. भारत के प्रधानमंत्री की नियुक्ति के समय-

(a) ज़रूरी नहीं है कि वह संसद के दोनों सदनों में से एक का आवश्यक रूप से सदस्य हो, परंतु उसे छः माह के अंदर आवश्यक रूप से दोनों में से एक सदन का सदस्य हो जाना चाहिये।

(b) ज़रूरी नहीं है कि वह संसद के दोनों सदनों में से एक का आवश्यक रूप से सदस्य हो, परंतु उसे छः माह के अंदर लोक सभा का सदस्य हो जाना चाहिये।

(c) संसद के दोनों सदनों में से एक का आवश्यक रूप से सदस्य होना चाहिये।

(d) आवश्यक रूप से लोक सभा का सदस्य होना चाहिये।

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: भारत में प्रधानमंत्री तथा मंत्रियों की नियुक्ति के समय उनका संसद के किसी भी सदन का सदस्य होना अनिवार्य नहीं है।

किंतु प्रधानमंत्री एवं मंत्री के रूप में नियुक्त किये जाने के पश्चात् 6 महीने के भीतर उनका संसद के किसी भी सदन का सदस्य बन जाना आवश्यक है। यदि 6 महीने की उक्त अवधि में वे संसद के किसी सदन के सदस्य नहीं बन पाते हैं तो वे प्रधानमंत्री एवं मंत्री के रूप में पद पर नहीं रह सकते हैं।

3. लोक निधि के फलोत्पादक और आशयित प्रयोग को सुरक्षित करने के साथ-साथ भारत में नियंत्रक-महालेखा परीक्षक (CAG) के कार्यालय का महत्त्व क्या है?

1. CAG संसद की ओर से राजकोष पर नियंत्रण रखता है, जब भारत का राष्ट्रपति राष्ट्रीय आपात/वित्तीय आपात घोषित करता है।

2. CAG की मंत्रालयों द्वारा कार्यान्वित परियोजनाओं या कार्यक्रमों पर जारी किये गए प्रतिवेदनों पर लोक लेखा समिति विचार-विमर्श करती है।

3. CAG के प्रतिवेदनों से मिली जानकारियों के आधार पर जाँचकर्त्ता एजेंसियाँ उन लोगों के विरुद्ध आरोप दाखिल कर सकती हैं जिन्होंने लोक निधि प्रबंधन में कानून का उल्लंघन किया हो।

4. CAG को ऐसी निश्चित न्यायिक शक्तियाँ प्राप्त हैं कि सरकारी कंपनियों के लेखा-परीक्षा और लेखा जाँचते समय वह कानून का उल्लंघन करने वालों पर अभियोग लगा सके।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1, 3 और 4 **(b) केवल 2**

(c) केवल 2 और 3 **(d) 1, 2, 3 और 4**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: नियंत्रक-महालेखापरीक्षक केवल संसद के प्रति उत्तरदायी होता है और उसी के माध्यम से खर्चों का लेखा-परीक्षण करता है। वह राष्ट्रीय आपात/वित्तीय आपात के ही समय नहीं बल्कि सामान्य समय में भी नियमित रूप से अपने कार्य को अंजाम देता है।

- नियंत्रक-महालेखापरीक्षक केंद्र सरकार के मामले में अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति को सौंपता है, जिसे राष्ट्रपति संसद के दोनों सदनों के सभापटल पर रखवाता है। संसद के सभापटल पर आने के पश्चात् लोक लेखा समिति इस रिपोर्ट पर विचार करती है।
- नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के द्वारा प्रस्तुत किये गए प्रतिवेदनों से प्राप्त जानकारियों के आधार पर जाँचकर्त्ता एजेंसियाँ लोक निधि के प्रबंधन में कानून का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध आरोप पत्र दाखिल कर सकती हैं।

कैग (CAG) को ऐसी कोई न्यायिक शक्ति प्राप्त नहीं है जिसके आधार पर वह सरकारी कंपनियों के लेखा परीक्षण के समय कानून का उल्लंघन करने वालों पर अभियोग लगा सके।

न्यायपालिका

2024

1. प्रतिषेध रिट उच्चतम न्यायालय या उच्च न्यायालयों द्वारा किसे और किस प्रयोजन से जारी किया गया एक आदेश है?

(a) किसी सरकारी अधिकारी को, उसे किसी विशिष्ट कार्रवाई करने से प्रतिषेध करने के लिये

(b) संसद/विधानसभा को, मद्यनिषेध पर कोई विधि पारित करने के लिये

(c) निचली अदालत को, किसी मामले में कार्यवाही जारी रखने का प्रतिषेध करने के लिये

(d) सरकार को, उसे किसी असंवैधानिक नीति का अनुपालन करने से प्रतिषेध करने के लिये

सही उत्तर: (c)

व्याख्या:

- **रिट:** उच्चतम न्यायालय (अनुच्छेद-32 के तहत) तथा उच्च न्यायालय (अनुच्छेद-226 के तहत) **बंदी प्रत्यक्षीकरण, परमादेश, प्रतिषेध, उत्प्रेषण तथा अधिकार-पृच्छा** रिट जारी कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, संसद (अनुच्छेद-32 के तहत) किसी अन्य न्यायालय को ये रिट जारी करने का अधिकार दे सकती है।
- **प्रतिषेध:** प्रतिषेध का शाब्दिक अर्थ है **'निषेध करना'**। यह उच्च न्यायालय द्वारा **निचली अदालत या न्यायाधिकरण को उसके अधिकार क्षेत्र से बाहर जाने या उसके अधिकार क्षेत्र का अतिक्रमण करने से रोकने के लिये** जारी किया जाता है। इस प्रकार, गतिविधि को निर्देशित करने वाले परमादेश के विपरीत, **प्रतिषेध निष्क्रियता को निर्देशित** करता है।
- प्रतिषेध केवल **न्यायिक एवं अर्ध-न्यायिक प्राधिकारियों के विरुद्ध ही जारी** की जा सकती है। यह प्रशासनिक अधिकारियों, विधायी निकायों एवं निजी व्यक्तियों अथवा निकायों के विरुद्ध उपलब्ध नहीं है। **अतः विकल्प (c) सही है।**

2023

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

कथन-I: भारत के उच्चतम न्यायालय ने अपने कतिपय निर्णयों में यह विचारण किया है कि भारत के संविधान के अनुच्छेद-16(4) के अधीन बनाई गई आरक्षण नीतियाँ प्रशासन की दक्षता को बनाए रखने के लिये अनुच्छेद-335 द्वारा सीमित होंगी।

कथन-II : भारत के संविधान का अनुच्छेद-335 'प्रशासन की दक्षता' पद को परिभाषित करता है।

उपर्युक्त कथनों के बारे में, निम्नलिखित में से कौन-सा एक सही है?

(a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या है।

(b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या नहीं है।

(c) कथन-I सही है किंतु कथन-II गलत है।

(d) कथन-I गलत है किंतु कथन-II सही है।

सही उत्तर: (c)

व्याख्या:

- भारत के उच्चतम न्यायालय ने आरक्षण पर पिछले सात दशकों के संवैधानिक फैसलों में विभिन्न आरक्षण नीतियों की वैधता का निर्णय करते हुए लगातार **"दक्षता"** और **"योग्यता"** की धारणाओं का उल्लेख किया है।
- न्यायालय ने कई निर्णय दिये हैं (इंदिरा साहनी और अन्य बनाम भारत संघ एवं अन्य 1993; एम नागराज और अन्य बनाम भारत संघ एवं अन्य 2006) कि संविधान के अनुच्छेद-16(4)1 के तहत बनाई गई आरक्षण नीतियाँ अनुच्छेद-335 (2) द्वारा सीमित होंगी जो "प्रशासन की दक्षता बनाए रखने" का प्रावधान करती हैं। **अतः कथन I सही है।**
- ऐसा तब किया गया है जबकि संविधान 'प्रशासन की दक्षता' पद को परिभाषित नहीं करता है।
- अनुच्छेद-335 में कहा गया है कि संघ या राज्य के मामलों के संबंध में सेवाओं और पदों की नियुक्तियाँ करने में अनुसूचित जातियों (Scheduled Castes – SC) और अनुसूचित जनजातियों (Scheduled Tribes – ST) के दावों पर विचार किया गया है। यह तब किया गया जब संविधान 'प्रशासन की दक्षता' शब्द को परिभाषित नहीं करता है। अतः कथन II सही नहीं है। **अतः विकल्प (c) सही है।**

2022

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. एच.एन. सान्याल समिति की रिपोर्ट के अनुसरण में, न्यायालय की अवमानना अधिनियम, 1971 पारित किया गया था।

2. भारत का संविधान उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों को, अपनी अवमानना के लिए दंड देने हेतु, शक्ति प्रदान करता है।

3. भारत का संविधान सिविल अवमानना और आपराधिक अवमानना को परिभाषित करता है।

4. भारत में, न्यायालय की अवमानना के विषय में कानून बनाने के लिए संसद में शक्ति निहित है।

उपर्युक्त कथनों में कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 (b) 1, 2 और 4
(c) केवल 3 और 4 (d) केवल 3

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या: सत्यपाल समिति द्वारा तैयार किये गए 1963 के विधेयक का संसद की संयुक्त समिति (1969-70) (भार्गव समिति) द्वारा पुनर्विलोकन किया गया था, जिसके आधार पर न्यायालय की अवमानना अधिनियम, 1971 अधिनियमित किया गया था। **अतः कथन 1 सही है।**

- संविधान के अनुच्छेद-129 ने उच्चतम न्यायालय को स्वयं की अवमानना के लिये दंडित करने की शक्ति प्रदान की। अनुच्छेद-215 ने उच्च न्यायालयों को संबंधित शक्ति प्रदान की। **अतः कथन 2 सही है।**
- न्यायालय की अवमानना अधिनियम, 1971 (Contempt of Court Act, 1971) के अनुसार, न्यायालय की अवमानना का अर्थ किसी न्यायालय की गरिमा तथा उसके अधिकारों के प्रति अनादर प्रदर्शित करना है। अभिव्यक्ति 'अदालत की अवमानना' को संविधान द्वारा परिभाषित नहीं किया गया है। हालाँकि, संविधान के अनुच्छेद-129 ने उच्चतम न्यायालय को स्वयं की अवमानना के लिये दंडित करने की शक्ति प्रदान की। **अतः कथन 3 सही नहीं है।**
- अवमानना के लिये दंड देने की शक्ति उच्चतम न्यायालय में निहित एक संवैधानिक शक्ति है जिसे विधायी अधिनियम द्वारा भी कम या समाप्त नहीं किया जा सकता है। अनुच्छेद-142 (2) में कहा गया है कि 'संसद द्वारा इस संबंध में बनाए गए किसी भी कानून के प्रावधानों के अधीन' उच्चतम न्यायालय के पास अपनी अवमानना की सजा पर कोई भी आदेश देने की पूरी शक्ति होगी। **अतः कथन 4 सही है। अतः कथन (b) सही है।**

2. भारत के सन्दर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. सरकारी विधि अधिकारी और विधिक फर्म अधिवक्ता के रूप में मान्यता-प्राप्त हैं, किंतु कॉर्पोरेट वकील और पेटेंट न्यायवादी अधिवक्ता की मान्यता से बाहर रखे गए हैं।

2. विधिज्ञ परिषदों (बार कौंसिलों) को विधिक शिक्षा और विधि महाविद्यालयों की मान्यता के बारे में नियम अधिकथित करने की शक्ति है।

उपर्युक्त कथनों में कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या: सरकारी विधि अधिकारी, विधिक फर्म और पेटेंट न्यायवादी अधिवक्ता के रूप में मान्यता प्राप्त हैं, जबकि कॉर्पोरेट वकील अधिवक्ता की मान्यता से बाहर हैं। **अतः कथन 1 सही नहीं है।**

- भारतीय विधिज्ञ परिषद, अधिवक्ता अधिनियम 1961 की धारा 4 के तहत स्थापित एक वैधानिक निकाय है जो भारत में विधिक अभ्यास और विधिक शिक्षा को नियंत्रित करता है। इसके सदस्य भारतीय वकीलों/अधिवक्ताओं में से चुने जाते हैं और इस प्रकार वे भारतीय विधिज्ञ परिषद का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह पेशेवर आचरण, शिष्टाचार के मानकों को निर्धारित करता है और बार/विधिज्ञ परिषद पर अनुशासनात्मक अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करता है।
- यह विधिक शिक्षा के लिये मानक भी निर्धारित करता है और उन विश्वविद्यालयों को मान्यता प्रदान करता है जिनकी विधि की डिग्री छात्रों के लिये स्नातक स्तर पर अधिवक्ता के रूप में नामांकन के लिये योग्यता के रूप में काम करेगी। **अतः कथन 2 सही है। अतः विकल्प (b) सही है।**

3. भारत के न्यायालयों द्वारा जारी रिटों के सन्दर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. किसी प्राइवेट संगठन के विरुद्ध, जब तक कि उसको कोई सार्वजनिक कार्य नहीं सौंपा गया हो, परमादेश (मैंडेमस) नहीं होगा।

2. किसी कंपनी के विरुद्ध, भले ही वह कोई सरकारी कंपनी हो, परमादेश (मैंडेमस) नहीं होगा।

3. कोई भी लोक-प्रवण व्यक्ति (पब्लिक माइंडेड परसन) अधिकार-पृच्छा (क्वो वारंटो) रिट प्राप्त करने हेतु न्यायालय में समावेदन करने के लिए याची (पिटीशनर) हो सकता है।

उपर्युक्त कथनों में कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

सही उत्तर: **(d)**

व्याख्या: परमादेश (मैंडेमस) न्यायालय से एक आदेश के रूप में एक न्यायिक उपाय है। यह किसी प्राधिकरण को वैधानिक प्रावधान के खिलाफ कुछ करने के लिये मजबूर करने के लिये जारी नहीं किया जा सकता है। उदाहरण के लिये, इसका उपयोग निचली अदालत में किये गए आवेदनों पर एक विशिष्ट कार्रवाई करने हेतु मजबूर करने के लिये नहीं किया जा सकता है, लेकिन अगर अदालत एक या दूसरे तरीके से शासन करने से इनकार करती है तो अदालत को आदेश देने के लिये एक परमादेश का उपयोग किया जा सकता है।

- अतः किसी प्राइवेट संगठन के विरुद्ध जब तक कि उसको कोई सार्वजनिक कार्य नहीं सौपा गया हो, परमादेश जारी नहीं होगा। **अतः विकल्प 1 सही है।**

- जिनके विरूद्ध परमादेश रिट जारी नहीं किया जा सकता है वह है–
  - यह उन कंपनियों और निजी व्यक्तियों के विरूद्ध जारी नहीं की जाएगी जिनका कोई सार्वजनिक कर्तव्य न हों।
  - न्यायिक क्षमता के रूप में कार्यरत उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के विरूद्ध।
  - भारतीय न्यायालयों द्वारा जारी रिटों में किसी कंपनी के विरूद्ध, भले ही वह कोई सरकारी कंपनी हो, परमादेश नहीं होगा। **अतः विकल्प 2 सही है।**
- अधिकार पृच्छा का अर्थ 'आप क्या प्राधिकार है?' होता है यह अवैधानिक रूप से किसी सार्वजनिक पद पर आसीन व्यक्ति के विरुद्ध जारी किया जाता है।
- उच्चतम न्यायालय या उच्च न्यायालय किसी व्यक्ति द्वारा सार्वजनिक कार्यालय के अवैध हड़पने को रोकने के लिये यह रिट जारी करता है। इस रिट के माध्यम से, अदालत किसी व्यक्ति के सार्वजनिक कार्यालय के दावे की वैधता की जाँच करती है।
- यह तभी जारी किया जा सकता है जब किसी कानून या संविधान द्वारा सृजित स्थायी स्वरूप का वास्तविक सार्वजनिक कार्यालय शामिल हो।
- इसे निजी या मंत्रिस्तरीय कार्यालय के खिलाफ जारी नहीं किया जा सकता है।
- यह रिट पीड़ित व्यक्ति के अलावा किसी अन्य व्यक्ति को निवारण की मांग करने का अधिकार देता है।
- अतः कोई भी लोक-प्रवण व्यक्ति अधिकार पृच्छा रिट प्राप्त करने हेतु न्यायालय में समावेदन करने के लिये याची हो सकता है। **अतः विकल्प 3 सही है। अतः कथन (d) सही है।**

2021

1. भारतीय न्यायपालिका के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. भारत के राष्ट्रपति की पूर्वानुमति से भारत के मुख्य न्यायमूर्ति द्वारा उच्चतम न्यायालय से सेवानिवृत्त किसी न्यायाधीश को उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश के पद पर बैठने और कार्य करने हेतु बुलाया जा सकता है।

2. भारत में किसी भी उच्च न्यायालय को अपने निर्णय के पुनर्विलोकन की शक्ति प्राप्त है, जैसा कि उच्चतम न्यायालय के पास है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**
(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः संविधान के अनुच्छेद&128 में यह प्रावधान है कि आवश्यकता पड़ने पर सेवानिवृत्त न्यायाधीशों को भी अल्पकाल के लिये उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में बैठने और कार्य करने का अनुरोध किया जाता है। (उच्चतम न्यायालय के अवकाश प्राप्त न्यायाधीश या उच्च न्यायालयों के अवकाश प्राप्त न्यायाधीश, जो उच्चतम न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त होने के लिये सम्यक रूप से अर्ह हों।) उच्चतम न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से ऐसे न्यायाधीश से लिखित अनुरोध कर सकता है। अतः कथन 1 सही है।

न्यायिक समीक्षा शब्दावली का प्रयोग संविधान में कहीं भी नहीं किया गया है परंतु अनुच्छेद-13 और अनुच्छेद-226 में उच्च न्यायालय द्वारा न्यायिक समीक्षा के उपबंध स्पष्ट है। उच्च न्यायालय की न्यायिक समीक्षा की शक्ति राज्य विधानमंडल एवं केंद्र सरकार दोनों के अधिनियमों और कार्यकारी आदेशों की संवैधानिकता के परीक्षण के लिये है। यदि वे संविधान का उल्लंघन करते है तो उन्हें असंवैधानिक घोषित किया जा सकता है। जबकि उच्चतम न्यायालय अनुच्छेद-13, अनुच्छेद-32 और अनुच्छेद-137 के तहत न्यायिक समीक्षा कर सकता है। अतः अतः कथन 2 सही नहीं है। विकल्प (a) सही उत्तर होगा।

2019

1. भारत के संविधान के सदंर्भ में, सामान्य विधियों में अंतर्विष्ट प्रतिषेध अथवा निर्बंधन अथवा उपबंध, अनुच्छेद-142 के अधीन सांविधानिक शक्तियों पर प्रतिषेध अथवा निर्बंधन की तरह कार्य नहीं कर सकते। निम्नलिखित में से कौन-सा एक, इसका अर्थ हो सकता है?

(a) भारत के निर्वाचन आयोग द्वारा अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करते समय लिये गए निर्णयों को किसी भी न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती।

(b) भारत का उच्चतम न्यायालय अपनी शक्तियों के प्रयोग में संसद द्वारा निर्मित विधियों से बाध्य नहीं होता।

(c) देश में गंभीर वित्तीय संकट की स्थिति में, भारत का राष्ट्रपति मंत्रिमंडल के परामर्श के बिना वित्तीय आपात घोषित कर सकता है।

(d) कुछ मामलों में राज्य विधानमंडल, संघ विधानमंडल की सहमति के बिना, विधि निर्मित नहीं कर सकते।

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः अनुच्छेद-142 के तहत सुप्रीम कोर्ट अपने क्षेत्राधिकार का इस्तेमाल कर डिक्री या आदेश पारित करता है। अगर ज़रूरी हो तो किसी भी पेंडिंग मामले में वह आदेश पारित कर सकता है। यह आदेश देश भर में लागू होगा। संसद में कानून लागू कराने के लिये भी आदेश जारी कर सकता है।

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. भारत के संविधान के 44वें संशोधन द्वारा लाए गए एक अनुच्छेद-ने प्रधानमंत्री के निर्वाचन को न्यायिक पुनर्विलोकन के परे कर दिया।

2. भारत के संविधान के 99वें संशोधन को भारत के उच्चतम न्यायालय ने अभिखंडित कर दिया क्योंकि यह न्यायपालिका की स्वतंत्रता का अतिक्रमण करता था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1, न ही 2**

सही उत्तरः **(b)**

व्याख्याः 39वाँ संविधान (संशोधन) अधिनियम, 1975 द्वारा संविधान में अनुच्छेद-329A को जोड़कर राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और लोकसभा अध्यक्ष के निर्वाचन को न्यायिक पुनर्विलोकन से परे कर दिया गया था, जिसे 44वें संविधान (संशोधन) अधिनियम, 1978 की धारा 36 द्वारा निरसित कर दिया गया। अतः कथन 1 गलत है।

- 99वाँ संविधान (संशोधन) अधिनियम, 2014 उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में जजों की नियुक्ति के लिये राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग (NJAC) का प्रावधान करता है। हालाँकि, वर्ष 2015 में उच्चतम न्यायालय ने दिये अपने निर्णय में इस संशोधन को न्यायपालिका की स्वतंत्रता का उल्लंघन मानते हुए इसे असंवैधानिक एवं रद्द घोषित कर दिया। अतः कथन 2 सही है।

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. न्यायाधीश (जाँच) अधिनियम, 1968 के अनुसार, भारत के उच्चतम न्यायालय के किसी न्यायाधीश पर महाभियोग चलाने के प्रस्ताव को लोकसभा के अध्यक्ष द्वारा अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

2. भारत का संविधान यह परिभाषित करता है और ब्यौरे देता है कि क्या-क्या भारत के उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों की 'अक्षमता और सिद्ध कदाचार' को गठित करते हैं।

3. भारत के उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों के महाभियोग की प्रक्रिया के ब्यौरे न्यायाधीश (जाँच) अधिनियम, 1968 में दिये गए हैं।

4. यदि किसी न्यायाधीश के महाभियोग के प्रस्ताव को मतदान हेतु लिया जाता है, तो विधि द्वारा अपेक्षित है कि यह प्रस्ताव संसद के प्रत्येक सदन द्वारा समर्थित हो और उस सदन की कुल सदस्य संख्या के बहुमत द्वारा तथा संसद के उस सदन के कुल उपस्थित और मत देने वाले सदस्यों के कम-से-कम दो-तिहाई द्वारा समर्थित हो।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) 1 और 2 **(b) केवल 3**

(c) केवल 3 और 4 **(d) 1, 3 और 4**

सही उत्तरः **(c)**

व्याख्याः न्यायाधीश (जाँच) अधिनियम, 1968 की धारा 3 के खंड-1 के अनुसार भारत के उच्चतम न्यायालय या उच्च न्यायालयों के किसी न्यायाधीश पर महाभियोग चलाने के प्रस्ताव को लोकसभा के अध्यक्ष अथवा राज्यसभा के सभापति द्वारा स्वीकार या अस्वीकार किया जा सकता है। अतः कथन 1 गलत है।

- कथन 2 भी गलत है क्योंकि संविधान के अनुच्छेद-124(4) में उच्चतम न्यायालय के किसी न्यायाधीश को पदमुक्त करने का आधार (अक्षमता और सिद्ध कदाचार) और प्रक्रिया विहित है, किंतु अक्षमता और कदाचार को परिभाषित नहीं किया गया है।
- गौरतलब है कि कथन 3 और 4 सही हैं। **अतः विकल्प (c) सही उत्तर है।**

4. भारत के संविधान के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. किसी भी केंद्रीय विधि को सांविधानिक रूप से अवैध घोषित करने की किसी भी उच्च न्यायालय की अधिकारिता नहीं होगी।

2. भारत के संविधान के किसी भी संशोधन पर भारत के उच्चतम न्यायालय द्वारा प्रश्न नहीं उठाया जा सकता।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1, न ही 2**

सही उत्तरः **(d)**

व्याख्याः अनुच्छेद-226 के अंतर्गत मूल अधिकारों का अतिक्रमण करने वाली विधि को उच्च न्यायालय असंवैधानिक घोषित करते हुए समाप्त कर सकता है, जैसा कि दिल्ली उच्च न्यायालय ने धारा 377 को समानता के अधिकार के विरुद्ध बताते हुए रद्द कर दिया। अतः कथन 1 गलत है।

केशवानंद भारती वाद (1973) में उच्चतम न्यायालय ने यह स्पष्ट किया है कि आधारभूत ढाँचे के विरुद्ध किसी भी संविधान संशोधन को उच्चतम न्यायालय रद्द कर सकता है और इस आधार पर NJAC अधिनियम को उच्चतम न्यायालय ने निरस्त कर दिया था। अतः कथन (2) भी गलत है।

2017

1. भारत में, न्यायिक पुनरीक्षण का अर्थ है-

(a) विधियों और कार्यपालिक आदेशों की सांविधानिकता के विषय में प्राख्यापन करने का न्यायपालिका का अधिकार।

(b) विधानमंडलों द्वारा निर्मित विधियों के प्रज्ञान को प्रश्नगत करने का न्यायपालिका का अधिकार।

(c) न्यायपालिका का, सभी विधायी अधिनियमनों के, राष्ट्रपति द्वारा उन पर सहमति प्रदान किये जाने के पूर्व, पुनरीक्षण का अधिकार।

(d) न्यायपालिका का, समान या भिन्न वादों में पूर्व में दिये गए स्वयं के निर्णयों के पुनरीक्षण का अधिकार।

सही उत्तरः **(a)**

व्याख्याः न्यायिक समीक्षा विधायी अधिनियमनों तथा कार्यपालिका आदेशों की संवैधानिकता की जाँच की न्यायपालिका की शक्ति है जो केंद्र और राज्य सरकारों पर लागू होती है। **अतः विकल्प (a) सही उत्तर है।**

2016

1. 'ग्राम न्यायालय अधिनियम' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

1. इस अधिनियम के अनुसार ग्राम न्यायालय केवल सिविल मामलों की सुनवाई कर सकता है, आपराधिक मामलों की नहीं।

2. यह अधिनियम स्थानीय सामाजिक सक्रियतावादियों को मध्यस्थ/सुलहकर्त्ता के रूप में स्वीकार करता है।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या:

- इस अधिनियम के अध्याय 3 में धारा 11 के तहत ग्राम न्यायालय सिविल प्रक्रिया संहिता और दंड प्रक्रिया संहिता दोनों के तहत सुनवाई कर सकता है
- इस अधिनियम के अध्याय 5 में धारा 27(1) के अनुसार स्थानीय सामाजिक सक्रियतावादियों को मध्यस्थ/सुलहकर्त्ता के रूप में स्वीकार किया जाता है।

2015

1. निम्नलिखित में से कौन भारत के संविधान का अभिरक्षक (कस्टोडियन) है?

(a) भारत का राष्ट्रपति

(b) भारत का प्रधानमंत्री

(c) लोक सभा सचिवालय

(d) भारत का उच्चतम न्यायालय

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: भारत का उच्चतम न्यायालय संविधान का अभिरक्षक है। जब भी कोई संवैधानिक प्रावधान अस्पष्ट होता है तो उच्चतम न्यायालय उसकी व्याख्या कर उसे स्पष्ट करता है। इसी प्रकार जब भी कोई संसदीय विधान संविधान के आधारभूत ढाँचे का उल्लंघन करता है तो उच्चतम न्यायालय उसे अवैध घोषित कर संविधान के अभिरक्षक की भूमिका अदा करता है।

- केंद्र सरकार ने नौवीं अनुसूची के अंतर्गत कानूनों को शामिल करके उन्हें उच्चतम न्यायालय के परीक्षण से बचाने का प्रयास किया किंतु उच्चतम न्यायालय ने स्पष्ट कर दिया कि यदि नौवीं अनुसूची में शामिल किया गया कोई भी प्रावधान संविधान के उपबंधों का उल्लंघन करता है तो उसका न्यायिक परीक्षण किया जा सकता है।
- केंद्र सरकार ने 24वें संविधान (संशोधन) अधिनियम, 1971 द्वारा उच्चतम न्यायालय की शक्ति (न्यायिक पुनर्विलोकन) को सीमित करने का प्रयास किया, तो उच्चतम न्यायालय ने इसे असंवैधानिक घोषित कर दिया।
- वर्ष 1973 में उच्चतम न्यायालय ने केशवानंद भारती मामले में ऐतिहासिक निर्णय दिया। इसमें उच्चतम न्यायालय ने कहा कि यद्यपि संसद को संविधान के प्रत्येक उपबंध को संशोधित करने का अधिकार है, किंतु संशोधन की इस शक्ति के द्वारा संसद संविधान के आधारभूत ढाँचे का उल्लंघन नहीं कर सकती।
- इस प्रकार उच्चतम न्यायालय ने जहाँ एक ओर समय एवं परिस्थिति के अनुसार संविधान को संशोधित करने का मार्ग प्रशस्त किया है, वहीं इस संशोधन की शक्ति के दुरुपयोग को रोककर संविधान की मौलिकता को भी बरकरार रखा है।

2014

1. केंद्र और राज्यों के बीच होने वाले विवादों का निर्णय करने की भारत के उच्चतम न्यायालय की शक्ति किसके अंतर्गत आती है?

(a) परामर्शी अधिकारिता के अन्तर्गत

(b) अपीली अधिकारिता के अन्तर्गत

(c) मूल अधिकारिता के अन्तर्गत

(d) रिट अधिकारिता के अन्तर्गत

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: केंद्र एवं राज्यों के बीच होने वाले विवादों का निर्णय करने की भारत के उच्चतम न्यायालय की शक्ति मूल अधिकारिता के अंतर्गत आती है। मूल अधिकारिता का तात्पर्य यह है कि किसी अन्य न्यायालय को विवादों के निपटान के संबंध में ऐसी शक्तियाँ प्राप्त नहीं हैं।

उच्चतम न्यायालय की मूल अधिकारिता

- केंद्र व एक या अधिक राज्यों के बीच विवाद, या
- दो या अधिक राज्यों के बीच विवाद, या
- एक ओर भारत सरकार और किसी राज्य या राज्यों और दूसरी ओर एक या एक से अधिक अन्य राज्यों के बीच विवाद।

उच्चतम न्यायालय की अपीली अधिकारिता

उच्चतम न्यायालय अपील का उच्चतम न्यायालय है। कोई भी व्यक्ति उच्च न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध उच्चतम न्यायालय में अपील कर सकता है। वस्तुत: अपीली क्षेत्राधिकार का मतलब यह है कि उच्चतम न्यायालय पूरे मुकदमे पर पुनर्विचार करेगा और उसके कानूनी मुद्दों पर दुबारा विचार एवं जाँच करेगा। उच्चतम न्यायालय की तरह उच्च न्यायालयों को भी अपने नीचे की अदालतों के निर्णय के विरुद्ध अपीली क्षेत्राधिकार प्राप्त है।

उच्चतम न्यायालय की रिट अधिकारिता

व्यक्ति के मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिये बंदी-प्रत्यक्षीकरण, परमादेश, प्रतिषेध, उत्प्रेषण-लेख तथा अधिकार-पृच्छा आदि रिटों को जारी करने का अधिकार उच्चतम न्यायालय को है। यह अधिकार उच्चतम न्यायालय को अनुच्छेद-32 के अंतर्गत प्रदान किया गया है।

उच्चतम न्यायालय की सलाहकारी अधिकारिता

अनुच्छेद-143 के तहत जनहित के मामलों तथा कानून के मसले पर राष्ट्रपति को सलाह देने का अधिकार उच्चतम न्यायालय के पास है किंतु यह सलाह तभी दी जाती है जब राष्ट्रपति सलाह मांगे।

2. भारत के उच्चतम न्यायालय में न्यायाधीशों की संख्या में वृद्धि करने की शक्ति किसमें निहित है?

(a) भारत का राष्ट्रपति **(b) संसद**

(c) भारत का मुख्य न्यायमूर्ति **(d) विधि आयोग**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: भारतीय संविधान के अनुच्छेद-124(1) के तहत उच्चतम न्यायालय में न्यायाधीशों की संख्या में वृद्धि करने की शक्ति **संसद** में निहित है। संविधान में मुख्य न्यायमूर्ति के अतिरिक्त 7 न्यायाधीशों की व्यवस्था की गई थी। संसद द्वारा पारित उच्चतम न्यायालय (न्यायाधीश संख्या) संशोधन अधिनियम, 2019 के संशोधनानुसार स्वीकृत संख्या 33 (मुख्य न्यायमूर्ति के अतिरिक्त) हो गई है।

2012

1. निम्नलिखित में से कौन-से उच्चतम न्यायालय की आरंभिक अधिकारिता में आते हैं?

1. भारत सरकार तथा एक या अधिक राज्यों के बीच का विवाद

2. संसद के किसी सदन या राज्य विधान मंडल में हुए चुनाव पर विवाद

3. भारत सरकार तथा किसी संघ राज्यक्षेत्र के बीच का विवाद

4. दो या अधिक राज्यों के बीच का विवाद

निम्नलिखित कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिये-

(a) 1 और 2 **(b) 2 और 3**

(c) 1 और 4 **(d) 3 और 4** *सही उत्तरः* **(c)**

व्याख्याः उच्चतम न्यायालय की आरंभिक अधिकारिता में निम्नलिखित पक्षों को शामिल किया जाता है-

- केंद्र व एक या अधिक राज्यों के बीच का विवाद, या
- दो या अधिक राज्यों के बीच का विवाद, या
- एक ओर भारत सरकार और किसी राज्य या राज्यों और दूसरी ओर एक या एक से अधिक अन्य राज्यों के बीच का विवाद।

2. भारत के उच्चतम न्यायालय की स्वायत्तता की रक्षा हेतु क्या प्रावधान हैं?

1. उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति करते समय भारत के राष्ट्रपति को भारत के मुख्य न्यायाधीश से विचार-विमर्श करना पड़ता है।

2. उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों को केवल भारत के मुख्य न्यायाधीश द्वारा हटाया जा सकता है।

3. न्यायाधीशों का वेतन भारत की संचित निधि पर आरोपित होता है, जिस पर विधानमंडल को अपना मत नहीं देना होता है।

4. भारत के उच्चतम न्यायालय के अफसरों और कर्मचारियों की सभी नियुक्तियाँ सरकार द्वारा भारत के मुख्य न्यायाधीश से विचार-विमर्श के पश्चात् ही की जाती हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 3 **(b) केवल 3 और 4**

(c) केवल 4 **(d) 1, 2, 3 और 4**

सही उत्तरः **(a)**

व्याख्याः भारतीय संविधान के अनुच्छेद-124(2) के परंतुक में स्पष्ट किया गया है कि मुख्य न्यायाधीश को छोड़कर किसी अन्य न्यायाधीश की नियुक्ति की स्थिति में राष्ट्रपति के द्वारा सदैव भारत के मुख्य न्यायाधीश से परामर्श किया जाएगा। अतः कथन (1) सही है।

- उच्चतम न्यायालय के किसी न्यायाधीश को उसके पद से साबित कदाचार या असमर्थता के आधार पर संसद के प्रत्येक सदन द्वारा अपनी कुल सदस्य संख्या के बहुमत तथा उपस्थित और मत देने वाले सदस्यों के कम-से-कम दो-तिहाई बहुमत समर्थित समावेदन और राष्ट्रपति द्वारा उसी सत्र में हस्ताक्षर से ही हटाया जा सकेगा।
- उच्चतम न्यायालयों के न्यायाधीशों का वेतन भारत की संचित निधि पर भारित होता है। अनुच्छेद-113(1) के अनुसार जो व्यय भारत की संचित निधि पर भारित होते हैं वे संसद में मतदान के लिये नहीं रखे जाएंगे। अतः कथन (3) सही है।
- अनुच्छेद-146(1) में यह बात स्पष्ट की गई है कि उच्चतम न्यायालय के अधिकारियों और सेवकों की नियुक्तियाँ भारत का मुख्य न्यायाधीश या ऐसा कोई अधिकारी करेगा जिसे वह निर्दिष्ट करे।

स्थानीय शासन

2025

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजियेः

I. मध्यवर्ती स्तर पर पंचायतें सभी राज्यों में विद्यमान हैं।

II. मध्यवर्ती स्तर पर किसी पंचायत में सदस्य होने हेतु पात्र होने के लिये किसी व्यक्ति को तीस वर्ष की आयु प्राप्त होनी चाहिये।

III. किसी राज्य का मुख्यमंत्री मध्यवर्ती स्तरों पर पंचायतों की वित्तीय दशा के पुनरीक्षण के लिये और राज्य द्वारा उद्गृहीत करों और शुल्कों के निवल आगम को मध्यवर्ती स्तर पर राज्य और पंचायतों के बीच वितरित करने हेतु सिफारिशें करने के लिये एक आयोग का गठन करता है।

उपर्युक्त में कौन-कौन से कथन सही नहीं हैं?

(a) केवल I और II **(b) केवल II और III**

(c) केवल I और III **(d) I, II और III**

सही उत्तरः **(d)**

व्याख्याः

- **पंचायतें:** 73वें संशोधन अधिनियम, 1992 ने पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा दिया। इस संशोधन के माध्यम से पंचायती राज संस्थाओं को संविधान के न्यायालय द्वारा लागू किये जा सकने वाले भाग (Justiciable Part) के अंतर्गत लाया गया।
- **मुख्य विशेषताएँ:** अधिनियम प्रत्येक राज्य में पंचायती राज की त्रिस्तरीय व्यवस्था का प्रावधान करता है, अर्थात् ग्राम, मध्यवर्ती और ज़िला स्तर पर पंचायतें। हालाँकि, 20 लाख से अधिक जनसंख्या वाले राज्य मध्यवर्ती स्तर पर पंचायतों का गठन नहीं कर सकते हैं। **अतः कथन I सही नहीं है।**
- कोई भी व्यक्ति मध्यवर्ती स्तर पर किसी पंचायत में सदस्य होने से इस आधार पर अयोग्य नहीं ठहराया जाएगा कि उसकी आयु 25 वर्ष से कम है, यदि उसने 21 वर्ष की आयु प्राप्त कर ली है। इसका अर्थ है कि मध्यवर्ती स्तर पर पंचायत का सदस्य बनने के लिये न्यूनतम आयु 21 वर्ष है। **अतः कथन II सही नहीं है।**
- राज्य का राज्यपाल (मुख्यमंत्री नहीं) प्रत्येक पाँच वर्ष के पश्चात् पंचायतों की वित्तीय स्थिति की समीक्षा करने तथा राज्य द्वारा लगाए जाने वाले करों और शुल्कों की शुद्ध आय के वितरण के संबंध में

सिफारिशें करने के लिये एक वित्त आयोग का गठन करता है, जिसमें मध्यवर्ती स्तर पर राज्य और पंचायतों के बीच वितरण भी शामिल है। **अतः कथन III सही नहीं है। अतः विकल्प (d) सही है।**

2024

1. भारत के संविधान के संबंध में निम्नलिखित कथनों में से कौन-से सही हैं?

1. नगरपालिकाओं की शक्तियाँ संविधान के भाग 9-क में दी गई हैं।

2. आपात उपबंध संविधान के भाग 18 में दिये गए हैं।

3. संविधान के संशोधन से संबंधित उपबंध संविधान के भाग 20 में दिये गए हैं।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर उत्तर चुनिये:

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

सही उत्तर: **(d)**

व्याख्याः

- **संविधान के भाग 9-क** को संविधान (चौहत्तरवाँ संशोधन) अधिनियम, 1992 द्वारा सम्मिलित किया गया था। **इसमें नगरीय स्तर पर स्थानीय स्वशासन अथवा नगर पालिकाओं संबंधी प्रावधान किये गए हैं। अतः कथन 1 सही है।**
- संविधान के **भाग 18** में **राष्ट्रीय, राज्य सहित वित्तीय आपात स्थितियों** आपात उपबंधों के लिये प्रावधान हैं। **अतः कथन 2 सही है।**
- संविधान के **भाग 20 में अनुच्छेद-368 संविधान और उसके उपबंधों** में संशोधन करने की संसद की शक्ति से संबंधित है। इसमें कहा गया है कि संसद इस उद्देश्य के लिये निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार किसी भी प्रावधान को जोड़ने, बदलने या निरस्त करने के माध्यम से संविधान में संशोधन कर सकती है। **अतः कथन 3 सही है। अतः विकल्प (d) सही है।**

2021

1. राष्ट्रीय स्तर पर, अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिये कौन-सा मंत्रालय केंद्रक अभिकरण (नोडल एजेंसी) है?

(a) पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

(b) पंचायती राज मंत्रालय

(c) ग्रामीण विकास मंत्रालय

(d) जनजातीय कार्य मंत्रालय

सही उत्तर: **(d)**

व्याख्याः अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 की धारा-11 में यह प्रावधान है कि जनजातीय कार्य से संबंधित केंद्र सरकार का मंत्रालय या इस संबंध में केंद्र सरकार द्वारा अधिकृत कोई अधिकारी या प्राधिकरण अधिनियम के प्रावधानों के कार्यान्वयन के लिये नोडल एजेंसी होगा। अतः विकल्प (d) सही उत्तर होगा।

2017

1. स्थानीय स्वशासन की सर्वोत्तम व्याख्या यह की जा सकती है कि यह एक प्रयोग है

(a) संघवाद का

(b) लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण का

(c) प्रशासकीय प्रत्यायोजन का

(d) प्रत्यक्ष लोकतंत्र का

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्याः लोकतंत्र में शासन के सभी स्तरों पर जनता की भागीदारी सुनिश्चित करने में स्थानीय स्वशासन की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके दो मूल तत्त्व हैं– (1) यह राज्य की शासन व्यवस्था को निचले स्तर तक विकेंद्रीकृत करता है। (2) यह लोकतंत्र में स्थानीय लोगों की प्रत्यक्ष भागीदारी को संभव बनाता है। भारत में 25 अप्रैल, 1993 के 73वें संविधान संशोधन के माध्यम से पंचायती राज प्रणाली द्वारा लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को मूर्त रूप प्रदान किया गया है। अतः विकल्प (b) सही है।

2016

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. किसी भी व्यक्ति के लिये पंचायत का सदस्य बनने के लिये न्यूनतम निर्धारित आयु 25 वर्ष है।

2. पंचायत के समयपूर्व भंग होने के पश्चात् पुनर्गठित पंचायत केवल अवशिष्ट समय के लिये ही जारी रहती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्याः अनुच्छेद-243च के अनुसार पंचायत का सदस्य बनने के लिये न्यूनतम आयु 21 वर्ष है। अनुच्छेद&243ड.(4) के अनुसार समयपूर्व भंग पंचायत के स्थान पर पुनर्गठित पंचायत केवल अवशिष्ट समय के लिये कार्य करती है।

2015

1. पंचायती राज व्यवस्था का मूल उद्देश्य क्या सुनिश्चित करना है?

1. विकास में जन-भागीदारी

2. राजनीतिक जवाबदेही

3. लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण

4. वित्तीय संग्रहण (फाइनेंशियल मोबिलाइज़ेशन)

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1, 2 और 3 **(b) केवल 2 और 4**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2, 3 और 4**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: विकास की प्रक्रिया में जन-भागीदारी को सुनिश्चित करना तथा लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को बढ़ावा देना ही पंचायती राज व्यवस्था का मूल उद्देश्य है।

- सरकार की प्रणाली को स्थानीय स्तर तक पहुँचाने के लिये ही पंचायती राज व्यवस्था को लागू किया गया।
- 73वें संविधान (संशोधन) अधिनियम, 1992 द्वारा पंचायती राज व्यवस्था को संवैधानिक स्थिति प्रदान की गई।
- पंचायती राज व्यवस्था के माध्यम से लोकतंत्र को स्थानीय स्तर पर लागू किया गया जिससे भारत में केंद्र, राज्य एवं स्थानीय स्तर पर (त्रिस्तरीय) लोकतांत्रिक प्रणाली को वास्तविक स्वरूप प्रदान किया जा सका।
- पंचायती राज व्यवस्था के तहत मतदाताओं के द्वारा जनप्रतिनिधियों का चुनाव किया जाता है। इसका सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि स्थानीय स्तर पर लोग अपने जनप्रतिनिधियों के माध्यम से स्थानीय सरकार में भागीदारी करने लगें।

2013

1. सरकार ने अनुसूचित क्षेत्रों में पंचायत विस्तार (PESA) अधिनियम को 1996 में अधिनियमित किया। निम्नलिखित में से कौन-सा एक उसके उद्देश्य के रूप में अभिज्ञात नहीं है?

(a) स्वशासन प्रदान करना

(b) पारम्परिक अधिकारों को मान्यता देना

(c) जनजातीय क्षेत्रों में स्वायत्त क्षेत्रों का निर्माण करना

(d) जनजातीय लोगों को शोषण से मुक्त कराना

सही उत्तर: (c)

व्याख्या:

- सरकार द्वारा अनुसूचित क्षेत्रों में पंचायत विस्तार (PESA) अधिनियम, 1996 के लागू करने के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-
- ग्राम सभा के **पारंपरिक अधिकारों को मान्यता** प्रदान करना (जैसे-लघु वनोपजों का स्वामित्व), विवाद समाधान के परंपरागत तरीके की रक्षा एवं संरक्षण आदि।
- ग्राम सभा को स्वशासन का अधिकार प्रदान करना (जैसे-लघु जल निकायों की योजना एवं प्रबंधन, गरीबी उन्मूलन एवं अन्य कार्यक्रमों की योजना एवं प्रबंधन, गरीबी उन्मूलन एवं अन्य कार्यक्रमों के अंतर्गत लाभार्थियों के रूप में व्यक्तियों की पहचान आदि)।
- जनजातीय लोगों को **शोषण से मुक्त** कराना (जैसे-अवैध भूमि हस्तांतरण रोकना एवं हस्तांतरित भूमि की बहाली, भूमि अधिग्रहण, पुनर्वास एवं पुनर्स्थापना में ग्राम सभा से अनिवार्य परामर्श आदि) किंतु, जनजातीय क्षेत्रों में स्वायत्त क्षेत्रों का निर्माण करना इस अधिनियम का उद्देश्य नहीं है। अतः विकल्प (c) सही उत्तर होगा।

2. अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पारम्परिक वनवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 के अधीन, व्यक्तिगत या सामुदायिक वन अधिकारों अथवा दोनों की प्रकृति एवं विस्तार के निर्धारण की प्रक्रिया को प्रारंभ करने के लिये कौन प्राधिकारी होगा?

(a) राज्य वन विभाग

(b) ज़िला कलक्टर/उपायुक्त

(c) तहसीलदार/खण्ड विकास अधिकारी/मण्डल राजस्व अधिकारी

(d) ग्राम सभा

सही उत्तर: (d)

व्याख्या:

- इस अधिनियम के अनुसार वन अधिकारों की प्रकृति एवं सीमा का निर्धारण करने के लिये प्रक्रिया प्रारंभ करने एवं उससे संबंधित दावों की सुनवाई का अधिकार 'ग्राम सभा' को है। अतः विकल्प (d) सही है।
- जनजातीय मामलों का मंत्रालय 'अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पारंपरिक वनवासी' (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 को लागू करने के लिये नोडल एजेंसी है। यह अधिनियम वन क्षेत्रों में रहने वाली अनुसूचित जनजातियों एवं परंपरागत निवासियों के वन अधिकारों एवं व्यवसाय की पहचान करता है एवं उन्हें मान्यता देने के लिये नियम बनाने की सिफारिश करता है।

2012

1. पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों में विस्तार) अधिनियम, 1996 के अंतर्गत समाविष्ट क्षेत्रों में ग्राम सभा की क्या भूमिका/शक्ति है?

1. ग्राम सभा के पास अनुसूचित क्षेत्रों में भूमि का हस्तांतरण रोकने की शक्ति होती है।

2. ग्राम सभा के पास लघु वनोपज का स्वामित्व होता है।

3. अनुसूचित क्षेत्रों में किसी भी खनिज के लिये खनन का पट्टा अथवा पूर्वेक्षण लाइसेंस प्रदान करने हेतु ग्राम सभा की अनुशंसा आवश्यक है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 1 और 2**

(c) केवल 2 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों में विस्तार) अधिनियम, 1996 [Panchayats (Extension to Scheduled Areas) Act, 1996] में यह प्रावधान किया गया है कि अनुसूचित क्षेत्रों में भूमि अधिग्रहण से पूर्व ग्राम सभा अथवा पंचायतों से सलाह लेना ज़रूरी होगा। इस प्रकार स्पष्ट है कि अनुसूचित क्षेत्रों में ग्राम सभा के पास भूमि का हस्तांतरण रोकने की शक्ति होती है। अतः कथन (1) सही है।

- अनुसूचित क्षेत्रों में ग्राम सभा को लघु वन उपजों पर स्वामित्व का अधिकार प्रदान किया गया है। अत: कथन (2) भी सही है।
- अनुसूचित क्षेत्रों में केवल लघु खनिजों के मामले में खनन का पट्टा और लाइसेंस प्रदान करने तथा नीलामी के द्वारा लघु खनिजों के उपयोग के लिये छूट प्रदान करने के मामले में ग्राम सभा की अनुशंसा अनिवार्य है किंतु लघु खनिजों के अतिरिक्त अन्य खनिजों के मामले में ग्राम सभा/पंचायतों को ऐसा कोई अधिकार नहीं है। अत: कथन (3) असत्य है।

2011

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-
भारत में महानगर योजना समिति
1. भारतीय संविधान के प्रावधानों के अंतर्गत गठित होती है।
2. उस महानगरीय क्षेत्र के लिये विकास योजना प्रारूप तैयार करती है।
3. उस महानगरीय क्षेत्र में सरकार की प्रायोजित योजनाओं को लागू करने का पूर्ण दायित्व पूरा करती है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2**
(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: भारतीय संविधान के अनुच्छेद-243यङ में महानगर योजना समिति के गठन के संबंध में प्रावधान किया गया है। अत: कथन (1) सही है।

- अनुच्छेद-243यङ (1) के अनुसार, प्रत्येक महानगर क्षेत्र के लिये विकास योजना का प्रारूप तैयार करने के लिये एक महानगर योजना समिति का गठन किया जाएगा। अत: कथन (2) सही है।
- महानगर योजना समिति का कार्य केवल विकास योजना को राज्य सरकार तक भेजना है न कि सरकार की प्रायोजित योजनाओं को लागू करना। अत: कथन (3) असत्य है।

संविधान के अनुच्छेद-243यङ (4) के अनुसार प्रत्येक महानगर योजना समिति का अध्यक्ष महानगर से संबंधित विकास योजना को राज्य सरकार को भेजेगा।

2. संविधान (73वाँ संशोधन) अधिनियम, 1992 जिसका लक्ष्य देश में पंचायती राज संस्थाओं को प्रोत्साहन प्रदान करना है, निम्नलिखित में से किस/किन चीज़ों की व्यवस्था करता है?
1. ज़िला योजना समितियों का गठन करने की
2. राज्य निर्वाचन आयोगों द्वारा सभी पंचायतों का चुनाव करने की
3. राज्य वित्त आयोगों की स्थापना करने की
निम्नलिखित कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिये-
(a) केवल 1 **(b) केवल 1 और 2**
(c) केवल 2 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: ज़िला योजना समितियों को गठित करने का प्रावधान 74वें संविधान (संशोधन) अधिनियम, 1992 के द्वारा भाग 9(क) के नगरपालिकाओं से संबंधित खण्ड में किया गया है। अनुच्छेद-243यघ में ज़िला योजना समिति के लिये प्रावधान किया गया है। अत: कथन (1) असत्य है।

- 73वें संविधान (संशोधन) अधिनियम, 1992 के अनुच्छेद 243ट में राज्य निर्वाचन आयोगों के द्वारा सभी पंचायतों का चुनाव कराने का प्रावधान किया गया है। अत: कथन (2) सही है।
- अनुच्छेद-243झ में राज्य वित्त आयोगों की स्थापना करने का प्रावधान किया गया है। अत: कथन (3) सही है।

नोट: संघ लोक सेवा आयोग द्वारा जारी उत्तर कुंजी में उपर्युक्त प्रश्न का सही उत्तर विकल्प (d) माना गया है।

संविधान संशोधन

2025

1. भारत के संविधान के अधीन निम्नलिखित विषयों पर विचार कीजिये:
I. सातवीं अनुसूची में सूची I-संघ सूची
II. किसी राज्य की कार्यपालिका शक्ति का विस्तार
III. राज्यपाल के पद के लिये शर्तें
उपर्युक्त में से किसके संबंध में संविधान संशोधन के लिये भारत के राष्ट्रपति को अनुमति के लिये विधेयक प्रस्तुत किये जाने से पूर्व, कम-से-कम आधे राज्यों के विधान-मंडलों द्वारा अनुसमर्थन अपेक्षित है?
(a) केवल I और II **(b) केवल II और III**
(c) केवल I और III **(d) I, II और III**

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: भारतीय संविधान के अनुच्छेद-368(2) के अनुसार, यदि कोई विधेयक भारतीय राजनीति के संघीय ढाँचे से संबंधित कुछ विशिष्ट प्रावधानों में परिवर्तन से संबंधित है, तो उसे राष्ट्रपति की स्वीकृति प्राप्त करने से पहले संसद के विशेष बहुमत से पारित होना तथा कम-से-कम आधे राज्य विधानसभाओं द्वारा अनुमोदित होना आवश्यक है।

- **इनमें शामिल हैं:**
  - अनुच्छेद-54, अनुच्छेद-55, अनुच्छेद-73, अनुच्छेद-162 या अनुच्छेद-241
    - अनुच्छेद-162 में राज्य की कार्यपालिका शक्ति का विस्तार शामिल है।
  - भाग V का अध्याय IV, भाग VI का अध्याय V, या भाग XI का अध्याय I
  - सातवीं अनुसूची की कोई भी सूची
  - संसद में राज्यों का प्रतिनिधित्व
  - अनुच्छेद-368 के प्रावधान।

- राज्यपाल के पद की शर्तों का उल्लेख संविधान के भाग VI के अध्याय II के अनुच्छेद-158 में किया गया है, जो स्पष्ट रूप से उपरोक्त सूची में शामिल नहीं है। **अतः विकल्प (a) सही है।**

2024

1. संविधान (71वें संशोधन) अधिनियम, 1992 के द्वारा निम्नलिखित में से किस भाषा को शामिल करने के लिये संविधान की आठवीं अनुसूची में संशोधन किया गया है?

1. कोंकणी
2. मणिपुरी
3. नेपाली
4. मैथिली

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

(a) 1, 2 और 3 (b) 1, 2 और 4
(c) 1, 3 और 4 (d) 2, 3 और 4

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: आठवीं अनुसूची:

- **इसमें भारत गणराज्य की आधिकारिक भाषाओं की सूची दी गई है। भारतीय संविधान के भाग XVII में अनुच्छेद-343 से 351 तक आधिकारिक भाषाओं का उल्लेख है।**
- संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाएँ सम्मिलित है हालाँकि संविधान के प्रारंभ में 14 भाषाओं का उल्लेख किया गया था। वर्ष 1967 में **सिंधी** भाषा को इसमें जोड़ा गया।
- 71वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 द्वारा **कोंकणी, मणिपुरी एवं नेपाली** को इसमें जोड़ा गया। इसके साथ ही आठवीं अनुसूची में भाषाओं की कुल संख्या बढ़कर 18 हो गई।
- **बोडो, डोगरी, मैथिली एवं संथाली** को 92वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2003 द्वारा जोड़ा गया जो वर्ष 2004 में लागू हुआ। वर्तमान में संविधान की आठवीं अनुसूची में कुल 22 भाषाएँ शामिल हैं। **अतः विकल्प (a) सही है।**

2. 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. **ये उपबंध 18वीं लोकसभा से प्रभावी होंगे।**
2. **अधिनियम बनने के बाद यह 15 वर्षों के लिये प्रवर्तन में रहेगा।**
3. **इसमें अनुसूचित जातियों के लिये आरक्षित कोटे के भीतर अनुसूचित जातियों की महिलाओं के लिये स्थानों के आरक्षण के उपबंध हैं।**

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) 1, 2 और 3 (b) केवल 1 और 2
(c) केवल 2 और 3 (d) केवल 1 और 3

सही उत्तर: (c)

व्याख्या:

नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023

संविधान (106वाँ संशोधन) अधिनियम, 2023 लोकसभा, राज्य विधानसभाओं तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की विधानसभा में महिलाओं के लिये **एक तिहाई सीटें आरक्षित** करता है, जिनमें **अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों के लिये आरक्षित सीटें भी शामिल** हैं। **अतः कथन 3 सही है।**

- यह **अधिनियम परिसीमन की प्रक्रिया शुरू होने के बाद प्रभावी होगा** जो जनगणना होने के बाद ही किया जा सकता है।
- **18वीं लोकसभा के चुनावों** के पश्चात् जनगणना एवं परिसीमन किया जाएगा तथा उसके बाद ही अधिनियम लागू किया जाएगा। **अतः कथन 1 सही नहीं है।**
- आरक्षण अधिनियम के लागू होने के बाद आयोजित जनगणना के प्रकाशन के बाद प्रभावी होगा और साथ ही **15 वर्ष की अवधि तक प्रवर्तन** में रहेगा, जिसका संभावित विस्तार संसदीय कार्रवाई द्वारा निर्धारित किया जाएगा। **अतः कथन 2 सही है।**

2023

1. भारत में, निम्नलिखित में से किस संविधान संशोधन के लिये व्यापक रूप से यह माना गया है कि उसे मूल अधिकारों की न्यायिक व्याख्या को अधिभूत करने के लिये अधिनियमित किया गया?

(a) पहला संशोधन (b) 42वाँ संशोधन
(c) 44वाँ संशोधन (d) 86वाँ संशोधन

सही उत्तर: (*)

व्याख्या: प्रथम संविधान संशोधन अधिनियम, 1951:

- मामलों में शामिल मुद्दों में **भाषण/वाक् की स्वतंत्रता, ज़मींदारी भूमि का अधिग्रहण, व्यापार का राज्य एकाधिकार आदि**शामिल थे।
- **वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता** पर प्रतिबंध के तीन और आधार जोड़े गए: लोक व्यवस्था, विदेशी राज्यों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध और अपराध के लिये उकसाना। साथ ही, इसने प्रतिबंधों को **'युक्ति-युक्त'** और इस प्रकार, प्रकृति में न्यायसंगत बना दिया।

> **नोटः** संभवतः इसका उत्तर (a) होना चाहिये परंतु संघ लोक सेवा आयोग द्वारा इस प्रश्न को हटा दिया गया।

2022

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. **किसी संविधान संशोधन विधेयक को भारत के राष्ट्रपति की पूर्व सिफारिश की अपेक्षा होती है।**
2. **जब कोई संविधान संशोधन विधेयक भारत के राष्ट्रपति के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है, तो भारत के राष्ट्रपति के लिए यह बाध्यकर है कि वे अपनी अनुमति दें।**
3. **संविधान संशोधन विधेयक लोक सभा और राज्य सभा दोनों द्वारा विशेष बहुमत से पारित होना ही चाहिए और इसके लिए संयुक्त बैठक का कोई उपबंध नहीं है।**

उपर्युक्त कथनों में कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: संविधान संशोधन विधेयक को किसी मंत्री या गैर सरकारी सदस्य द्वारा पुर:स्थापित किया जा सकता है और इसके लिये राष्ट्रपति की पूर्व सिफारिश आवश्यक नही है। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**

- राष्ट्रपति विधेयक को सहमति/अनुमति देने के लिये बाध्य है। वह न तो विधेयक को अपने पास रख सकता है और न ही संसद के पास पुनर्विचार के लिये भेज सकता है। **अत: कथन 2 सही है।**
- संविधान संसोधन विधेयक का प्रत्येक सदन में अलग-अलग पारित होना अनिवार्य है। दोनों सदनों के बीच असहमति की स्थिति में दोनों सदनों की संयुक्त बैठक का कोई उपबंध नही है। **अत: कथन 3 सही है। अत: कथन (b) सही है।**

आयोग/परिषद्/अधिकरण

2025

1. भारत सरकार के संदर्भ में निम्नलिखित सूचना पर विचार कीजिये:

	संगठन	इस संगठन के कुछ कार्य	यह संगठन किसके अधीन कार्य करता है
I.	प्रवर्तन निदेशालय	भगोड़ा आर्थिक अपराधी अधिनियम, 2018 का प्रवर्तन	आंतरिक सुरक्षा प्रभाग-I, गृह मंत्रालय
II.	राजस्व आसूचना निदेशालय	सीमा-शुल्क अधिनियम, 1962 के उपबंधों को प्रवर्तित करना	राजस्व विभाग, वित्त मंत्रालय
III.	प्रणाली एवं आँकड़ा (सिस्टम्स ऐंड डेटा) प्रबंधन महानिदेशालय	बेहतर नीति और कर-वंचकों को पकड़ने में कर अधिकारियों की सहायता के लिये वृहत आँकड़ा (डेटा) विश्लेषण का उपयोग करना	राजस्व विभाग, वित्त मंत्रालय

उपर्युक्त में से कितनी पंक्तियों में सूचना सही सुमेलित है?

(a) केवल एक **(b) केवल दो**

(c) सभी तीन **(d) किसी में नहीं**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या:

I. प्रवर्तन निदेशालय

- **कार्य:** भगोड़ा आर्थिक अपराधी अधिनियम, 2018 (Fugitive Economic Offenders Act, 2018) का प्रवर्तन सही है।
- **कार्यात्मक नियंत्रण:** आंतरिक सुरक्षा प्रभाग-I, गृह मंत्रालय – सही नहीं है।
  - प्रवर्तन निदेशालय (ED) गृह मंत्रालय के अंतर्गत नहीं, बल्कि राजस्व विभाग, वित्त मंत्रालय के अधीन कार्य करता है।
- **भगोड़ा आर्थिक अपराधी अधिनियम, 2018 (FEOA):** हाल के वर्षों में ऐसे आर्थिक अपराधियों की संख्या में वृद्धि हुई है, जो विदेशों में जाकर शरण ले लेते हैं। इस स्थिति से निपटने के लिये भारत सरकार ने भगोड़ा आर्थिक अपराधी अधिनियम, 2018 लागू किया और इसके प्रवर्तन की ज़िम्मेदारी ED को सौंपी गई।

अत: युग्म I सही सुमेलित नहीं है।

II. राजस्व आसूचना निदेशालय राजस्व आसूचना निदेशालय

- **कार्य:** सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 (Customs Act, 1962) के प्रावधानों का प्रवर्तन करता है- सही है।
- **कार्यात्मक नियंत्रण:** राजस्व विभाग, वित्त मंत्रालय - सही है।
  - DRI, सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 के साथ-साथ आयुध अधिनियम (Arms Act), स्वापक औषधि और मन:प्रभावी पदार्थ अधिनियम (NDPS Act), विदेशी मुद्रा संरक्षण और तस्करी निवारण अधिनियम (COFEPOSA), वन्यजीव संरक्षण अधिनियम (Wildlife Act), पुरावशेष अधिनियम (Antiquities Act) सहित पचास से अधिक संबंधित अधिनियमों का भी प्रवर्तन करता है।

  अत: युग्म II सही सुमेलित है।

III. प्रणाली एवं आँकड़ा (सिस्टम्स एंड डेटा) प्रबंधन महानिदेशालय

- **कार्य:** कर अधिकारियों को बेहतर नीति निर्धारण में सहायता देने और कर की चोरी करने वालों को पकड़ने के लिये बिग डेटा एनालिसिस (Big Data Analytics) करना - सही है।
- **कार्यात्मक नियंत्रण:** राजस्व विभाग, वित्त मंत्रालय

अत: युग्म III सही सुमेलित है। अत: विकल्प (b) सही है।

2. लोकपाल के विषय में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

I. लोकपाल की शक्ति भारत के लोक सेवकों पर प्रयुक्त होती है किंतु भारत से बाहर पदस्थापित भारतीय लोक सेवकों पर प्रयुक्त नहीं होती।

II. संसद का कोई सदस्य या किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र के विधानमंडल का कोई सदस्य इसका अध्यक्ष या सदस्य नहीं होगा और केवल भारत का मुख्य न्यायमूर्ति, चाहे वो पदधारी हो या सेवानिवृत्त, इसका अध्यक्ष होगा।

III. इसका अध्यक्ष या सदस्य, अध्यक्ष या सदस्य के रूप में पद धारण करने की तारीख को पैंतालीस वर्ष से कम वय का व्यक्ति नहीं होगा।

IV. लोकपाल भारत के पदासीन प्रधानमंत्री के विरुद्ध भ्रष्टाचार के अभिकथनों की जाँच नहीं कर सकता।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं?

(a) केवल III

(b) केवल II और III

(c) केवल I और IV

(d) उपर्युक्त कथनों में से कोई भी सही नहीं है

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः लोकपाल और लोकायुक्त अधिनियम, 2013 की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

- **अधिकार क्षेत्रः** लोकपाल का अधिकार क्षेत्र सभी श्रेणियों के लोक सेवकों को शामिल करेगा, जिनमें समूह 'A', समूह 'B', समूह 'C' और समूह 'D' के सरकारी अधिकारी और कर्मचारी शामिल हैं।
  - यह अधिनियम संपूर्ण भारत पर लागू होता है और देश के भीतर और बाहर दोनों स्थानों पर कार्यरत लोक सेवकों पर भी लागू होता है। **अतः कथन I सही नहीं है।**
- **संरचनाः** लोकपाल की संरचना इस प्रकार होती है:
  - एक अध्यक्ष, जो भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश, उच्चतम न्यायालय का पूर्व न्यायाधीश या ऐसा प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है जो विशिष्ट पात्रता मानदंडों को पूरा करता हो। **अतः कथन II सही नहीं है।**
  - अधिकतम 8 सदस्य होते हैं, जिनमें से 50% सदस्य न्यायिक सदस्य (न्यायाधीश) होते हैं और कम-से-कम 50% सदस्य अनुसूचित जाति (SC), अनुसूचित जनजाति (ST), अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC), अल्पसंख्यक एवं महिलाएँ होनी चाहिये।
- अध्यक्ष या सदस्य, संसद के सदस्य या किसी राज्य या केंद्रशासित प्रदेश के विधान सभा/विधान परिषद के सदस्य नहीं हो सकते।
- **अयोग्यताएँः** अध्यक्ष या सदस्य, जैसा भी मामला हो, पदभार ग्रहण करने की तिथि पर, पैंतालीस वर्ष से कम आयु का व्यक्ति नहीं होना चाहिये। **अतः कथन III सही है।**
- **प्रधानमंत्री का समावेशः** लोकपाल प्रधानमंत्री के विरुद्ध शिकायत में लगाए गए भ्रष्टाचार के आरोपों की जाँच कर सकता है। **अतः कथन IV सही नहीं है।** हालाँकि, कुछ अपवाद हो सकते हैं।
- लोकपाल प्रधानमंत्री के विरुद्ध आरोपों की जाँच नहीं कर सकता यदि:
  - मामला अंतर्राष्ट्रीय संबंध, सुरक्षा (बाह्य या आंतरिक), सार्वजनिक व्यवस्था, परमाणु ऊर्जा या अंतरिक्ष से संबंधित है।
- जब तक लोकपाल की पूर्ण पीठ (अध्यक्ष और सभी सदस्य) मामले को हाथ में लेने का निर्णय नहीं ले लेती और कम-से-कम दो-तिहाई सदस्य जाँच को मंजूरी नहीं दे देते। **अतः विकल्प (a) सही है।**

3. भारत के संदर्भ में, निम्नलिखित पर विचार कीजियेः

I. अंतर-राज्य परिषद **II. राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद**

III. क्षेत्रीय परिषदें

उपर्युक्त में से कितनी भारत के संविधान के उपबंधों के अनुसार स्थापित हुई?

(a) केवल एक **(b) केवल दो**

(c) सभी तीन **(d) कोई भी नहीं**

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः अनुच्छेद-263 राष्ट्रपति को अंतर-राज्य परिषद स्थापित करने का अधिकार प्रदान करता है, यदि उसे लगता है कि यह सार्वजनिक हित में है और वह केंद्र-राज्य तथा अंतर-राज्यीय समन्वय को बढ़ावा देने के लिये इसके कर्त्तव्यों, संगठनात्मक संरचना एवं प्रक्रियाओं को निर्दिष्ट कर सकता है।

- इस प्रकार, सरकारिया आयोग की सिफारिशों के अनुसरण में, वी.पी. सिंह के नेतृत्व वाली जनता दल सरकार ने वर्ष 1990 में अंतर-राज्य परिषद की स्थापना की। **अतः बिंदु I सही है।**
- राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद (एनएससी) संवैधानिक निकाय नहीं है। इसकी स्थापना वर्ष 1999 में भारत सरकार द्वारा एक कार्यकारी आदेश के माध्यम से राष्ट्रीय सुरक्षा एवं रणनीतिक हितों पर प्रधानमंत्री को सलाह देने हेतु की गई थी। **अतः बिंदु II सही है।**
- क्षेत्रीय परिषदों की स्थापना संविधान के किसी प्रावधान के तहत नहीं बल्कि राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 के तहत की गई थी। ये संवैधानिक निकाय नहीं, बल्कि वैधानिक निकाय हैं।
  - इस अधिनियम ने देश को पाँच क्षेत्रों (उत्तरी, मध्य, पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी) में विभाजित किया तथा प्रत्येक क्षेत्र के लिये एक क्षेत्रीय परिषद की व्यवस्था की।
- एक और क्षेत्रीय परिषद अर्थात् उत्तर-पूर्वी परिषद का गठन संसद के एक अलग अधिनियम-पूर्वोत्तर परिषद अधिनियम 1971 द्वारा किया गया। **अतः बिंदु III सही नहीं है। अतः विकल्प (a) सही है।**

4. निम्नलिखित क्रियाकलापों पर विचार कीजियेः

I. कच्चे तेल का उत्पादन

II. पेट्रोलियम का परिष्करण, संग्रहण और वितरण

III. पेट्रोलियम उत्पादों का विपणन और विक्रय

IV. प्राकृतिक गैस का उत्पादन

उपर्युक्त क्रियाकलापों में से कितने हमारे देश में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस नियामक बोर्ड द्वारा विनियमित हैं?

(a) केवल एक **(b) केवल दो**

(c) केवल तीन **(d) सभी चार**

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः

- **कच्चे तेल का उत्पादनः** पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस नियामक बोर्ड (PNGRB) द्वारा विनियमित नहीं है।
  - कच्चे तेल के उत्पादन को PNGRB के विनियामक दायरे से स्पष्ट रूप से बाहर रखा गया है। यह कार्य पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के अधीन है तथा इसका पर्यवेक्षण हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय (DGH) जैसे निकायों द्वारा किया जाता है।
- **पेट्रोलियम का परिष्करण, संग्रहण और वितरणः** PNGRB द्वारा विनियमित।
  - PNGRB को पेट्रोलियम और पेट्रोलियम उत्पादों के परिशोधन, परिष्करण, संग्रहण, परिवहन, वितरण, विपणन और विक्रय को विनियमित करने का अधिकार प्राप्त है।

- **पेट्रोलियम उत्पादों का विपणन और विक्रय:** PNGRB द्वारा विनियमित
  - ◆ पेट्रोलियम उत्पादों के विपणन और विक्रय PNGRB के विनियामक दायरे में आते हैं, जिससे उचित व्यापार प्रथाएँ सुनिश्चित होती हैं तथा उपभोक्ता संरक्षण को प्रोत्साहन मिलता है।
- **प्राकृतिक गैस का उत्पादन:** PNGRB द्वारा विनियमित नहीं है।
  - ◆ कच्चे तेल की तरह ही, प्राकृतिक गैस का उत्पादन भी PNGRB के अधिकार क्षेत्र से बाहर है। इसे पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय तथा हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय (DGH) द्वारा विनियमित किया जाता है। **अतः विकल्प (b) सही है।**

2024

1. पूर्वोत्तर परिषद (NEC) की स्थापना पूर्वोत्तर परिषद अधिनियम, 1971 द्वारा की गई थी। वर्ष 2002 में NEC अधिनियम में संशोधन के बाद, परिषद में निम्नलिखित में से किन-किन सदस्यों को शामिल किया गया है?

1. संघटक राज्य का राज्यपाल

2. संघटक राज्य का मुख्यमंत्री

3. भारत के राष्ट्रपति द्वारा नामनिर्दिष्ट तीन सदस्य

4. भारत का गृह मंत्री

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

(a) केवल 1, 2 और 3 (b) केवल 1, 3 और 4

(c) केवल 2 और 4 (d) 1, 2, 3 और 4

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: पूर्वोत्तर परिषद (संशोधन) अधिनियम, 2002 के अनुसार, परिषद की संरचना इस प्रकार होगी:

- **राज्यों के राज्यपाल का पद धारण करने वाला व्यक्ति**
- अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, नगालैंड सिक्किम और त्रिपुरा राज्यों के मुख्यमंत्री;
- राष्ट्रपति **द्वारा नामित किये जाने वाले तीन सदस्य**
- राष्ट्रपति परिषद के अध्यक्ष को **नामित करेंगे**

अतः विकल्प (a) सही है।

2023

1. भारत के निम्नलिखित संगठनों/निकायों पर विचार कीजिये–

1. राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग

2. राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग

3. राष्ट्रीय विधि आयोग

4. राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग

उपर्युक्त में से कितने सांविधानिक निकाय हैं?

(a) केवल एक (b) केवल दो

(c) केवल तीन (d) सभी चार

सही उत्तर: (a)

व्याख्या:

- **राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग (National Commission for Backward Classes – NCBC)** का गठन शुरू में केंद्र सरकार द्वारा राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग अधिनियम, 1993 द्वारा किया गया था और अब तक आयोग को 7 बार पुनर्गठित किया गया था। राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग अधिनियम, 1993 को राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग (निरसन) अधिनियम, 2018 के माध्यम से निरस्त कर दिया गया है। आयोग को संवैधानिक दर्जा दिया गया है एवं 'संविधान (102वाँ संशोधन) अधिनियम, 2018' अधिनियम के माध्यम से गठित किया गया है।
- **भारत के राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (National Human Rights Commission – NHRC)** की स्थापना 12 अक्तूबर, 1993 को हुई थी। मानवाधिकार संरक्षण अधिनियम (PHRA), 1993 की स्थापना संविधि के तहत की गई है, जिसे मानव अधिकार संरक्षण (संशोधन) अधिनियम, 2006 द्वारा संशोधित किया गया है।
- **राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग (NCDRC),** भारत में एक अर्द्ध-न्यायिक आयोग है जिसे वर्ष 1988 में उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 के तहत स्थापित किया गया था।
- **भारत का विधि आयोग एक गैर-सांविधिक निकाय है** और इसका गठन भारत सरकार, विधि एवं न्याय मंत्रालय, विधि कार्य विभाग की एक अधिसूचना द्वारा विधि के क्षेत्र में अनुसंधान करने हेतु एक निश्चित विचारार्थ विषयों के साथ किया जाता है, साथ ही आयोग अपने विचारार्थ विषयों के अनुसार सरकार को सिफारिशें (रिपोर्ट के रूप में) करता है। **अतः विकल्प (a) सही है।**

2020

1. भारत में, विधिक सेवा प्रदान करने वाले प्राधिकरण (Legal Services Authorities) निम्नलिखित में से किस प्रकार के नागरिकों को निःशुल्क विधिक सेवाएँ प्रदान करते हैं?

1. ₹1,00,000 से कम वार्षिक आय वाले व्यक्ति को

2. ₹2,00,000 से कम वार्षिक आय वाले ट्रांसजेंडर को

3. ₹3,00,000 से कम वार्षिक आय वाले अन्य पिछड़े वर्ग (OBC) के सदस्य को

4. सभी वरिष्ठ नागरिकों को

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3 और 4

(c) केवल 2 और 3 (d) केवल 1 और 4

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम, 1987 की धारा-12 के अंतर्गत विधिक सेवा प्रदान करने हेतु मापदंड निर्धारित किये गए हैं। धारा-12(ज) के अंतर्गत निःशुल्क विधिक सेवा प्राप्त करने हेतु न्यूनतम वार्षिक आय निर्धारित करने की शक्ति राज्यों को दी गई है। इस संदर्भ में अलग-अलग राज्यों द्वारा अलग-अलग आय सीमाएँ तय की गई हैं।

अधिनियम के अंतर्गत अन्य पिछड़े वर्ग (OBC) के लोगों को नि:शुल्क विधिक सेवा प्रदान करने के संदर्भ में कोई चर्चा नहीं की गई है। अत: कथन 3 सही नहीं है। इसी प्रकार, अधिनियम में 'सभी वरिष्ठ नागरिकों' को नि:शुल्क विधिक सेवा प्रदान करने के संदर्भ में भी चर्चा नहीं की गई है। हालाँकि दिल्ली में ₹2,00,000 से कम आय वाले वरिष्ठ नागरिकों को यह सुविधा प्रदान की जाती है परंतु यहाँ भी सभी वरिष्ठ नागरिकों को यह सुविधा उपलब्ध नहीं है। अत: कथन 4 सही नहीं है।

दिल्ली में ही ₹2,00,000 से कम आय वाले ट्रांसजेंडर समुदाय के व्यक्तियों को नि:शुल्क विधिक सेवा प्रदान करने कि व्यवस्था की गई है। अत: कथन 2 सही है। इस प्रकार उपलब्ध विकल्पों के आधार पर विकल्प (a) सही उत्तर होगा।

नोट : वर्तमान में सभी राज्यों में ₹3,00,000 से कम आय का प्रावधान रखा गया है।

2018

1. राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एन.जी.टी.) किस प्रकार केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सी.पी.सी.बी.) से भिन्न है?

1. एन.जी.टी. का गठन एक अधिनियम द्वारा किया गया है जबकि सी.पी.सी.बी. का गठन सरकार के कार्यपालक आदेश से किया गया है।

2. एन.जी.टी. पर्यावरणीय न्याय उपलब्ध कराता है और उच्चतर न्यायालयों में मुकदमों के भार को कम करने में सहायता करता है जबकि सी.पी.सी.बी. झरनों और कुँओं की सफाई को प्रोत्साहित करता है, तथा देश में वायु की गुणवत्ता में सुधार लाने का लक्ष्य रखता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1, न ही 2**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: एन.जी.टी. का गठन 18.10.2010 को एन.जी.टी. अधिनियम, 2010 के अंतर्गत हुआ। सी.पी.सी.बी. का गठन सितंबर 1974 में जल (प्रदूषण रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम, 1974 के अंतर्गत हुआ। अत: कथन 1 सही नहीं है।

एन.जी.टी. का न्यायिक क्षेत्र पर्यावरणीय विषयों से संबद्ध है और यह तीव्र पर्यावरणीय न्याय प्रदान करने तथा उच्चतर न्यायालयों में मुकदमों के भार को कम करने में सहायता करता है।

सी.पी.सी.बी. संबद्ध राज्य सरकारों से परामर्श कर झरनों या कुओं से संबद्ध मानकों और वायु की गुणवत्ता से संबद्ध मानकों में सुधार के प्रयास करता है। अत: कथन 2 सही है।

2017

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. भारत का निर्वाचन आयोग पाँच-सदस्यीय निकाय है।

2. संघ का गृह मंत्रालय, आम चुनाव और उप-चुनावों दोनों के लिये चुनाव कार्यक्रम तय करता है।

3. निर्वाचन आयोग मान्यता-प्राप्त राजनीतिक दलों के विभाजन/विलय से संबंधित विवाद निपटाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2**

(c) केवल 2 और 3 **(d) केवल 3**

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: वर्तमान में भारत का निर्वाचन आयोग बहुसदस्यीय निकाय है। वर्ष 1993 के उपरांत आयोग में तीन निर्वाचन आयुक्त हैं। आम चुनाव और उप-चुनावों दोनों के लिये चुनाव कार्यक्रम चुनाव आयोग तय करता है। अत: कथन 1 और 2 दोनों गलत हैं। चुनाव आयोग की शक्तियों के संदर्भ में कथन 3 सही है। अत: विकल्प (d) सही उत्तर है।

2015

1. भारत सरकार ने नीति (NITI) आयोग की स्थापना निम्नलिखित में से किसका स्थान लेने के लिये की है?

(a) मानव अधिकार आयोग **(b) वित्त आयोग**

(c) विधि आयोग **(d) योजना आयोग**

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: भारत सरकार ने **'योजना आयोग'** को समाप्त कर उसके स्थान पर नीति आयोग (National Institution for Transforming India–NITI) नामक नया संस्थान बनाया है। यह संस्थान सरकार के थिंक टैंक के रूप में सेवाएँ प्रदान करने के साथ उसे निर्देशात्मक एवं नीतिगत गतिशीलता प्रदान करेगा।

उद्देश्य

- विकास प्रक्रिया में निर्देश एवं रणनीतिक परामर्श देना;
- राज्यों के साथ सतत् आधार पर संरचनात्मक सहयोग की पहल और सहयोगपूर्ण संघवाद को बढ़ावा देना;
- विकास के एजेंडे के कार्यान्वयन में तेज़ी लाने के क्रम में अंतर-क्षेत्रीय और अंतर-विभागीय मुद्दों के समाधान के लिये एक मंच प्रदान करना;
- कार्यक्रमों और नीतियों के क्रियान्वयन के लिये प्रौद्योगिकी उन्नयन और क्षमता निर्माण पर ज़ोर देना आदि।

2014

1. निम्नलिखित में से कौन-से भारत में 'योजना' से सम्बद्ध है?

1. वित्त आयोग

2. राष्ट्रीय विकास परिषद्

3. संघीय ग्रामीण विकास मंत्रालय

4. संघीय शहरी विकास मंत्रालय

5. संसद

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1, 2 और 5 **(b) केवल 1, 3 और 4**

(c) केवल 2 और 5 **(d) 1, 2, 3, 4 और 5**

सही उत्तर: (c)

व्याख्याः

- **राष्ट्रीय विकास परिषद्** का गठन अगस्त 1952 में किया गया। इसका उद्देश्य 'योजना' (Planning) के कार्यान्वयन में राज्यों का सहयोग प्राप्त करना था।
- नीति आयोग की स्थापना से पूर्व योजना आयोग द्वारा पंचवर्षीय योजना का ड्राफ्ट केंद्रीय मंत्रिमंडल के समक्ष प्रस्तुत किया जाता था। इसकी संस्तुति के बाद इसे राष्ट्रीय विकास परिषद् के पास स्वीकृति के लिये भेजा जाता था। फिर इसे **संसद** में प्रस्तुत कर इसकी संस्तुति के बाद आधिकारिक रूप से सरकारी राजपत्र (गजट) में प्रकाशित किया जाता था।
- प्रश्न में दी गई शेष संस्थाओं का 'योजना' से संबंध नहीं है। अतः विकल्प संबंध नहीं है। **अतः विकल्प (c) सही है।**

2013

1. निम्नलिखित में से कौन राष्ट्रीय विकास परिषद् की रचना करते हैं?

1. प्रधानमंत्री　　**2. अध्यक्ष, वित्त आयोग**

3. संघीय मंत्रिमंडल के मंत्रिगण　　**4. राज्यों के मुख्यमंत्री**

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1, 2 और 3　　**(b) केवल 1, 3 और 4**

(c) केवल 2 और 4　　**(d) 1, 2, 3 और 4**

सही उत्तरः **(b)**

व्याख्याः राष्ट्रीय विकास परिषद् (National Development Council) में प्रधानमंत्री अध्यक्ष के रूप में तथा केंद्र सरकार के मंत्रिमंडल के सदस्य, सभी राज्यों के मुख्यमंत्री, योजना आयोग के सदस्य (ध्यातव्य है कि योजना आयोग को अब समाप्त करके उसकी जगह नीति आयोग का गठन किया गया है।) तथा सभी केंद्रशासित राज्यों के मुख्यमंत्री और प्रशासक सदस्य के रूप में शामिल होते हैं। वित्त आयोग के अध्यक्ष की राष्ट्रीय विकास परिषद् में कोई भूमिका नहीं होती है।

2. निम्नलिखित में से किस निकाय/किन निकायों का संविधान में उल्लेख नहीं है?

1. राष्ट्रीय विकास परिषद्　　**2. योजना आयोग**

3. क्षेत्रीय परिषदें

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 और 2　　**(b) केवल 2**

(c) केवल 1 और 3　　**(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तरः **(d)**

व्याख्याः

- राष्ट्रीय विकास परिषद् एवं योजना आयोग का गठन केवल कार्यपालिका के आदेश द्वारा हुआ है। अतः ये न तो संवैधानिक निकाय हैं और न ही सांविधिक निकाय।
- क्षेत्रीय परिषदों का गठन राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 के तहत किया गया था, अतः ये सांविधिक निकाय हैं। किंतु, ये संवैधानिक निकाय नहीं हैं।
- भारत में 5 क्षेत्रीय परिषदों की स्थापना की गई है जो केंद्र एवं राज्यों के बीच एवं राज्यों के आपसी विवादों को विचार-विमर्श, वार्ताओं एवं परामर्श के द्वारा सुलझाकर शांति एवं सहयोग के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देती हैं।

2012

1. परिसीमन आयोग के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. परिसीमन आयोग के आदेशों को किसी न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती।

2. परिसीमन आयोग के आदेश जब लोक सभा अथवा राज्य विधान सभा के सम्मुख रखे जाते हैं, तब उन आदेशों में कोई संशोधन नहीं किया जा सकता।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1　　**(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों　　**(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तरः **(c)**

व्याख्याः भारत सरकार द्वारा परिसीमन आयोग (Delimitation Commission) का गठन समय-समय पर परिसीमन आयोग अधिनियम के प्रावधानों के अंतर्गत किया जाता है।

- परिसीमन आयोग का प्रमुख कार्य हाल की जनगणना के आधार पर विभिन्न विधानसभाओं एवं लोक सभा के निर्वाचन क्षेत्रों की सीमा का पुनः सीमांकन करना होता है।
- परिसीमन आयोग के आदेशों को किसी न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती है।
- हालाँकि परिसीमन आयोग के आदेशों को लोक सभा एवं संबंधित राज्य विधान सभाओं में रखा जाता है किंतु लोक सभा एवं राज्य विधान सभाएँ परिसीमन आयोग के आदेशों में कोई सुधार या संशोधन नहीं कर सकती हैं। परिसीमन आयोग के द्वारा प्रत्येक राज्य के प्रदत्त प्रतिनिधित्व में कोई बदलाव नहीं किया जाता है किंतु जनगणना के आधार पर अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति से संबंधित सीटों में परिवर्तन कर दिया जाता है।
- अभी तक केवल चार बार (1952, 1963, 1973 और 2002) परिसीमन आयोग की स्थापना की गई है।

2. राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण अधिनियम, 2010 भारतीय संविधान के निम्नलिखित में से कौन-सा/से प्रावधान के आनुरूप्य अधिनियमित हुआ था/हुए थे?

1. स्वस्थ पर्यावरण के अधिकार के आनुरूप्य, जो अनुच्छेद-21 के अंतर्गत जीवन के अधिकार का अंग माना जाता है।

2. अनुच्छेद-275(1) के अंतर्गत अनुसूचित जनजातियों के कल्याण हेतु अनुसूचित क्षेत्रों में प्रशासन का स्तर बढ़ाने के लिये प्रावधानिक अनुदान के आनुरूप्य।

3. अनुच्छेद-243(A) के अंतर्गत उल्लिखित ग्राम सभा की शक्तियों और कार्यों के आनुरूप्य।

निम्नलिखित कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः भारतीय संविधान के अनुच्छेद-21 के द्वारा प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता के संरक्षण का अधिकार प्रदान किया गया है। इसके तहत प्रत्येक सरकार का यह दायित्व बनता है कि वह अपने नागरिकों को स्वस्थ एवं स्वच्छ पर्यावरण उपलब्ध कराए।

- उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति की दिशा में कदम उठाते हुए भारत सरकार ने संसद से राष्ट्रीय हरित अधिकरण अधिनियम, 2010 पारित कराया। अक्तूबर 2010 में राष्ट्रीय हरित अधिकरण की स्थापना की गई।
- राष्ट्रीय हरित अधिकरण देश में पर्यावरण से संबंधित मामलों के लिये उत्तरदायी है।
- राष्ट्रीय हरित अधिकरण की मुख्य पीठ नई दिल्ली में है जबकि चार अन्य पीठें भोपाल, पुणे, कोलकाता और चेन्नई में हैं।

2011

1. भारत के वित्त आयोग के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा एक कथन सही है?

(a) वह अवसंरचना विकास हेतु विदेशी पूंजी अंतर्प्रवाह प्रोत्साहित करता है

(b) वह सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों में समुचित वित्त वितरण को सुगम बनाता है

(c) वह वित्तीय प्रशासन में पारदर्शिता सुनिश्चित करता है

(d) इस संदर्भ में उपर्युक्त (a), (b) तथा (c) कथनों में से कोई भी सही नहीं है

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः वित्त आयोग का प्रावधान भारतीय संविधान के अनुच्छेद-280 के तहत किया गया है। इसका गठन राष्ट्रपति के द्वारा पाँच वर्ष या उसके पहले आवश्यकतानुसार किया जाता है।

वित्त आयोग के प्रमुख कार्य

- वित्त आयोग के द्वारा संघ एवं राज्यों के बीच करों के शुद्ध आगमों का वितरण और राज्यों के बीच ऐसे आगमों का आवंटन किया जाता है।
- वित्त आयोग भारत की संचित निधि में से राज्यों के राजस्व में सहायता अनुदान को शासित करने वाले सिद्धांतों के बारे में बताता है।
- राज्य, वित्त आयोग द्वारा की गई सिफारिशों के आधार पर राज्य में नगरपालिकाओं और पंचायतों के संसाधनों की पूर्ति के लिये राज्य की संचित निधि के संवर्द्धन के लिये ज़रूरी उपाय करता है।
- राष्ट्रपति के द्वारा वित्त आयोग को सुदृढ़ वित्त के हित में निर्दिष्ट कोई अन्य विषय सौंपे जाने पर वित्त आयोग अपनी सलाह देता है।

अनुसूची/अनुच्छेद

2025

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजियेः

भारत के संविधान के संदर्भ में, यदि पाँचवी अनुसूची के अधीन किसी राज्य में कोई क्षेत्र अनुसूचित क्षेत्र घोषित कर दिया जाता है, तो

I. ऐसे क्षेत्रों में राज्य सरकार अपनी कार्यपालिका शक्ति खो देती है और एक स्थानीय निकाय पूर्ण प्रशासन ग्रहण कर लेता है।

II. संघ की सरकार कतिपय परिस्थितियों में राज्यपाल की सिफारिश पर ऐसे क्षेत्रों के पूर्ण प्रशासन को अपने हाथ में ले सकती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल I

(b) केवल II

(c) I और II दोनों

(d) न तो I और न ही II

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः

- संविधान की पाँचवी अनुसूची (Fifth Schedule) असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिज़ोरम को छोड़कर किसी भी राज्य में अनुसूचित क्षेत्रों (Scheduled Areas) तथा अनुसूचित जनजातियों (Scheduled Tribes) के प्रशासन एवं नियंत्रण से संबंधित है।
  - राष्ट्रपति के पास किसी क्षेत्र को अनुसूचित क्षेत्र घोषित करने का अधिकार है।
- पाँचवी अनुसूची के अंतर्गत अनुसूचित क्षेत्रों के संदर्भ में, राज्य सरकार अपनी कार्यपालिका शक्ति नहीं खोती है। हालाँकि उस पर कुछ प्रतिबंध लागू होते हैं। **अतः कथन I सही नहीं है।**
  - राज्य के राज्यपाल के विशेष उत्तरदायित्व होते हैं और वे यह निर्देश दे सकते हैं कि कुछ कानून अनुसूचित क्षेत्रों पर लागू न हों या कुछ संशोधनों के साथ लागू हों।
  - केंद्र सरकार भी ऐसे क्षेत्रों के प्रशासन के संबंध में राज्यों को निर्देश दे सकती है।
- केंद्र सरकार राज्यपाल की सिफारिश पर अनुसूचित क्षेत्रों के प्रशासन को अधिग्रहीत नहीं करती। इन क्षेत्रों में प्रशासन एवं कानूनों के अनुप्रयोग से संबंधित विवेकाधीन शक्तियाँ राज्यपाल के पास होती हैं, वे राष्ट्रपति को रिपोर्ट प्रस्तुत कर सकते हैं। **अतः कथन II सही सुमेलित नहीं है।**
  - हालाँकि संविधान केंद्र सरकार को अनुसूचित क्षेत्रों का संपूर्ण प्रशासन सीधे अपने हाथ में लेने का अधिकार नहीं देता। **अतः विकल्प (d) सही है।**

2024

1. भारत के संविधान के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

(a) अंतर्राज्यीय व्यापार और वाणिज्य राज्य सूची के अधीन एक राज्य विषय है।

(b) अंतर्राज्यीय प्रवासन राज्य सूची के अधीन एक राज्य विषय है।

(c) अंतर्राज्यीय संगरोध संघ सूची के अधीन एक संघ विषय है।

(d) निगम कर राज्य सूची के अधीन एक राज्य विषय है।

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: संविधान की सातवीं अनुसूची में तीन सूचियाँ हैं जो केंद्र और राज्यों के बीच शक्ति का वितरण करती हैं (अनुच्छेद-246)

- संघ सूची में 98 विषय (मूल रूप से 97) हैं, जिन पर संसद को विधि निर्माण की विशेष शक्ति है।
- राज्य सूची में 59 विषय (मूल रूप से 66) हैं जिन पर अकेले राज्य विधि निर्माण कर सकते हैं।
- समवर्ती सूची में 52 विषय (मूल रूप से 47) हैं जिन पर केंद्र और राज्य दोनों विधि निर्माण कर सकते हैं।

प्रवेश संख्या	सूची	विषय
42	संघ	अंतर्राज्यीय व्यापार एवं वाणिज्य
81	संघ	अंतर्राज्यीय प्रवासन
81	संघ	अंतर्राज्यीय संगरोध
85	संघ	निगम कर

अत: विकल्प (c) सही है।

2023

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

कथन-I: भारत में, दैनंदिन जेल प्रशासन के लिये, जेलों का अनुरक्षण राज्य सरकारें अपने नियमों और विनियमों करती हैं।

कथन-II: भारत में, जेल का नियंत्रण जेल अधिनियम, 1894 द्वारा किया जाता है, जिससे जेल का विषय स्पष्ट रूप से प्रांतीय सरकारों के नियंत्रण में रहा।

उपर्युक्त कथनों के बारे में, निम्नलिखित में से कौन-सा एक सही है?

(a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या है

(b) कथन-I और कथन-II दोनों सही है तथा कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या नहीं है

(c) कथन-I सही है किंतु कथन-II गलत है

(d) कथन-I गलत है किंतु कथन-II सही है

सही उत्तर: (a)

व्याख्या:

- **भारतीय संविधान की सातवीं अनुसूची की सूची II की प्रविष्टि संख्या 4 के तहत 'जेल'/'उसमें बंद व्यक्ति' "राज्य-सूची" का एक विषय है। जेलों और कैदियों का प्रशासन एवं प्रबंधन संबंधित राज्य सरकारों की ज़िम्मेदारी है** जो इस संबंध में उचित कार्रवाई करने में सक्षम हैं। **अत: कथन I सही है।**
- हालाँकि **आपराधिक न्याय प्रणाली** में जेलों के महत्त्व को देखते हुए, **गृह मंत्रालय** जेल प्रशासन से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर राज्यों तथा केंद्रशासित प्रदेशों को नियमित मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करता रहा है।
- कारागार अधिनियम 1894, जो कारागारों/जेलों को नियंत्रित करता है, के तहत **जेलों का प्रबंधन एवं प्रशासन राज्य सरकारों के क्षेत्राधिकार में आता है। अत: कथन II सही है।**
- **इसलिए, कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं और कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या है।**

2. भारत में 'अनुसूचित क्षेत्र' के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. किसी राज्य के भीतर, किसी क्षेत्र की अनुसूचित क्षेत्र के रूप में अधिसूचना राष्ट्रपति के एक आदेश के माध्यम से होती है।

2. अनुसूचित क्षेत्र के रूप में बनने वाली सबसे बड़ी प्रशासकीय इकाई ज़िला होता है और सबसे छोटी इकाई ब्लॉक में गाँवों का समूह होता है।

3. संबंधित राज्यों के मुख्यमंत्रियों से अपेक्षित है कि वे राज्यों के अनुसूचित क्षेत्रों के प्रशासन के विषय में केंद्रीय गृह मंत्रालय को वार्षिक प्रतिवेदन दें।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक **(b) केवल दो**

(c) सभी तीन **(d) कोई भी नहीं**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या:

- "अनुसूचित क्षेत्र" वे हैं जो पाँचवी अनुसूची के पैरा 6(1) के तहत राष्ट्रपति के आदेश द्वारा निर्धारित किये गए हैं। इसमें कहा गया है "इस संविधान में, अभिव्यक्ति 'अनुसूचित क्षेत्र' से ऐसे क्षेत्र अभिप्रेत हैं जिन्हें राष्ट्रपति आदेश द्वारा अनुसूचित क्षेत्र घोषित करें"।
- किसी राज्य के संबंध में "अनुसूचित क्षेत्रों" का विनिर्देश संबंधित राज्य सरकार के परामर्श के बाद राष्ट्रपति के अधिसूचित आदेश द्वारा होता है। किसी भी परिवर्तन, वृद्धि, कमी, नए क्षेत्रों को शामिल करने या "अनुसूचित क्षेत्रों" से संबंधित किसी भी आदेश को रद्द करने के मामले में भी यही लागू होता है। **अत: कथन 1 सही है।**
- अनुसूचित क्षेत्रों का गठन करने वाली सबसे बड़ी प्रशासनिक इकाई ज़िला और ब्लॉक स्तर पर ग्रामीण समूह है। **अत: कथन 2 सही है।**

- संघ की कार्यकारी शक्ति उक्त क्षेत्रों के प्रशासन के संबंध में राज्य को निर्देश देने तक विस्तृत है। अनुसूचित क्षेत्रों के साथ प्रत्येक राज्य के राज्यपाल, राष्ट्रपति को एक वार्षिक प्रतिवेदन पर प्रस्तुत करेंगे, जो उस राज्य के भीतर अनुसूचित क्षेत्रों के प्रशासन की रूपरेखा तैयार करेंगे। **अतः कथन 3 सही नहीं है।**

2022

1. यदि किसी विशिष्ट क्षेत्र को भारत के संविधान की पाँचवी अनुसूची के अधीन लाया जाए, तो निम्नलिखित कथनों में कौन-सा एक, इसके परिणाम को सर्वोत्तम रूप से प्रतिबिंबित करता है?

(a) इससे जनजातीय लोगों की जमीनें गैर-जनजातीय लोगों को अंतरित करने पर रोक लगेगी।

(b) इससे उस क्षेत्र में एक स्थानीय स्वशासी निकाय का सृजन होगा।

(c) इससे वह क्षेत्र संघ राज्यक्षेत्र में बदल जाएगा।

(d) जिस राज्य के पास ऐसे क्षेत्र होंगे, उसे विशेष कोटि का राज्य घोषित किया जाएगा।

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः

- राज्यपाल निम्नलिखित के संबंध में नियम बना सकता है:
- अनुसूचित जनजातियों से और उनके बीच भूमि के हस्तांतरण का निषेध और प्रतिबंध - देश के लगभग हर राज्य और निश्चित रूप से अनुसूचित क्षेत्रों वाले सभी राज्यों ने अनुसूचित क्षेत्रों में आदिवासियों द्वारा गैर-आदिवासियों को भूमि हस्तांतरण की रोकथाम/निषेध से संबंधित कानून बनाए हैं और कुछ मामलों में, आदिवासियों के बीच भूमि का परस्पर हस्तांतरण तक प्रतिबंधित है।
- अनुसूचित क्षेत्रों में आदिवासियों को भूमि आवंटन का विनियमन;
- अनुसूचित क्षेत्रों में आदिवासियों को साहूकारी का विनियमन। **अतः विकल्प (a) सही है।**

2021

1. भारत में संपत्ति के अधिकार की क्या स्थिति है?

(a) यह विधिक अधिकार है, जो केवल नागरिकों को प्राप्त है

(b) यह विधिक अधिकार है, जो किसी भी व्यक्ति को प्राप्त है

(c) यह मूल अधिकार है, जो केवल नागरिकों को प्राप्त है

(d) यह न तो मूल अधिकार है, न ही विधिक अधिकार

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः भारतीय संविधान के अनुच्छेद-300क में प्रावधान है कि किसी व्यक्ति को उसकी संपत्ति से विधि के प्राधिकार से ही वंचित किया जाएगा, अन्यथा नहीं। इस अनुच्छेद-से स्पष्ट हो जाता है कि भारत में संपत्ति का अधिकार एक विधिक अधिकार है, जो किसी भी व्यक्ति को प्राप्त है। अतः विकल्प (b) सही उत्तर होगा।

2019

1. भारत के संविधान की किस अनुसूची के अधीन जनजातीय भूमि का, खनन के लिये निजी पक्षकारों को अंतरण अकृत और शून्य घोषित किया जा सकता है?

(a) तीसरी अनुसूची **(b) पाँचवी अनुसूची**

(c) नौवीं अनुसूची **(d) बारहवीं अनुसूची**

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः भारत के संविधान की पाँचवी अनुसूची के अधीन जनजातीय भूमि के खनन के लिये निजी पक्षकारों को अंतरण अकृत और शून्य (Null and Void) घोषित किया जा सकता है। पाँचवी अनुसूची में राज्यों (असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिज़ोरम के अतिरिक्त) में अनुसूचित क्षेत्रों और अनुसूचित जनजातियों के प्रशासन और नियंत्रण के बारे में उपबंध है।

2. किस प्रधानमंत्री के कार्यकाल के दौरान भारत के संविधान में नौवीं अनुसूची को पुरःस्थापित किया गया था?

(a) जवाहरलाल नेहरू

(b) लाल बहादुर शास्त्री

(c) इंदिरा गांधी

(d) मोरारजी देसाई

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः प्रथम संविधान (संशोधन) अधिनियम, 1951 के द्वारा भारत के संविधान में नौवीं अनुसूची को पुरःस्थापित किया गया था। उस समय भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू थे।

2018

1. यदि भारत का राष्ट्रपति संविधान के अनुच्छेद-356 के अधीन यथा उपबंधित अपनी शक्तियों का किसी विशेष राज्य के संबंध में प्रयोग करता है, तो

(a) उस राज्य की विधान सभा स्वतः भंग हो जाती है।

(b) उस राज्य के विधानमंडल की शक्तियाँ संसद द्वारा या उसके प्राधिकार के अधीन प्रयोज्य होंगी।

(c) उस राज्य में अनुच्छेद-19 निलंबित हो जाता है।

(d) राष्ट्रपति उस राज्य से संबंधित विधियाँ बना सकता है।

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः यदि भारत का राष्ट्रपति संविधान के अनुच्छेद-356 के अधीन यथा उपबंधित अपनी शक्तियों का किसी विशेष राज्य के संबंध में प्रयोग करे तो उस राज्य की विधानसभा निलंबित हो सकती है और संसद उस राज्य के लिये राज्य सूची के विषय पर कानून बना सकती है अथवा राष्ट्रपति राज्य सूची के विषय पर अध्यादेश जारी कर सकता है। **अतः विकल्प (b) सही है।**

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. भारत की संसद किसी कानून विशेष को भारत के संविधान की नौवीं अनुसूची में डाल सकती है।

2. नौवीं अनुसूची में डाले गए किसी कानून की वैधता का परीक्षण किसी न्यायालय द्वारा नहीं किया जा सकता एवं उसके ऊपर कोई निर्णय भी नहीं किया जा सकता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1, न ही 2**

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: संविधान के प्रथम संशोधन (1951) द्वारा 9वीं अनुसूची का प्रावधान किया गया था। इस अनुसूची में किसी कानून विशेष को सम्मिलित कर न्यायिक समीक्षा से बचने का प्रयास किया जा सकता था। अत: कथन 1 सही है।

वर्ष 2007 में उच्चतम न्यायालय ने निर्णय दिया कि 24 अप्रैल, 1973 को उच्चतम न्यायालय के केशवानंद भारती मामले में आए फैसले के बाद संविधान की 9वीं अनुसूची में शामिल किये गए किसी भी कानून की न्यायिक समीक्षा हो सकती है। अत: कथन 2 सही नहीं है। **अत: विकल्प (a) सही है।**

2015

1. भारत के संविधान में पाँचवी अनुसूची और छठी अनुसूची के उपबंध निम्नलिखित में से किसलिये किये गए हैं?

(a) अनुसूचित जनजातियों के हितों के संरक्षण के लिये

(b) राज्यों के बीच सीमाओं के निर्धारण के लिये

(c) पंचायतों की शक्तियों, प्राधिकारों और उत्तरदायित्वों के निर्धारण के लिये

(d) सभी सीमावर्ती राज्यों के हितों के संरक्षण के लिये

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: भारतीय संविधान की पाँचवी एवं छठी अनुसूचियों में अनुसूचित जनजातीय क्षेत्रों के प्रशासन एवं नियंत्रण संबंधी प्रावधान किये गए हैं-

5वीं अनुसूची में किये गए मुख्य प्रावधान

- पाँचवी अनुसूची के उपबन्ध असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिज़ोरम राज्यों से भिन्न किसी राज्य के अनुसूचित क्षेत्रों और अनुसूचित जनजाति के प्रशासन और नियंत्रण के लिये लागू होंगे। वर्तमान में मुख्य रूप से 10 राज्य- आंध्र प्रदेश, झारखंड, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा, राजस्थान, तेलंगाना में ये उपबन्ध लागू हैं।
- राष्ट्रपति देश के किसी भी क्षेत्र को अनुसूचित क्षेत्र घोषित करने के साथ संबंधित राज्य के राज्यपाल की सलाह पर घोषित अनुसूचित क्षेत्र के क्षेत्रफल सीमाएँ एवं नाम को बदलने का आदेश दे सकता है।
- अनुसूचित क्षेत्रों के प्रशासन के लिये राज्यपाल पर विशेष ज़िम्मेदारी होती है। वह अनुसूचित क्षेत्रों के प्रशासन के बारे में राष्ट्रपति को वार्षिक या जब भी राष्ट्रपति मांग करे, रिपोर्ट सौंपता है।
- जिन राज्यों में अनुसूचित क्षेत्र हैं वहाँ जनजाति सलाहकार परिषद् का गठन किया जाता है।
- राज्यपाल को यह अधिकार है कि वह संसद या राज्य विधानमण्डल के किसी विशेष अधिनियम को अनुसूचित क्षेत्रों में लागू करे या न करे या फिर कुछ परिवर्तन के साथ लागू करे।

छठी अनुसूची में किये गए मुख्य प्रावधान

- संविधान की छठी अनुसूची में असम, मेघालय, त्रिपुरा एवं मिज़ोरम राज्यों के जनजातीय क्षेत्रों के प्रशासन के बारे में उपबंध किया गया है।
- असम, मेघालय, त्रिपुरा एवं मिज़ोरम के जनजातीय क्षेत्रों में स्वशासी ज़िलों का गठन किया गया है। ये स्वशासी ज़िले राज्य की कार्यपालिका शक्ति के अंतर्गत ही आते हैं।
- राज्यपाल के पास इन क्षेत्रों में स्वशासी ज़िलों को स्थापित करने और हटाने तथा नामों एवं सीमाओं को बदलने का अधिकार है।
- प्रत्येक स्वशासी ज़िले में 30 सदस्यीय एक ज़िला परिषद् होगी।
- इन क्षेत्रों की ज़िला व प्रादेशिक परिषद् को ग्राम परिषद्ों या ग्राम न्यायालयों के गठन का भी अधिकार है।
- ज़िला व प्रादेशिक परिषद् को भू-राजस्व के आकलन एवं संग्रहण का भी अधिकार है।

2014

1. भारत के संविधान की निम्नलिखित में से कौन-सी एक अनुसूची में दल-बदल विरोध विषयक उपबंध है?

(a) दूसरी अनुसूची **(b) पाँचवी अनुसूची**

(c) आठवीं अनुसूची **(d) दसवीं अनुसूची**

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: भारतीय संविधान की दसवीं अनुसूची में दल-बदल विरोध विषयक उपबंध किये गए हैं। 52वें संविधान (संशोधन) अधिनियम, 1985 के द्वारा दसवीं अनुसूची को संविधान में शामिल किया गया।

- संविधान की दूसरी अनुसूची में राष्ट्रपति, राज्यों के राज्यपालों, लोक सभा के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, राज्य सभा के सभापति और उपसभापति, राज्य की विधान सभा के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष, राज्य विधान परिषद् के सभापति और उपसभापति, उच्चतम और उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों तथा भारत के नियंत्रक- महालेखापरीक्षक के वेतन-भत्तों का उल्लेख किया गया है।
- संविधान की पाँचवी अनुसूची में अनुसूचित क्षेत्रों और अनुसूचित जनजातियों के प्रशासन और नियंत्रण के बारे में उपबंध किया गया है।
- आठवीं अनुसूची में कुल 22 भाषाओं का उल्लेख किया गया है।

2012

1. भारतीय संविधान के निम्नलिखित में से कौन-से प्रावधान शिक्षा पर प्रभाव डालते हैं?

1. राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व

2. ग्रामीण और शहरी स्थानीय निकाय

3. पंचम अनुसूची

4. षष्ठ अनुसूची
5. सप्तम अनुसूची

निम्नलिखित कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 3, 4 और 5
(c) केवल 1, 2 और 5
(d) 1, 2, 3, 4 और 5

सही उत्तर: (d)

व्याख्या:

राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व: अनुच्छेद-45 (राज्य छ: वर्ष से कम आयु के सभी बच्चों के प्रारंभिक बाल्यकाल की देख-रेख और शिक्षा का प्रयास करेगा)

ग्रामीण एवं शहरी स्थानीय निकाय: अनुच्छेद-243छ के अंतर्गत ग्रामीण स्थानीय निकाय (11वीं अनुसूची विषय संख्या 17, 18 एवं 19) तथा अनुच्छेद-243ब (12वीं अनुसूची विषय संख्या 13) द्वारा शहरी स्थानीय निकाय में शिक्षा का प्रावधान किया गया है।

पाँचवी अनुसूची: पाँचवी अनुसूची में अनुसूचित क्षेत्रों और अनुसूचित जनजातियों के प्रशासन एवं नियंत्रण के बारे में प्रावधान किये गए हैं। पाँचवी अनुसूची में स्पष्टत: शिक्षा की बात तो नहीं की गई है परंतु इस अनुसूची में कई ऐसे प्रावधान हैं जो अनुसूचित क्षेत्रों में शिक्षा पर प्रकाश डालते हैं।

छठी अनुसूची: छठी अनुसूची में असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिज़ोरम राज्यों के जनजातीय क्षेत्रों के प्रशासन के बारे में उपबंध किये गए हैं। छठी अनुसूची में स्पष्टत: उल्लेख है राज्यपाल ऐसे क्षेत्रों के प्रशासन के संबंध में किसी भी समय जाँच करने तथा प्रतिवेदन देने के लिये एक आयोग नियुक्त कर सकता है जो शिक्षा, चिकित्सा, संचार के संबंध, नवीन कानून की आवश्यकता (विधि, नियमों, विनियमों) के संबंध में जाँच कर सकता है।

सातवीं अनुसूची: सातवीं अनुसूची में केंद्र सूची, राज्य सूची एवं समवर्ती सूची को शामिल किया गया है। शिक्षा का विषय समवर्ती सूची के अंतर्गत आता है।

भारतीय संविधान एवं शासन व्यवस्था के विविध विषय

2025

1. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये:

राज्य		वर्णन
I. अरुणाचल प्रदेश	:	एक किले से राजधानी का नाम पड़ा और राज्य में दो राष्ट्रीय उद्यान (नैशनल पार्क) हैं
II. नागालैंड	:	यह राज्य एक संविधान संशोधन अधिनियम के आधार पर अस्तित्व में आया
III. त्रिपुरा	:	प्रारंभ में यह भाग 'ग' (पार्ट 'सी') राज्य था, यह वर्ष 1956 में राज्यों का पुनर्गठन होने पर केंद्रशासित राज्यक्षेत्र बना और बाद में इसने एक पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त किया

उपर्युक्त युग्मों में से कितने सही सुमेलित हैं?

(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) सभी तीन
(d) कोई भी नहीं

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: अरुणाचल प्रदेश की राजधानी ईटानगर है, जिसका नाम ईटा किले के नाम पर रखा गया है, जिसका अर्थ है ईंटों का किला। इस किले का निर्माण 14वीं शताब्दी में किया गया था।

- इसके अलावा, राज्य में दो राष्ट्रीय उद्यान हैं: नामदफा नेशनल पार्क और मौलिंग नेशनल पार्क **अत: युग्म I सही सुमेलित है।**
- नगालैंड, संविधान (तेरहवाँ संशोधन) अधिनियम, 1962 के माध्यम से अस्तित्व में आया। नगालैंड के लिये विशेष संवैधानिक प्रावधान करने हेतु अनुच्छेद-371A जोड़ा गया। **अत: युग्म II सही सुमेलित है।**
- इस अधिनियम ने इसकी विशिष्ट सामाजिक, सांस्कृतिक और प्रशासनिक विशेषताओं को मान्यता दी, जिसमें राज्य विधान-मंडल द्वारा अनुमोदित किये बिना कुछ मामलों पर संसदीय कानूनों की अप्रयोज्यता भी शामिल थी।
- वर्ष 1949 में भारतीय संघ में विलय के बाद त्रिपुरा एक भाग 'ग' (पार्ट 'सी') राज्य था। वर्ष 1956 के राज्य पुनर्गठन अधिनियम के बाद, यह एक केंद्रशासित राज्यक्षेत्र बन गया। बाद में, वर्ष 1972 में, त्रिपुरा एक पूर्ण राज्य बना। **अत: युग्म III सही सुमेलित है।**

अत: विकल्प (c) सही है।

2. निम्नलिखित में से किनसे मिलकर 'गांधी शांति पुरस्कार' के प्राप्तकर्त्ता का चयन करने के लिये जूरी बनती है?

I. भारत का राष्ट्रपति
II. भारत का प्रधानमंत्री
III. भारत का मुख्य न्यायमूर्ति
IV. लोकसभा में प्रतिपक्ष का नेता

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

(a) केवल II और IV
(b) केवल I, II और III
(c) केवल II, III और IV
(d) केवल I और III

सही उत्तर: (c)

व्याख्या:

- **गांधी शांति पुरस्कार:** गांधी शांति पुरस्कार की स्थापना 1995 में महात्मा गांधी की 125वीं जयंती के अवसर पर उनके आदर्शों और मानवता के प्रति योगदान को श्रद्धांजलि देने के लिये की गई थी।

- ◆ यह पुरस्कार भारत के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में एक समारोह में प्रदान किया जाता है।

- **जूरी सदस्य:** गांधी शांति पुरस्कार निर्णायक मंडल में प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में पाँच सदस्य होते हैं।
  - ◆ अन्य सदस्यों में शामिल हैं: भारत के मुख्य न्यायाधीश और लोकसभा में विपक्ष के नेता जो इसके स्थायी सदस्य हैं।
  - ◆ दो अन्य जूरी सदस्यों को तीन वर्ष की अवधि के लिये नामित किया जाता है। **अत: विकल्प (c) सही है।**

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

कथन I: भारत में राज्य सरकारों के पास गौण खनिजों के निष्कर्षण के बारे में रियायत देने के लिये नियम बनाने की कोई शक्ति नहीं है, भले ही ऐसे खनिज उनके अपने भूभाग में अवस्थित हों।

कथन II : भारत में केंद्र सरकार के पास प्रासंगिक विधि के अधीन गौण खनिजों को अधिसूचित करने की शक्ति है।

उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा एक सही है?

(a) कथन I और कथन II दोनों सही हैं तथा कथन II, कथन I की व्याख्या करता है

(b) कथन I और कथन II दोनों सही हैं किंतु कथन II, कथन I की व्याख्या नहीं करता है

(c) कथन I सही है किंतु कथन II सही नहीं है

(d) कथन I सही नहीं है किंतु कथन II सही है

सही उत्तर: (d)

व्याख्या:

- खान और खनिज (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1957 की धारा 15 के तहत राज्यों को लघु खनिजों के लिये नियम बनाने का अधिकार है। इस धारा के अनुसार राज्य सरकार आधिकारिक राजपत्र में अधिसूचना द्वारा लघु खनिजों के संबंध में 3 [खदान पट्टे, खनन पट्टे या अन्य खनिज रियायतें] के अनुदान को विनियमित करने और उससे जुड़े उद्देश्यों के लिये नियम बना सकती है। **अत: कथन I सही नहीं है।**
- केंद्र सरकार के पास यह अधिसूचित करने का अधिकार है कि उसी अधिनियम की धारा 3(e) के तहत किन खनिजों को लघु खनिजों के रूप में वर्गीकृत किया गया है। **अत: कथन II सही है। अत: विकल्प (d) सही है।**

2023

1. निम्नलिखित में से कौन-सा एक कथन किसी देश के 'संविधान' के मुख्य प्रयोजन को सर्वोत्तम रूप से प्रतिबिंबित करता है?

(a) यह आवश्यक विधियों के निर्माण के उद्देश्य का निर्धारण करता है।

(b) यह राजनीतिक पदों और सरकार के सृजन को सुकर बनाता है।

(c) यह सरकार की शक्तियों को परिभाषित और सीमाबद्ध करता है।

(d) यह सामाजिक न्याय, सामाजिक समता और सामाजिक सुरक्षा को प्रतिभूत करता है।

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: किसी भी **संविधान का मुख्य उद्देश्य** एक सरकार के **मौलिक सिद्धांतों**, संरचना एवं कार्यों को स्थापित करना और एक **देश के भीतर व्यक्तियों के अधिकारों एवं स्वतंत्रता** को परिभाषित करना है। संविधान देश के उच्चतम कानून (Supreme law of the land) के रूप में कार्य करता है और **शासन हेतु एक रूपरेखा प्रदान करता है, शक्ति संतुलन सुनिश्चित करता है, व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा करता है तथा राज्य के कामकाज या कार्यप्रणाली का मार्गदर्शन करता है। अत: विकल्प (c) सही है।**

2021

1. भारतीय राज्य-व्यवस्था में, निम्नलिखित में से कौन-सी अनिवार्य विशेषता है, जो यह दर्शाती है कि उसका स्वरूप संघीय है?

(a) न्यायपालिका की स्वतंत्रता सुरक्षित है।

(b) संघ की विधायिका में संघटक इकाइयों के निर्वाचित प्रतिनिधि होते हैं।

(c) केंद्रीय मंत्रिमंडल में क्षेत्रीय पार्टियों के निर्वाचित प्रतिनिधि हो सकते हैं।

(d) मूल अधिकार न्यायालयों द्वारा प्रवर्तनीय हैं।

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: संघवाद की अनिवार्य विशेषताओं की बात की जाए तो इसके अंतर्गत-संघ व राज्य के बीच शक्तियों का स्पष्ट संवैधानिक विभाजन; लिखित, कठोर एवं उच्चतम संविधान, द्विस्तरीय सरकार तथा स्वतंत्र व निष्पक्ष न्यायपालिका इत्यादि तत्त्व माने जाते हैं। इस प्रकार विकल्प (a) सही उत्तर होगा।

उल्लेखनीय है कि संघीय विधायिका में संघटक इकाइयों के निर्वाचित प्रतिनिधि होना संघीय राजव्यवस्था का लक्षण तो है परंतु यह अनिवार्य नहीं है। साथ ही, केंद्रीय मंत्रिमंडल में क्षेत्रीय पार्टियों के निर्वाचित प्रतिनिधि होना व मूल अधिकार न्यायालयों द्वारा प्रवर्तनीय होना राजव्यवस्था के संघीय स्वरूप की अनिवार्य विशेषताओं से प्रत्यक्षत: संबद्ध नहीं हैं।

2. निम्नलिखित में से कौन-सा 'राज्य' शब्द को सर्वोत्तम रूप से परिभाषित करता है?

(a) व्यक्तियों का एक समुदाय, जो बिना किसी बाह्य नियंत्रण के एक निश्चित भू-भाग में स्थायी रूप से निवास करता है और जिसकी एक संगठित सरकार है।

(b) एक निश्चित भू-भाग के राजनीतिक रूप से संगठित लोग, जो स्वयं पर शासन करने, कानून एवं व्यवस्था को बनाए रखने, अपने नैसर्गिक अधिकारों की रक्षा करने तथा अपनी जीविका के साधनों को सुरक्षित रखने का अधिकार रखते हैं।

(c) बहुत से व्यक्ति, जो एक निश्चित भू-भाग में बहुत लंबे समय से अपनी संस्कृति, परंपरा और शासन-व्यवस्था के साथ रहते आए हैं।

(d) एक निश्चित भू-भाग में स्थायी रूप से रह रहा समाज, जिसकी एक केंद्रीय प्राधिकारी तथा केंद्रीय प्राधिकारी के प्रति उत्तरदायी कार्यपालिका और एक स्वतंत्र न्यायपालिका है।

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: वर्तमान समय में राज्य के चार अनिवार्य तत्त्व माने जाते हैं- जनसंख्या, भूभाग, सरकार व संप्रभुता। दूसरे शब्दों में, यदि व्यक्तियों का एक अथवा अनेक समुदाय (जनसंख्या) एक निश्चित भूभाग में स्थायी रूप से निवास करता है, एक संगठित सरकार वहाँ के शासन-प्रशासन का दायित्व संभालती है तथा उस भूभाग में निवास करने वाले समुदाय या समुदायों पर किसी प्रकार का कोई बाह्य नियंत्रण नहीं है, तो इसे 'राज्य' की संज्ञा दी जाएगी। इस प्रकार उपलब्ध विकल्पों में से विकल्प (a) 'राज्य' शब्द को सर्वोत्तम रूप से परिभाषित करता है।

3. निम्नलिखित में से कौन-सा कारक किसी उदार लोकतंत्र में स्वतंत्रता की सर्वोत्तम सुरक्षा को नियत करता है?

(a) एक प्रतिबद्ध न्यायपालिका

(b) शक्तियों का केंद्रीकरण

(c) निर्वाचित सरकार

(d) शक्तियों का पृथक्करण

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: किसी उदार लोकतंत्र में स्वतंत्रता की सर्वोत्तम सुरक्षा के लिये यह अनिवार्य है कि शक्तियों का केंद्रीकरण न हो। उल्लेखनीय है कि शक्तियों के पृथक्करण को यदि शासन का आधार बनाया जाता है, तो राज्य की विधायी, कार्यपालिका व न्यायिक शक्तियों का उपयोग पृथक-पृथक संस्थाओं द्वारा स्वायत्त रूप से किया जाता है और इसमें न्यायपालिका स्वतंत्र होती है, जिससे शासन व्यवस्था के किसी एक अंग द्वारा स्वतंत्रता पर आघात किये जाने की स्थिति में अन्य अंग नागरिकों की स्वतंत्रता के संरक्षण के लिये आगे आते हैं। इस प्रकार शक्तियों के पृथक्करण के माध्यम से उनके केंद्रीकरण की प्रवृत्ति को हतोत्साहित किया जाता है तथा इससे ही स्वतंत्रता की सर्वोत्तम रक्षा की जा सकती है। अतः विकल्प (d) सही उत्तर होगा।

4. हमने ब्रिटिश मॉडल पर आधारित संसदीय लोकतंत्र को अपनाया है, किंतु हमारा मॉडल उस मॉडल से किस प्रकार भिन्न है?

1. जहाँ तक विधि-निर्माण का संबंध है, ब्रिटिश संसद सर्वोपरि अथवा संप्रभु है, किंतु भारत में संसद की विधि-निर्माण की शक्ति परिसीमित है।

2. भारत में, संसद के किसी अधिनियम के संशोधन की संवैधानिकता से संबंधित मामले उच्चतम न्यायालय द्वारा संविधान पीठ को भेजे जाते हैं।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: विधि निर्माण के संदर्भ में ब्रिटिश संसद संप्रभु है, जबकि भारत में संसदीय संप्रभुता के स्थान पर संविधान की उच्चतमता को स्वीकार किया गया है, अतः संसद की विधि निर्माण की शक्ति संविधान के प्रावधानों के द्वारा परिसीमित की जाती है। अतः कथन 1 सही है।

संविधान के अनुच्छेद-145 के अंतर्गत उच्चतम न्यायालय को प्रदत्त शक्तियों के आधार पर संसद द्वारा पारित किसी अधिनियम में संशोधन की संवैधानिकता जाँचने, अर्थात् उसमें निहित विधि के सारवान प्रश्न को संबोधित करने के लिये, न्यायालय की संविधान पीठ को भेजा जा सकता है। अतः कथन 2 सही है। विकल्प (c) सही उत्तर होगा।

5. संघ सरकार के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. एन. गोपालास्वामी आयंगर समिति ने सुझाव दिया था कि किसी मंत्री और किसी सचिव को प्रशासनिक सुधार करने और उसे बढ़ावा देने के लिये पूर्णतः नामित किया जाना चाहिये।

2. प्रशासनिक सुधार आयोग, 1966 की संस्तुति के आधार पर वर्ष 1970 में कार्मिक विभाग का गठन किया गया और इसे प्रधानमंत्री के प्रभार के अधीन रखा गया।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: एन. गोपालास्वामी आयंगर ने 1950 में 'केंद्र सरकार की मशीनरी का पुनर्गठन' नामक रिपोर्ट में मंत्रालयों के समूहीकरण, कर्मियों की क्षमताओं में सुधार तथा ऑर्गेनाइजेशन एंड मेथड्स (ओ एंड एम) डिविजन के कामकाज से संबंधित सिफारिश की थी। इस रिपोर्ट में यह उल्लेख नहीं है कि एक मंत्री और एक सचिव को केवल प्रशासनिक सुधार के विषय को आगे बढ़ाने और इसे बढ़ावा देने के लिये नामित किया जाना चाहिये। अतः कथन 1 सही नहीं है। 1970 में 'प्रशासनिक सुधार आयोग, 1966' की अनुशंसा पर कैबिनेट सचिवालय के प्रभार के अधीन कार्मिक विभाग का गठन किया गया था। 1985 में इसका प्रभार प्रधानमंत्री कार्यालय को हस्तांतरित कर दिया गया था। उल्लेखनीय है कि कैबिनेट सचिवालय प्रभावी रूप से प्रधानमंत्री के प्रभार के अधीन है। अतः कथन 2 सही है। इस प्रकार विकल्प (b) सही उत्तर होगा।

6. सांविधानिक सरकार का आशय क्या है?

(a) किसी राष्ट्र की परिसंघीय संरचना वाली एक प्रतिनिधि सरकार

(b) कोई सरकार, जिसके प्रमुख के पास नाममात्र की शक्तियाँ हों

(c) कोई सरकार, जिसके प्रमुख के पास वास्तविक शक्तियाँ हों

(d) कोई सरकार, जो संविधान की सीमाओं से परिबद्ध हो

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: परिभाषा से, सांविधानिक सरकार वह सरकार है, जो संविधान की सीमाओं से परिबद्ध हो। अत: विकल्प (d) सही उत्तर होगा। उल्लेखनीय है कि सरकार के प्रमुख के पास नाममात्र की शक्तियाँ होना 'संसदीय प्रणाली' की सरकार का अभिलक्षण है, जबकि सरकार के प्रमुख के पास वास्तविक शक्तियाँ होना 'अध्यक्षीय प्रणाली' की सरकार का अभिलक्षण है। किसी राष्ट्र की परिसंघीय संरचना वाली प्रतिनिधि सरकार की उपस्थिति 'परिसंघ' (Federation) की विशेषता है।

2020

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. भारत का संविधान अपने 'मूल ढाँचे' को संघवाद, पंथनिरपेक्षता, मूल अधिकारों तथा लोकतंत्र के रूप में परिभाषित करता है।

2. भारत का संविधान, नागरिकों की स्वतंत्रता तथा उन आदर्शों जिन पर संविधान आधारित है, की सुरक्षा हेतु 'न्यायिक पुनरावलोकन' की व्यवस्था करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1, न ही 2**

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: भारत का संविधान मूल ढाँचे को परिभाषित नहीं करता है, यह एक न्यायिक नवाचार है। 1973 के केशवानंद भारती मामले में उच्चतम न्यायालय की संवैधानिक पीठ ने फैसला सुनाया कि संसद संविधान के किसी भी भाग में संशोधन कर सकती है, लेकिन ऐसा कोई भी संशोधन संविधान के मूल ढाँचे को नष्ट नहीं करता हो। अदालत ने 'मूल ढाँचा' शब्द को परिभाषित नहीं किया है, और मूल ढाँचे के अंतर्गत केवल कुछ सिद्धांतों को सूचीबद्ध किया है, जैसे- संघवाद, धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र। इसलिये कथन 1 सही नहीं है।

संविधान के अनुच्छेद-13(2) के अनुसार राज्य ऐसी कोई विधि नहीं बनाएगा जो संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकार छीनती हो। यदि ऐसी कोई विधि बनाई भी जाती है तो वह मौलिक अधिकारों के उल्लंघन की मात्रा तक शून्य हो जाएगी। उद्देशिका में संविधान के आदर्श, उद्देश्य, सरकार के स्वरूप एवं संविधान के स्रोत का वर्णन है। केशवानंद भारती बनाम केरल राज्य मामले में उद्देशिका को संविधान का भाग माना गया अत: इसमें संशोधन किया जा सकता है, किंतु उच्चतम न्यायालय ने यह भी स्पष्ट किया कि उद्देशिका के उस भाग में संशोधन नहीं किया जा सकता, जो आधारभूत ढाँचे से संबंधित हो। अत: इस प्रकार नागरिकों की स्वतंत्रता (मूल अधिकार) और उद्देशिका पर न्यायिक पुनर्विलोकन संभव है लेकिन इस पर कुछ शर्तें आरोपित हैं। अत: कथन 2 सही नहीं है। इस प्रकार विकल्प (d) सही उत्तर होगा।

2. गांधीवाद और मार्क्सवाद के बीच एक समान सहमति पाई जाती है। यह निम्नलिखित में से कौन-सी है?

(a) एक अंतिम लक्ष्य के रूप में राज्यविहीन समाज

(b) वर्ग संघर्ष

(c) निजी संपत्ति की समाप्ति

(d) आर्थिक नियतिवाद

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: गाँधीवाद और मार्क्सवाद दोनों का अंतिम उद्देश्य एक राज्यविहीन और वर्गविहीन समाज की स्थापना है, हालाँकि इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये दोनों के साधन अलग हैं। महात्मा गांधी अहिंसक साधनों के माध्यम से इस अंत को प्राप्त करना चाहते थे, लेकिन मार्क्स इसे हिंसक साधनों के माध्यम से हासिल करना चाहते थे। इसलिये, विकल्प (a) सही है।

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. 'आधार' मेटाडेटा को तीन महीने से अधिक संग्रहित नहीं रखा जा सकता है।

2. राज्य निजी निगमों (Corporations) से 'आधार' डेटा को साझा करने के लिये कोई अनुबंध नहीं कर सकता।

3. 'आधार' बीमा उत्पादों को प्राप्त करने के लिये अनिवार्य है।

4. 'आधार' भारत की संचित निधि से हितलाभ प्राप्त करने के लिये अनिवार्य है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सहीं है/हैं?

(a) केवल 1 और 4 **(b) केवल 2 और 4**

(c) केवल 3 **(d) केवल 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: 'आधार' भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (UIDAI) द्वारा दी जाने वाली एक विशिष्ट पहचान है। इसमें व्यक्ति के नाम, पता, आयु, जन्म तिथि के साथ-साथ फिंगर प्रिंट एवं आँखों की स्कैनिंग शामिल होते हैं।

- आधार मेटाडेटा को छ: माह से अधिक संग्रहित नहीं किया जा सकता है। अत: कथन 1 सही नहीं है।
- उच्चतम न्यायालय के दिशानिर्देश के अनुसार राज्य निजी निगमों से आधार डेटा को साझा करने के लिये अनुबंध नहीं कर सकता। अत: कथन 2 सही है।

- बीमा उत्पादों को प्राप्त करने के लिये आधार अनिवार्य नहीं है। अतः कथन 3 सही नहीं है।
- भारत की संचित निधि से हितलाभ के संबंध में आधार अनिवार्य है। अतः कथन 4 सही है।

4. परिभाषा से, संवैधानिक सरकार का अर्थ है-

(a) विधान मंडल द्वारा सरकार

(b) लोकप्रिय सरकार

(c) बहु-दलीय सरकार

(d) सीमित सरकार

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः संवैधानिक सरकार से तात्पर्य ऐसी सरकार से है जो संविधान की व्यवस्थाओं के अनुसार गठित, नियंत्रित व सीमित हो तथा व्यक्ति विशेष की इच्छाओं के स्थान पर विधि के अनुरूप ही संचालित होती हो। संवैधानिक सरकारें नियमों के अनुसार व लोककल्याण पर आधारित होती है। यहाँ यह भी विचार करने योग्य है कि राज्य में केवल संविधान का होना मात्र सरकार को संवैधानिक नहीं बनाता है, बल्कि वही सरकार संवैधानिक कही जाएगी जो वास्तव में संविधान पर आधारित हो, संविधान द्वारा सीमित व नियंत्रित हो।

2019

1. राज्य-व्यवस्था के संदर्भ में, निम्नलिखित में से किस एक को आप स्वतंत्रता की सर्वाधिक उपयुक्त व्याख्या के रूप में स्वीकार करेंगे?

(a) राजनीतिक शासकों की तानाशाही के विरुद्ध संरक्षण

(b) नियंत्रण का अभाव

(c) इच्छानुसार कुछ भी करने का अवसर

(d) स्वयं को पूर्णतः विकसित करने का अवसर

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः व्यक्ति पर बाहरी प्रतिबंधों का अभाव ही स्वतंत्रता है। इस परिभाषा के हिसाब से यदि किसी व्यक्ति पर बाहरी नियंत्रण या दबाव न हो और वह बिना किसी पर निर्भर हुए निर्णय ले सके तथा स्वायत्त तरीके से व्यवहार कर सके, तो वह व्यक्ति स्वतंत्र माना जा सकता है।

- हालाँकि, प्रतिबंधों का न होना स्वतंत्रता का केवल एक पहलू है। स्वतंत्रता का अर्थ व्यक्ति की आत्म-अभिव्यक्ति की योग्यता का विस्तार करना और उसके अंदर की संभावनाओं को विकसित करना भी है। इस अर्थ में स्वतंत्रता वह स्थिति है, जिसमें लोग अपनी रचनात्मकता और क्षमताओं का विकास कर सकें।

2018

1. विधि और स्वाधीनता के बीच सबसे उपयुक्त संबंध को, निम्नलिखित में से कौन प्रतिबिम्बित करता है?

(a) यदि विधियाँ अधिक होती हैं तो स्वाधीनता कम होती है।

(b) यदि विधि नहीं हैं तो स्वाधीनता भी नहीं है।

(c) यदि स्वाधीनता है तो विधि-निर्माण जनता को करना होगा।

(d) यदि विधि-परिवर्तन बार-बार होता है तो वह स्वाधीनता के लिये ख़तरा है।

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः कथन (b) विधि और स्वाधीनता के बीच सबसे उपयुक्त संबंध को प्रतिबिम्बित करता है। प्रसिद्ध विद्वान 'जॉन लॉक' ने भी इस कथन की पुष्टि की है और कहा है, "जहाँ कोई विधि नहीं है वहाँ कोई स्वाधीनता नहीं है" (Where there is no law there is no freedom)। इसलिये स्वतंत्रता के अस्तित्व के लिये विधि का अस्तित्व आवश्यक है। विधि ही स्वतंत्रता की रक्षा करती है। विधि की अनुपस्थिति में व्यक्ति को अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिये शक्ति की मदद लेनी होगी जो सबके लिये संभव नहीं है। विधि की अनुपस्थिति में समाज में अराजकता प्रबल होगी। विधि समाज में सभ्य जीवन के सुचारु संचालन के लिये अनुकूल माहौल प्रदान करती है। विधि अपराधियों को दंडित करती है और व्यक्तियों के अधिकारों का बचाव कर स्वाधीनता सुनिश्चित करती है।

2. निम्नलिखित में से किनको 'विधि के शासन' के प्रमुख लक्षणों के रूप में माना जाएगा?

1. शक्तियों का परिसीमन

2. विधि के समक्ष समता

3. सरकार के प्रति जन-उत्तरदायित्व

4. स्वतंत्रता और नागरिक अधिकार

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनियेः

(a) केवल 1 और 3 **(b) केवल 2 और 4**

(c) 1, 2 और 4 **(d) 1, 2, 3 और 4**

सही उत्तरः (c)

व्याख्याः ब्रिटिश न्यायविद ए.वी. डायसी का मानना है कि 'विधि के समक्ष समता' का विचार 'विधि के शासन' के सिद्धांत का मूल तत्त्व है।

व्यक्तिगत अधिकारों की स्वतंत्रता अर्थात् संविधान व्यक्तिगत अधिकारों का परिणाम है जिससे नागरिक अधिकार तथा स्वतंत्रता 'विधि के शासन' के प्रमुख लक्षणों में शामिल है। शक्तियों पर युक्ति-युक्त निर्बंधन/परिसीमन 'विधि के शासन' के अहम पक्षों में से एक है।

2017

1. समाज में समानता के होने का एक निहितार्थ यह है कि उसमें

(a) विशेषाधिकारों का अभाव है

(b) अवरोधों का अभाव है

(c) प्रतिस्पर्धा का अभाव है

(d) विचारधारा का अभाव है *सही उत्तर:* (a)

व्याख्या: समानता मूल्य को साकार करने का अर्थ विशेषाधिकारों के अभाव से लगाया जाता है। प्राकृतिक विषमता दूर करना हमारे अधिकार क्षेत्र में नहीं, परंतु इस आधार पर समाज में जो विषमताएँ निर्मित की जाती हैं उन्हें दूर करना सभी समाजों का लक्ष्य होना चाहिये। हेराल्ड लास्की के अनुसार समानता में किसी को विशेषाधिकार प्राप्त नहीं होना चाहिये।

2. भारत में मताधिकार और निर्वाचित होने का अधिकार

(a) मूल अधिकार है **(b) नैसर्गिक अधिकार है**

(c) संवैधानिक अधिकार है **(d) विधिक अधिकार है**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: भारत में मताधिकार और निर्वाचित होने का अधिकार एक संवैधानिक अधिकार है। इसे जन प्रतिनिधित्व कानून- 1951 द्वारा शर्तों सहित सुनिश्चित किया जाता है। अत: विकल्प (c) सही है।

3. निम्नलिखित में से कौन-सी एक भारतीय संघराज्य पद्धति की विशेषता नहीं है?

(a) भारत में स्वतंत्र न्यायपालिका है।

(b) केंद्र और राज्यों के बीच शक्तियों का स्पष्ट विभाजन किया गया है।

(c) संघबद्ध होने वाली इकाइयों को राज्य सभा में असमान प्रतिनिधित्व दिया गया है।

(d) यह संघबद्ध होने वाली इकाइयों के बीच एक सहमति का परिणाम है। *सही उत्तर:* (d)

व्याख्या: भारतीय संघ राज्य पद्धति संघबद्ध होने वाली इकाइयों के बीच एक सहमति का परिणाम नहीं है। अन्य दी गई तीनों विशेषताएँ भारतीय संघ राज्य पद्धति की विशेषताएँ हैं। अत: विकल्प (d) सही उत्तर है।

2014

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

संवैधानिक सरकार वह है

1. जो राज्य की सत्ता के हित में व्यक्ति की स्वतन्त्रता पर प्रभावकारी प्रतिबंध लगाती है।

2. जो व्यक्ति की स्वतंत्रता के हित में राज्य की सत्ता पर प्रभावकारी प्रतिबंध लगाती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: संवैधानिक सरकार राज्य की सत्ता के हित में व्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रभावकारी प्रतिबंध नहीं लगाती है बल्कि व्यक्ति की स्वतंत्रता के हित में राज्य की सत्ता पर प्रभावकारी प्रतिबंध लगाती है। उदाहरण के तौर पर भारत में स्थापित संवैधानिक सरकार लोगों को मौलिक अधिकार प्रदान करती है। ये मौलिक अधिकार न्यायालय द्वारा प्रवर्तनीय हैं एवं राज्य की सत्ता पर एक सीमा तक अंकुश लगाते हैं। अत: कथन (2) सही है।

2. विक्रयकर, जिसका भुगतान आप कोई टूथपेस्ट खरीदते समय करते हैं, निम्नलिखित में से किस प्रकार का कर है?

(a) केंद्र सरकार द्वारा आरोपित कर

(b) केंद्र सरकार द्वारा आरोपित, किंतु राज्य सरकार द्वारा संगृहीत कर

(c) राज्य सरकार द्वारा आरोपित, किंतु केंद्र सरकार द्वारा संगृहीत कर

(d) राज्य सरकार द्वारा आरोपित एवं संगृहीत कर

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: विक्रय कर, जिसका भुगतान कोई वस्तु खरीदते समय उपभोक्ता को करना होता है, राज्य सरकार के द्वारा आरोपित एवं राज्य सरकार के द्वारा ही संगृहीत किया जाता है। इसका उपभोग भी राज्य सरकार के द्वारा ही किया जाता है।

2013

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. राष्ट्रीय विकास परिषद्, योजना आयोग का एक अंग है।

2. आर्थिक और सामाजिक योजना को भारत के संविधान की समवर्ती सूची में रखा गया है।

3. भारत का संविधान यह विहित करता है कि पंचायतों को आर्थिक विकास एवं सामाजिक न्याय की योजना बनाने का कार्यभार दिया जाना चाहिये।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: प्रश्न पूछे जाने के समय राष्ट्रीय विकास परिषद् में प्रधानमंत्री सभी केंद्रीय मंत्री, सभी राज्यों के मुख्यमंत्री, सभी संघ शासित प्रदेशों के प्रशासक और योजना आयोग के सदस्य शामिल थे। यह परिषद् योजना आयोग का अंग नहीं थी बल्कि सलाहकारी निकाय था।

- आर्थिक और सामाजिक योजना को भारत के संविधान की सातवीं अनुसूची की समवर्ती सूची में प्रविष्टि संख्या 20 में दर्ज किया गया है। अत: कथन (2) सही है।
- भारत के संविधान के अनुच्छेद-243G(a) में यह उल्लेख किया गया है कि पंचायतों को आर्थिक विकास एवं सामाजिक न्याय की योजना बनाने का कार्यभार दिया जाना चाहिये।

2011

1. भारत के किसी धार्मिक संप्रदाय/समुदाय को यदि राष्ट्रीय स्तर पर अल्पसंख्यक वर्ग का दर्जा दिया जाता है तो वह किस/किन विशेष लाभ/लाभों का हकदार हो जाता है?

1. यह संप्रदाय/समुदाय विशेष शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना और संचालन कर सकता है।

2. भारत के राष्ट्रपति स्वयमेव इस संप्रदाय/समुदाय के एक प्रतिनिधि को लोक सभा में मनोनीत कर देते हैं।

3. यह संप्रदाय/समुदाय प्रधानमंत्री के 15 प्वाइंट कार्यक्रम के लाभ प्राप्त कर सकता है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: **(c)**

व्याख्या: भारतीय संविधान के अनुच्छेद-30(1) के अनुसार, धर्म या भाषा पर आधारित सभी अल्पसंख्यक वर्गों को अपनी रुचि के शिक्षा संस्थानों की स्थापना तथा प्रशासन का अधिकार होगा। अल्पसंख्यक समुदाय प्रधानमंत्री के 15 सूत्रीय कार्यक्रम के तहत लाभ प्राप्त करते हैं। किंतु राष्ट्रपति के द्वारा इस वर्ग के लोगों को लोक सभा में मनोनीत करने का कोई प्रावधान नहीं है। ज्ञातव्य है कि वर्तमान में छः समुदायों (मुस्लिम, पारसी, ईसाई, सिख, बौद्ध एवं जैन) को अल्पसंख्यक वर्ग का दर्जा प्रदान किया गया है।

15 सूत्रीय कार्यक्रम के प्रमुख प्रावधान

1. एकीकृत बाल विकास सेवाओं की समुचित उपलब्धता।
2. विद्यालयी शिक्षा की उपलब्धता (सर्वशिक्षा अभियान) को सुधारना।
3. उर्दू शिक्षण के लिये अधिक संसाधन।
4. मदरसा शिक्षा का आधुनिकीकरण।
5. अल्पसंख्यक समुदायों के मेधावी विद्यार्थियों के लिये (मैट्रिक पूर्व एवं मैट्रिकोत्तर) छात्रवृत्ति।
6. मौलाना आज़ाद शिक्षा प्रतिष्ठान के माध्यम से शैक्षिक अवसंरचना को उन्नत करना।
7. गरीबों के लिये मज़दूरी तथा स्वरोज़गार योजना।
8. तकनीकी शिक्षा के माध्यम से कौशल उन्नयन।
9. आर्थिक क्रियाकलापों के लिये अभिवृद्धित ऋण सहायता।
10. राज्य व केंद्रीय सेवाओं में भर्ती।
11. ग्रामीण आवास योजना में उचित हिस्सेदारी।
12. अल्पसंख्यक समुदायों की मलिन बस्तियों में सुधार।
13. सांप्रदायिक घटनाओं की रोकथाम।
14. सांप्रदायिक अपराधों के लिये अभियोजन।
15. सांप्रदायिक दंगों के पीड़ितों का पुनर्वास।

2. लेखानुमोदन और अंतरिम बजट के बीच क्या अंतर है?

1. स्थायी सरकार लेखानुमोदन के प्रावधान का प्रयोग करती है, जबकि कार्यवाहक सरकार अंतरिम बजट के प्रावधान का प्रयोग करती है।

2. लेखानुमोदन सरकार के बजट के व्यय पक्ष मात्र से संबद्ध होता है, जबकि अंतरिम बजट में व्यय तथा आवती दोनों सम्मिलित होते हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या: ज्ञातव्य है कि विनियोग अधिनियम के द्वारा ही भारत की संचित निधि से कोई धन निकाला जा सकता है। अतः सरकार विनियोग विधेयक को हर हालत में नए वित्तीय वर्ष के प्रारंभ (एक अप्रैल) से पहले पारित करा लेती है।

- किंतु कभी-कभी ऐसी परिस्थिति आ जाती है जब बजट प्रक्रिया एक अप्रैल से पहले संपन्न नहीं हो पाती है। इसके लिये जब तक बजट प्रक्रिया पूरी नहीं हो जाती है उस दौरान व्यय के लिये लेखानुदान पारित कर धन की व्यवस्था की जाती है।
- चुनावी वर्ष में लोक सभा के विघटन से पहले और नई लोक सभा तथा नई सरकार के गठन होने तक वित्तीय वर्ष के एक भाग के लिये व्यय की व्यवस्था के लिये अंतरिम बजट का प्रावधान किया जाता है।
- लेखानुदान सरकार के व्यय पक्ष से संबंधित होता है जो बजट प्रक्रिया पूरी न होने के चलते व्यय की व्यवस्था करने के लिये पारित किया जाता है। चूँकि बजट प्रक्रिया पूरी न होने की स्थिति किसी भी सरकार के समक्ष उपस्थित हो सकती है, अतः लेखानुदान का प्रावधान स्थायी एवं अस्थायी दोनों प्रकार की सरकारों के द्वारा किया जा सकता है। अतः कथन (1) गलत है।

लेखानुदान पारित करने का कारण व्यय के लिये धन की व्यवस्था करना होता है। जबकि अंतरिम बजट में व्यय एवं प्राप्तियों दोनों का विवरण रहता है। अंतरिम बजट, सामान्य बजट से इस रूप में अलग होता है कि उसे चुनावी वर्ष में नई सरकार के गठन तक की अवधि के लिये किया जाता है। आगे नई सरकार अपने हिसाब से बजट प्रस्तुत करती है। अतः कथन (2) सही है।

3. भारत में विकलांग व्यक्तियों (Persons with disabilities) की संख्या लाखों में है। वैधानिक स्तर पर उन्हें कौन-कौन से लाभ उपलब्ध हैं?

1. सरकार द्वारा चलाए जा रहे स्कूलों में 18 वर्ष की आयु तक निःशुल्क शिक्षा।

2. व्यवसाय स्थापित करने के लिये वरीयता से भूमि का आवंटन।

3. सार्वजनिक भवनों में ढाल का उपलब्ध होना।

उपर्युक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तरः **(d)**

व्याख्याः विकलांग व्यक्ति (समान अवसर, संरक्षण का अधिकार एवं पूर्ण भागीदारी) अधिनियम, 1995 के तहत निम्नलिखित प्रावधान किये गए हैं-

- केंद्र एवं राज्य सरकार का यह दायित्व है कि वे विकलांग बच्चों के लिये 18 वर्ष की आयु तक निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करें।
- उनको व्यवसाय स्थापित करने के लिये भूमि आवंटन में वरीयता दें।
- सार्वजनिक भवनों, शौचालयों आदि में ढाल (ramp) की व्यवस्था करें ताकि यहाँ तक विकलांग व्यक्तियों की पहुँच सुनिश्चित हो सके, अतः कथन 1, 2 और 3 तीनों सही हैं।

नोटः वर्तमान में आधिकारिक तौर पर विकलांग के स्थान पर दिव्यांग शब्द का प्रयोग किया जाता है।

4. निम्नलिखित पर विचार कीजिये-

1. शिक्षा का अधिकार।

2. समानता के साथ सार्वजनिक सेवा प्राप्त करने का अधिकार।

3. भोजन का अधिकार।

"मानव अधिकारों की व्यापक उद्घोषणा" के अंतर्गत उपर्युक्त में से कौन-सा/कौन-से अधिकार मानव अधिकार/अधिकारों में आता है/आते हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 1 और 2

(c) केवल 3

(d) 1, 2 और 3

सही उत्तरः **(d)**

व्याख्याः 'मानवाधिकारों की व्यापक उद्घोषणा' को संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 1948 में अपनाया गया था। इस उद्घोषणा में ऐसे साझा मानदंडों को अपनाया गया जिन्हें सभी राष्ट्रों को प्राप्त करना है। इसके तहत घोषित प्रमुख मानवाधिकार निम्नलिखित हैं-

- जीवन का अधिकार
- कानून के समक्ष समानता एवं कानूनों के द्वारा समान संरक्षण का अधिकार
- शिक्षा, वस्त्र, आवास एवं चिकित्सा सेवाओं का अधिकार
- भोजन का अधिकार
- शोषण के विरुद्ध अधिकार
- निजता का अधिकार
- राष्ट्रीयता का अधिकार
- विचारों एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार
- सामाजिक सुरक्षा का अधिकार
- सार्वजनिक सेवाओं तक समान पहुँच का अधिकार आदि।